अंक—71 अक्तूबर-दिसम्बर, 95

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार
वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार?

—सुमित्रा नन्दन पन्त

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे

— निराला

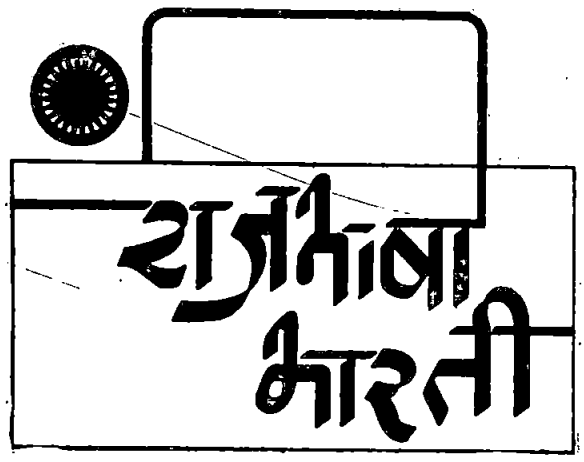

राजभाषा की त्रैमासिकी

वर्ष: 18

अंक: 71

आश्विन-पौष-1917 अक्तूबर-दिसंबर 1995

□ संपादक

राज कुमार सैनी
निदेशक (अनुसंधान)
फोन: 4617807

□ उपसंपादक

नेत्रसिंह रावत
फोन: 4698054

सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा
फोन: 4699441

□ संपादन सहायक

शांति कुमार स्याल
फोन: 4698054

□ नि:शुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

□ पत्र-व्यवहार का पता:

संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (11वां तल)
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

अनुक्रम पृष्ठ

□ संपादकीय 3

□ चिंतन

1. हिंदी भाषा : विरामादि चिह्नों का परिप्रेक्ष्य — हरीश कुमार सेठी 4
2. भाषा का जन्म — डॉ॰ कृष्ण नारायण पाण्डेय 9
3. भू-भाग विश्लेषण प्रणाली तथा उसकी उपयोगिता (भू-विज्ञान के संदर्भ में) — डॉ॰ रा॰ अ॰ चान्सरकर 10

□ साहित्यिकी

4. भारत की राष्ट्रीय एकता में मलयालम साहित्य का योगदान — डॉ॰ एस॰ जे॰ दिवाकर 13
5. डॉ॰ हर भजन सिंह : एक सूरज का सफ़र — अमरजीत सिंह 15
6. इंदिरा गांधी की साहित्य में सबसे पहले चर्चा किसने की — पद्मश्री डॉ॰ लक्ष्मीनारायण दुबे 18

□ पुरानी यादें : नए परिप्रेक्ष्य

7. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त — प्रो॰ सी॰ पी॰ सिंह 'अनिल' 20

□ विश्व हिंदी दर्शन

8. राष्ट्रभाषा हिंदी : अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ — हिमांशु जोशी 23

□ भाषा संगम

- अंग्रेजी से अनूदित — पुश्किन की कविता —अनु॰ डॉ॰ सुधेश 29
- ओड़िया कृति — वर्षा — रीना पट्टनायक कटक
  — चन्द्रभागा —अयस्कांत महापात्र अनुगुल

3686/HA

अनुक्रम	पृष्ठ

- ☐ **पुस्तक-समीक्षा**

  (इस स्तम्भ में पुस्तक के लेखक का नाम / समीक्षक का नाम पूर्वापर क्रम से दिया गया है) 31

  संकल्प की ओर (प्रेम सिंह नेगी / क्षितिज शर्मा), प्रसंगवश (मणिका मोहनी / सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा), विहंगम योग (मदन मोहन राय / माला गुप्ता), वेतनभोगी करदाता समस्या और समाधान (बी० एम० गोयल / नेत्र सिंह रावत), तटस्थ (सं० डॉ० कृष्ण विहारी सहल तथा जसबीर सिंह 'रहवर' / डॉ० अंजनी कुमार दुबे, 'भावुक'), विश्व में हिंदी (हरिबाबू कंसल / डॉ विजय अग्रवाल)

- ☐ हिंदी कार्यशाला 37
- ☐ हिंदी दिवस 46
- ☐ समिति समाचार 49

  (क) हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

  (ख) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

  (ग) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

- ☐ विविधा

  ● शिक्षण योजना ● आदेश-अनुदेश 62

3686/HA

हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी मास का राष्ट्रीय पर्व देशभर में जिस अभिरुचि, उत्साह और तैयारी के साथ मनाया गया, उसने मुहम्मद इकबाल के महान राष्ट्रीय गीत की उस पंक्ति को एक बार फिर देशभर में गुंजायमान कर दिया कि—

"हिंदी है, हमवतन है, हिन्दुस्तान हमारा"

पुनः यह निष्कर्ष पूरे जोश-खरोश के साथ एक बार फिर उभर कर भारतीय मानस के क्षितिज पर आलोकित हो उठा कि हिंदी किसी एक प्रान्त की, किसी एक जाति की, किसी एक समुदाय की, किसी एक धर्म की, किसी एक दिशा की भाषा नहीं है; वह तो उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के आपसी मेलजोल, सम्पर्क और समन्वय-परक समेकित संस्कृति को अभिव्यक्त करने वाली राष्ट्रीय भाषा है जिसे तमिल के महान कवि सुब्रह्मण्य भारती ने देश की आमभाषा (कामन लेंग्वेज) कहकर पुकारा था, गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने जिसे मां भारती के गले के हार की मध्य-मणि कहा था, जिसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दुस्तानी नाम दिया था तथा "राष्ट्रीय कार्रवाइयों की भाषा" कहकर सम्मानित किया था और जिसमें नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने अपनी आजाद हिंद फौज के सैनिकों के साथ संवाद किया था। यह अमीर खुसरो, अब्दुर्रहीम खानखाना, मुगल शहज़ादे दारा के सृजन की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। मीर और नज़ीर की कविता में खिली, गालिब और प्रेमचंद के गद्य में फली-फूली।

वही हिंदी जो अब देश की राजभाषा के रूप में निरन्तर विकसित हो रही है, भविष्य में भी उत्कर्ष के उच्चतम शिखरों पर अपनी पताका फहराएगी, यह हमारा विश्वास है और यही हमारी मंगल कामना है।

इसी मंगल कामना, भाषाई सद्भाव और सदाशयता के साथ राजभाषा भारती का अंक—71 हिंदी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

पिछले दिनों हिंदी के सुपरिचित गद्यकार श्री हरिशंकर परसाई का जबलपुर में लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। श्री परसाई की गणना आज़ादी के बाद के हिंदी के सबसे बड़े लेखकों में की जाती है। उनके सतत् लोकप्रिय लेखन से हिंदी के व्यंग्य को एक नई विधा के रूप में प्रतिष्ठा मिली। प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्य समाज की आलोचना है। परसाई का समस्त साहित्य आज़ादी के बाद के भारतीय समाज की आलोचना है। "मातादीन चांद पर", "रानी नागफणि की कहानी", "उखड़े खम्भे", "जैसे उनके दिन फिरे", "भोलाराम का जीव" आदि उनकी अनेक उच्चकोटि की व्यंग्यात्मक रचनाएं हैं जो भारतीय समाज में एक जागरूक चेतना का संचार करती हैं और उसे स्वस्थ दृष्टि प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त अपने समय में हिंदी के सबसे बड़े निबंधकारों और गद्यकारों में परसाई जी की गणना होती है। परसाई जी के व्यंग्य-साहित्य को पढ़ने के लिए बहुत से हिंदीतर भाषियों ने हिंदी सीखी। साहित्य के अतिरिक्त हिंदी भाषा के प्रति भी उनका अवदान भुलाया नहीं जा सकता। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में उनके स्तम्भ यथा "कबिरा खड़ा बजार में" "तुलसीदास चंदन घिसें", भी लम्बे समय तक याद किए जाते रहेंगे।

'राजभाषा भारती' परिवार इस महान लोकप्रिय साहित्यकार को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

—राजकुमार सैनी

3686/HA

हिंदी भाषा : विरामादि चिह्नों का परिप्रेक्ष्य

—हरीश कुमार सेठी

किसी भी कृति का रचयिता अपनी रचना के माध्यम से भावों एवं विचारों को पाठक तक पहुंचाने के लिए **भाषा** और उसके शब्द, समास, पदबंध, मुहावरे, लोकोक्तियां, शब्द शक्ति, संधि, उपसर्ग, प्रत्यय आदि **भाषिक उपकरणों** का सहारा लेता है। विरामादि-चिह्नों भी इन्हीं उपकरणों में से एक है। लेखन कार्य करते समय मूल की समग्र कल्पना-शक्ति को प्रतिबिम्बित करते समय, कथ्य के साथ-साथ इन भाषा-उपकरणों के प्रति भी प्रायः सजग रहना अपेक्षित होता है। इसी सजगता के जरिए भाषा में सहजता, स्वाभाविकता एवं सटीक सम्प्रेषणीयता संभव हो पाती है। किसी भी भाषा के व्याकरण में विरामादि चिह्न अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। विरामादि चिह्नों की सहायता से विषय-वस्तु का तर्कपूर्ण बोध एवं जटिल-क्लिष्ट वाक्यों में स्पष्टता संभव हो पाती है। विरामादि व्याकरणिक चिह्नों की सहायता से सम्प्रेषणीय अर्थ को गंभीरतापूर्वक ढंग से भाषा की प्रकृति के अनुसार एवं साभिप्राय कलात्मक ढंग से प्रयोग करना लेखक की अपनी क्षमता पर निर्भर करता है। वह स्व-विवेकानुसार उपयुक्त विराम चिह्न का उपयोग करता है।

चलना, कुछ कार्य करना, लिखना और बोलना आदि कोई भी क्रिया करते समय जब हम कहीं विश्राम करते हैं या फिर रुकते हैं तो उस स्थिति में रुकना "विराम" कहलाता है। चलते समय रुकना "थकावट" आदि को दर्शाता है तो लिखते और बोलते समय रुकना, "विचारों, भावों एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति में सुस्पष्टता प्रदान करने की प्रक्रिया को"। यह "विराम" कई प्रकार का होता है। भाषा प्रयोग करते हुए कहीं प्रश्न करने के संदर्भ में तो कहीं विस्मय आदि हार्दिक उच्छ्वासों को दर्शाने के संदर्भ में रुका जाता है। कभी दो वाक्यों में पृथकता दर्शाने और अभिव्यक्ति में स्पष्टता के लिए बोलते-लिखते समय भी रुकना हो ही जाता है। इसी कारण विभिन्न विचारों-भावों को लिखित रूप में "रुककर" अभिव्यक्त करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के चिह्न निर्धारित किए गए हैं। कथ्य को प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषित करने में इनका विशेष महत्व रहता है क्योंकि "विराम-चिह्नों द्वारा लेखक समय-समय पर ठहरकर अपने एक विचार तथा भाव को दूसरे से पृथक् करके समझाता हुआ चलता है।"[1] मौखिक रूप से प्रस्तुत किए गए कथनों में इन चिह्नों की अपेक्षा प्रस्तुति और उसकी शैली, अनुतान और बलाघात पर वाक्यों में पार्थक्य दर्शाने के परिप्रेक्ष्य में तो इनका महत्व है, साथ ही एक ही वाक्य के भीतर दो भावों और विचारों में पृथकता स्थापित करने में भी ये उपयोगी सिद्ध होते हैं।

चूंकि कहीं "कम" रुका जाता है तो कहीं "अधिक' और कहीं तो रुकने का आभास मात्र होता है। इसलिए रुकने की अवधि की भिन्नता के आधार पर भी इस रुकावट को दर्शाने के लिए अलग-अलग प्रकार के चिह्न निर्धारित किए गए हैं। किसी शब्द को उच्चारित करते समय अक्षर पर दिए जाने वाले सही बलाघात एवं बोलने में सुर के आरोह-अवरोह अर्थात् उतार-चढ़ाव की उचित अनुतान में भी इन्ही विराम चिह्नों के प्रयोग से सहायता प्राप्त होती है। इसके अलावा, लिखित भाषा को शुद्ध लेखन-पठन की दृष्टि से कहीं **कोष्ठक** तो कहीं **उद्धरण** चिह्नों आदि का प्रयोग कर सही-सही और विवेकपूर्ण अर्थ सम्प्रेषित किया जाता है। अतः विभिन्न प्रकार के विरामों आदि को दर्शाने के लिए निर्धारित किए गए संकेत-चिह्नों को "विराम चिह्न (Punctuation) कहा जाता है।

यद्यपि, "विराम-चिह्नों **पद** (शब्द) को प्रयुक्त करने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस पारिभाषिक शब्द की संकल्पना में शामिल सभी प्रकार के चिह्न **रुकावट** अथवा **विश्राम** को ही दर्शाते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि ये चिह्नों केवल रुकने (विश्राम) का संकेत मात्र नहीं है—स्पष्ट रूप से अर्थ को सम्प्रेषित करने, उच्चारण-स्पष्टता एवं व्याकरण के स्तर पर स्पष्टता आदि की दृष्टि से भी इन सभी प्रकार के चिह्नों को भाषा के लिखित रूप में व्यवहार में लाया जाता है। डा॰ द्विजराम यादव इसके लिए शीर्षक में बहुवचन के रूप में लिखते हैं— "विराम चिह्नों के प्रयोग और नियम"[2] और डा॰ यज्ञदत्त शर्मा इन्हें "विराम **चिह्न** इत्यादि"[3] कहते हैं जबकि, डा॰ भोलानाथ तिवारी इस तथ्य को तो स्वीकार करते हैं कि ये चिह्न केवल रुकावट को ही नहीं दर्शाते, किन्तु फिर भी, वे इनके लिए

"विराम-चिह्न" पद का ही प्रयोग करने का पक्ष लेते हुए कहते हैं—"विराम-चिह्नों में अब अनेक चिन्ह सम्मिलित कर लिए गए हैं, और सभी का काम रुकने का संकेत देना ही नहीं है, किन्तु प्रारम्भ के विराम-चिह्न रुकने का ही संकेत देते थे, तथा आज भी प्रमुख विराम-चिह्न रुकने या विराम का ही संकेत देते हैं, इसलिए इन्हें विराम-चिन्ह कहा जाता है।"[4] इस संबंध में मेरी धारणा यह है कि इसके लिए विराम चिह्न न लिखकर "विरामादि चिह्न" लिखना अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त है। कारण, इस नामकरण से विराम को दर्शाने वाले चिह्नों के अलावा, अन्य प्रकार के चिह्न भी इसकी परिधि में स्पष्ट रूप से समाहित हो जाते हैं। इसलिए इस लेख में विरामादि चिह्न पद (शब्द) का प्रयोग किया जा रहा है। वैसे, आवश्यकतानुसार, कहीं-कहीं विराम चिह्न पद का भी प्रयोग किया है।

लेखन में उपयुक्त एवं विवेकपूर्ण विरामादि चिह्न अपनी महत्वपूर्ण अनिवार्यता रखते हैं। अपने अर्थ की दृष्टि से विरामादि चिह्न अंतर्राष्ट्रीय मान्यता-प्राप्त हैं। कमोबेश प्रत्येक भाषा में इनका उपयोग किया जाता है और प्रत्येक चिन्ह कमोबेश एक-समान अर्थ का द्योतक होता है। विभिन्न विद्वानों-भाषाविदों ने प्रकृति और स्वरूप के आधार पर "विरामादि चिह्न" की परिभाषाएं निरूपित की हैं। उनमें से कुछेक इस प्रकार हैं:

1. "शब्दों और वाक्यों का परस्पर संबंध बताने तथा किसी विषय को भिन्न-भिन्न भागों में बांटने और पढ़ने में ठहरने के लिए, लेखों में जिन चिह्नों का उपयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।"

——कामता प्रसाद गुरू

2. "लेखक के भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के अंतर्गत तथा अनुच्छेद में वाक्यों के मध्य किया है उन्हें विराम चिन्ह कहते हैं।"

——डा० कैलाश चन्द्र भाटिया

3. "बोलते समय या वाचन करते समय वाक्यों, उपवाक्यों और शब्दों पर जहां विश्राम अपेक्षित हो उसे सूचित करने वाले चिह्न विराम चिह्न कहलाते हैं।"

——डा० केशवदत्त रूवाली

4. "जो चिह्न बोलते या पढ़ते समय रुकने का वस्तुतः संकेत देते हैं, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।"

——डा० भोलानाथ तिवारी

5. "लेखादि लिखते समय शब्दों, उपवाक्यों और वाक्यों का परस्पर संबंध बताने, किसी विषय को भिन्न-भिन्न भागों में बांटने तथा पढ़ने में ठहरने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विराम-चिह्न' कहते हैं।"

——डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना

6. "बोलचाल में उच्चारण करते समय वक्ता स्थान-स्थान पर विराम लेता है और अपना भाव स्पष्ट करता है। कभी अंग संचालन और काकू से भी भाव स्पष्ट किया जाता है अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाने की सम्भावना रहती है। इन्हीं संकेतों को लेखन में प्रदर्शित करना विराम चिह्न कहलाता है।"

——डा० जगदीश प्रसाद कौशिक

7. "भाषा में जब हम अपने भावों को प्रकट करते हैं तो अपने विचारों को उचित प्रकार से व्यक्त करने के लिए हम थोड़ा-सा रुकते हैं—इसे ही 'विराम' कहते हैं। इन रुकने के स्थलों को कुछ चिन्हों द्वारा दिखाया जाता है, जिन्हें विराम चिहनों कहते हैं।"

——आर्थर ऐस० विल्सन

निष्कर्षतः अर्थ एवं स्वरूप को ध्यान में रखते हुए विरामादि चिह्नों को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है—

"वाणी द्वारा भावों और विचारों को अभिव्यक्त करते समय विभिन्न प्रकार के विश्रामों, बलाघात और अनुतानों को सुस्पष्टता एवं सार्थकता का बोध कराने के लिए भाषा के लिखित रूप में प्रयुक्त किए जाने वाले चिह्नों को विरामादि चिह्न कहते हैं।"

साहित्य सहित किसी भी किस्म के लेखन कार्यों में विरामादि चिह्नों का अत्यंत महत्व होता है। ये विरामादि चिह्न विचारों, भावों एवं हार्दिक मनोवेगों को पूरी तरह से और सही ढंग से सम्प्रेषित करने के उपकरण कहे जा सकते हैं। लिखित भाषा में भावों और विचारों का व्यवस्थित क्रम तभी स्थापित हो पाता है।

यदि इसमें विरामादि चिह्नों का उचित रीति-नीति से प्रयोग किया गया हो। लेखन में कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है कि किसी एक विरामादि चिह्न के न लगाने पर वाक्य का अर्थ ही पूरी तरह से बदल जाता है या यों कहें कि अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

इसके अलावा, यदि कोई विस्मयादि बोधक अथवा प्रश्नवाचक वाक्य बिना किसी विरामादि चिह्नों के लिखा गया हो तो ऐसे में वाक्य में निहित भावों को सार्थक अभिव्यक्ति नहीं मिल पाती क्योंकि इस प्रकार के हार्दिक उच्छ्वासों को शब्दों और वाक्यों में स्पष्ट नहीं किया जा सकता। बोलते समय तो बलाघात, अनुतान अथवा वाचन शैली की सहायता से मनोवेगों को प्रदर्शित किया जा सकता है, लेकिन जहां तक भाषा के लिखित रूप में उन्हीं भावों को अभिव्यक्त करना हो तो उस स्थिति में प्रश्नवाचक अथवा विस्मयादिबोधक चिह्न का सहारा लेना पड़ेगा, तभी वाक्य सही भावाभिव्यक्ति कर पाएगा। उदाहरण के लिए "जैनेर जी हमारे घर आ रहे हैं!" वाक्य के अंत में लगा विस्मयादि बोधक चिहनों!) आश्चर्य भाव को दर्शा रहा है। यदि वाक्य के अंत में इस चिह्न का उपयोग न किया जाए तो वक्ता के घर पर जैनेन्द्र जी के आने संबंधी आश्चर्य-भाव को दर्शाने के लिए यह लिखना पड़ेगा, "मुझे आश्चर्य है कि जैनेन्द्र जी हमारे घर आ रहे हैं।" इस तरह विरामादि चिह्न, लेखन में समय तो बचाते ही हैं, साथ ही भावों को प्रखरता के साथ सम्प्रेषित भी करते हैं।

जहां तक उच्चारण की सुविधा की दृष्टि से विरामादि चिह्नों की आवश्यकता का संबंध है, उच्चारण-प्रक्रिया में भी ये विरामादि चिन्ह उपयोगी ही सिद्ध होते हैं। भावानुसार उपयुक्त स्थान पर यदि उपयुक्त विराम चिन्ह का प्रयोग न किया जाए तो उससे अर्थ के अनर्थ होने की आशंका बनी रहती है क्योंकि पाठक को यह पता नहीं चल पाता कि लिखित सामग्री का सही अर्थ क्या है। तभी तो कहा जाता है कि उपयुक्त विराम चिन्ह के अभाव में लिखित भाषा के माध्यम से भावों की सार्थक अभिव्यक्ति होना असंभव है। डा० रामचन्द्र वर्मा के अनुसार; "विराम चिह्न भाषा को स्पष्ट, सुगम तथा सुबोध बनाने में सहयक होते हैं।"[5] इस संबंध में डा० भोलानाथ तिवारी ने ठीक ही कहा है कि "लिखित भाषा

अपने कथ्य को तभी पूरी सफलता से व्यक्त कर सकती है, जब उसमें विराम-चिह्नों का समुचित प्रयोग हो।"[6] डॉ द्विजराम यादव ने भी विरामादि चिह्नों की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा है—"मानसिक दशा को विराम देने के लिए एवं भाव की स्पष्टता को बनाए रखने के लिए विराम-चिह्नों की नितांत आवश्यकता होती है।"[7] संक्षेपतः विरामादि चिह्नों के महत्व को इसी तथ्य से समझा जा सकता है कि "स्वयं विराम चिन्हों का एक स्वतंत्र विषय है।"[8]

इन तथ्यों को निम्नलिखित उदाहरण द्वारा आसानी से समझा जा सकता है:

"अशोक ने दौड़ते हुए शेर को देखा।"

उपर्युक्त उदाहरण में यदि "अशोक ने" के बाद विराम चिह्न (अल्प-विराम-अर्थात् "अशोक ने, दौड़ते हुए शेर को देखा।") लगा दिया जाए तो वाक्य यह अर्थ प्रदर्शित करेगा कि "दौड़ रहे शेर को अशोक ने अपनी आंखों से देखा।" इसके विपरीत, यदि "दौड़ते हुए" के बाद अल्प-विराम (अर्थात् "अशोक ने दौड़ते हुए, शेर को देखा।") लगा दिया जाए तो वाक्य यह अर्थ दर्शाएगा कि "अशोक जब स्वयं दोड़े रहा था तब उसने शेर को देखा।" इस उदाहरण के अलावा, विरामादि चिह्न के स्थान पर परिवर्तन होने पर अर्थ में होने वाले परिवर्तन को दर्शाने वाला एक अन्य प्रचलित उदाहरण है—"रोको मत जाने दो" जिसमें रोको के बाद आल्प-विराम लगाने पर (रोको, मत जाने दो) किसी एक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है और अगर मत के बाद अल्प-विराम लगाएं (रोको मत, जाने दो) तो बिल्कुल विपरीत अर्थ की। इसी प्रकार अंग्रेज़ी के निम्नलिखित वाक्य को भी उदाहरणस्वरूप लिया जा सकता है, जिसमें उद्धरण चिह्न की उपयोगी भूमिका को दर्शाया गया है :

He delivered a lecture on Kam Sutra.

और

He delivered a lecture on "Kam Sutra".

इस उदाहरण में पहला वाक्य यह दर्शा रहा है कि उस (किसी एक) व्यक्ति ने अपने भाषण में कामशास्त्र की महत्ता आदि विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है। संक्षेप में, व्यक्ति-विशेष ने कामसूत्र विषय पर भाषण दिया है जबकि विराम चिन्ह (अर्थात उद्धरण चिह्न) वाला वाक्य केवल वात्स्यायन विरचित सुविख्यात कृति "कामसूत्र" का ही द्योतक है, जो यह दर्शाता है कि उस व्यक्ति-विशेष ने वात्स्यायन की कृति "कामसूत्र" पर भाषण दिया।

उपर्युक्त उदाहरणों में अर्थ को पाठक तक सुस्पष्ट ढंग से सम्प्रेषित करने के लिए विरामादि चिह्न सहायक सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लेखक को पूरी सतर्कता एवं गहन विचार करके ही उपयुक्त स्थान पर ठीक तरह से विरामादि चिह्नों को प्रयुक्त करना चाहिए। अल्प-विराम सहित अन्य विरामादि चिह्नों के महत्व को दर्शाने वाले कतिपय निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए:

1. 'त्रिपाठी जी की शैली विषय और भाव के अनुसार बदलती रहती है।' (शैली के बाद अल्प-विराम, लगाना उपयुक्त रहेगा)
2. "काव्य में अलंकार भाषा की पुष्टि एवं राग की परिपूर्णता के लिए प्रयुक्त हुए हैं।" (अलंकार के बाद अल्प-विराम लगाना उपयुक्त रहेगा)
3. "कहीं वर्षा का तो कहीं लालिमा युक्त प्रभात स्वतंत्र एवं आलम्बन रूप में चित्रित होता है।" (लालिमा और युक्त शब्दों के मध्य योजक चिन्ह (-) एवं प्रभात के बाद अल्प-विराम (,) लगाना उपयुक्त रहेगा)
4. "उत्साह भाव का सुंदर प्रस्तुतीकरण मिलन काव्य के इस कथन में देखा जा सकता है...।" (अर्थ-सम्प्रेषण की दृष्टि से उत्साह और मिलन शब्दों को उद्धरण चिह्न (" ") लगाकर लिखना चाहिए)
5. "संकेत काव्य संग्रह में प्रकृति के माध्यम से उनकी विरह वेदना को इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है....।" (यदि संकेत शब्द को उद्धरण चिन्ह में लिखा जाता तो वह कहीं अधिक सुस्पष्ट अर्थ सम्प्रेपित करता क्योंकि "संकेत" साधारण शब्द न होकर "काव्य-संग्रह" का नाम (संज्ञा) है।)
6. "क्या व्यापार कल्याण को बढ़ाता है? (व्यापार शब्द के बाद अल्प-विराम (,) लगाना उपयुक्त रहेगा)
7. "इस प्रकार द्रोण, अर्जुन, श्रीकृष्ण एवं भीष्म जैसे कर्मयोगियों की भूमि भारत का कवि मुक्त कंठ से प्रशस्ति गान करता है।" (भारत को उद्धरण चिन्ह (" " अर्थात् "भारत") में अथवा उससे पहले और बाद में योजक चिन्ह (-) लगाया जाना अपेक्षित है।)

इसके विपरीत, यदि सही स्थान पर उपयुक्त विरामादि चिह्न न लगाया जाए तो अर्थ की अस्पष्टता की स्थिति किस प्रकार बनी रह सकती है, निम्न उदाहरणों से यह भी स्पष्ट हो जाता है:

1. "साहित्यकारों की यह तपन-विद्रोह बनकर साहित्य में ढली।" (यहां तपन शब्द के बाद अल्प-विराम (,) आना चाहिए था, न कि योजक चिन्ह (-)।)
2. "सुर के साथ हम लोगों का हृदय-पक्षी के साथ मिलकर गाना-गाना चाहता है। "(यहां हृदय और पक्षी के मध्य अल्प-विराम (,) आना चाहिए न कि योजक चिह्न, और गाना-गाना के मध्य योजक चिन्ह (-) न लगाकर अल्प-विराम लगाना चाहिए था क्योंकि ये दोनों एक ही शब्द की पुनरावृत्ति न होकर "गाने के गायन करने के अर्थ में" प्रयुक्त हुए हैं।)
3. "क्या कहा आपने? हजारों तारों से बंधा हुआ वीणा यंत्र? (यहां आपने के बाद प्रश्नवाचक चिन्ह (?) नहीं आना चाहिए क्योंकि यह वाक्य आश्चर्यसूचक भाव को दर्शा रहा है, न कि प्रश्नवाचक भाव को। अतः यहां आश्चर्यसूचक चिह्नों (!) का प्रयोग किया जाना चाहिए।)

हिंदी में विरामादि चिह्नों के प्रयोग के आरंभ को खड़ी बोली में गद्य साहित्य की रचना के प्रादुर्भाव के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। यह सही है कि अंग्रेजी भाषा के संपर्क में आने से पूर्व हिंदी सहित लगभग सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में कई प्रकार के विरामादि चिह्नों के स्थान पर, एक पाई अथवा एक खड़ी लकीर (।) और दो पाई अथवा दो खड़ी लकीरों(।।) का प्रयोग किया जाता था। हिंदी के रीतिकाल तक की अनेक काव्य-रचनाओं में इन्हीं दोनों प्रकार के विराम चिह्नों का प्रयोग होता रहा है। उदाहरण के लिए रीतिसिद्ध कवि बिहारी के निम्न दोहे में कई अल्प-विरामों की आवश्यकता तो थी, किंतु तत्कालीन साहित्य में खड़ी लकीरों के अलावा अन्य किसी प्रकार के विराम चिह्नों का प्रचलन न होने की वजह से कवि ने दोहे की पंक्ति के अंत में केवल खड़ी पाई का ही प्रयोग किया है:

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सौं बात।।

1800 ई० में कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के पश्चात् अंग्रेजी भाषा के व्यवस्थित विरामादि चिह्नों ने हिंदी भाषा को प्रभावित

किया। अंग्रेजी भाषा के संपर्क में आने की वजह से हिंदी भाषा के विद्वान-मनीषियों ने अंग्रेजी के विरामादि चिह्नों के व्यवस्थित नियमों की ओर ध्यान दिया एवं उनका विधिवत अध्ययन-मनन किया। इस तरह, उन्होंने विरामादि चिह्नों को हिंदी भाषा में भी व्यवहार में लाना आरंभ कर दिया। परिणामस्वरूप अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त विरामादि चिह्नों के माध्यम से हिंदी भाषा में खड़ी पाई के रूप में प्रयुक्त होने वाले पूर्ण विराम चिह्न के अतिरिक्त अल्प-विराम, उप-विराम, अर्ध-विराम, प्रश्नसूचक चिह्नों उद्धरण चिह्न आदि अन्य विरामादि चिह्न भी आ गए। डॉ०भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "19वीं सदी की पाण्डुलिपियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि विराम चिह्न के संबंध में जानकारी तो लोगों को 19वीं सदी के अंतिम चरण में प्राप्त हो गई थी, किन्तु इनका व्यवस्थित प्रयोग 20वीं सदी में प्रारंभ हुआ।"[9] आधुनिक हिंदी काव्य में द्विवेदी युग के नाम से विख्यात 1900 से 1920 तक के कालखंड में हिंदी भाषा के परिमार्जन और परिष्कार की दिशा में अग्रसर साहित्यकारों ने विरामादि चिह्नों के प्रयोग को भी व्यवास्थित एवं नियमित कर, लेखन में इनका स्थान अनिवार्य-सा बना दिया।

इस तरह स्पष्ट है कि 19वीं शताब्दी के समाप्त होने तक, लोगों को विरामादि चिह्नों के संबंध में बोध हो चुका था। लेकिन जहां तक इन चिन्हों को व्यवस्थित ढंग से व्यवहार में लाने का संबंध है, इनके व्यवस्थित प्रयोग की शुरूआत 20वीं शताब्दी में हुई। यदि यह कसौटी मान ली जाए कि सतत और अविच्छिन्न विकास की दिशा में उन्मुख भाषाएं एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं और प्रभावित होती हैं तो इस आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी के अधिकांश विरामादि चिह्न अंग्रेजी भाषा से आयातित हैं।

साहित्य के क्षेत्र में अब स्थिति यह हो चुकी है कि गद्य लेखन में तो इन विरामादि चिह्नों का भरपूर प्रयोग होता ही है, कव्य रचना तक में इन चिन्हों का भी काफी प्रयोग मिलता है। उदाहरणार्थ यह देख सकते हैं कि कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" की निम्नलिखित छोटी-सी कविता[10] में कितने प्रकार के विरामादि चिह्न प्रयुक्त हुए हैं:

खिड़की एकाएक खुली

खिड़की एकाएक खुली,/बुझ गया दीपग झोंके से,
हो गया बन्द वह ग्रन्थ/जिसे हम रात-रात
धोखते रहे;

पर खुला क्षितिज, पौ फटी,
प्रात निकला सूरज, जो सारे
अन्धकार को सोख गया।

धरती प्रकाश-आप्लावित!
हम मुक्त-कण्ठ/मुक्त-हृदय
मुग्ध गा उठे/बिना मौन को भंग किए।

कौन हम?
उसी सूर्य के दूत/अनवरत धावित

कथ्य के अनुसार अज्ञेय जी द्वारा इस कविता में अल्प-विराम (,), योजक चिन्ह (-), पूर्ण विराम (।) अर्ध विराम (;), विस्मयादि बोधक चिह्नों (!) एवं प्रश्नवाचक चिह्न (?) का प्रयोग किया गया है।

जैसी की चर्चा की जा चुकी है, लेखन में विराम को दर्शाने के लिए निर्धारित चिह्न कई प्रकार के हैं। लेकिन चिह्नों के प्रयोग की प्रकृति के आधार पर इन्हें तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है। ये इस प्रकार हैं :

1. वास्तव में विराम को दर्शाने वाले "विरामसूचक चिह्न" (जैसे पूर्ण विराम (।), अर्ध-विराम (;), अल्प-विराम (,), उप-विराम (:)। वैसे आजकल, कई पत्र-पत्रिकाएं सहित कई व्यक्ति हिंदी में खड़ी पाई पूर्ण विराम (।) के स्थान पर अंग्रेजी के फुल स्टॉप (.) का प्रयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में कहा सकता है कि हिंदी में, अंग्रेजी भाषा के फुल स्टॉप विराम चिह्न के प्रयोग करने का भी चलन है।

2. अर्थ के स्पष्टीकरण के द्योतक "अनुतानसूचक चिह्न" (हर्ष-विषाद, आश्चर्य-विस्मय, घृणा-क्षोभ, करूणा-भय आदि वृत्तियों को दर्शाने वाला विस्मयादि बोधक चिह्न (!) और प्रश्नसूचक चिन्ह (?)

3. शुद्ध लेखन-पठन की दृष्टि से उपयोगी "शुद्धतापरक चिह्न"। ये चिह्न कई प्रकार के हैं। जैसे - उद्धरण चिह्न (" " अथवा ' '), योजक चिह्न/हाइफन (-), निर्देशक (डेश —), विवरण चिह्न (कॉलन :), वितरण चिह्नों (:—), कोष्ठक (), संक्षेपसूचक चिह्न अथवा लाघव चिह्नों (0 अथवा.) हंसपद अथवा त्रुटिपूरक चिह्न (), इत्यादि-चिन्ह (.....)।

यह सही है कि प्रत्येक भाषा की अपनी निर्धारित संरचना होती है, अपना विशिष्ट भाव-जगत होता है और उस विशिष्ट संरचना/भाव जगत को अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषा में शाब्दिक संरचना में बांधने की प्रक्रिया काफी जटिल होती है। अंग्रेजी भाषा की प्रकृतिगत विशेषता है कि उसमें विरामादि चिह्नों का सहयोग लेते हुए लंबे-लंबे वाक्यों की रचना की जाती है। वैसे, अंग्रेजी के उन लंबे वाक्यों को सही ढंग से पढ़ने एवं अर्थ सम्प्रेषित करने में ये विरामादि चिह्न उपयोगी सिद्ध तो होते हैं लेकिन यदि उसी शैली और वाक्य संरचना को हिंदी में अपनाया जाए तो आप स्वंय ही कल्पना कर सकते हैं कि भाषा का रूप कैसा होगा। उदाहरण के लिए कथ्य को स्पष्ट करने के लिए एक ही वाक्य के भीतर कोष्ठकों के सुंदर प्रयोग वाले निम्न वाक्य को देखिए:

Marx's childhood and youth fell in that period of European history when the reactionary powers (favouring Monarchical political order) were attempting to eradicate from Post-Napoleonic Europe all traces of the French Revolution; and at the same time, a liberal Movement (favouring autonomy of the individual and standing for the protection of political and civil liberties) in Germany that was Making itself felt.

इस प्रकार के लंबे वाक्यों का अनुवाद करते समय दूरस्थ दोष से बचना चाहिए। लंबे वाक्यों में उलझाव की संभावना अधिक होती है जिस कारण कथ्य में बिखराव की आशंका भी बनी रहती है। उसके लिए यदि आवश्यक हो तो अंग्रेजी के लंबे-चौड़े एक वाक्य को दो अथवा दो से अधिक वाक्यों में विभाजित करते हुए अनुवाद किया जा सकता है। उस स्थिति में विरामादि चिह्न लक्ष्य भाषा (हिंदी) की प्रकृति के अनुरूप ही लगाए जाने चाहिए। संक्षिप्त वाक्य सीढ़ी का काम करते हैं। एक-एक सीढ़ी पर पैर रखकर मंजिल तक पहुंचना सरल है। इसके विपरीत, लंबे

वाक्य "लंबी कूद" (खेल विशेष का नाम) के समान है जिसे व्यवहार में लाकर कथ्य-प्रस्तुति में पार भी हो सकते हैं और चित्त भी हो सकते हैं। उपर्युक्त उद्धरण का अनुवाद देखिए:

"मार्क्स का बचपन और युवावस्था यूरोपीय इतिहास के उस काल में बीते जब प्रतिक्रियावादी शक्तियां राजतंत्रात्मक राजनैतिक व्यवस्था का समर्थन कर रही थी। नेपोलियन के उपरांत यूरोप से फ्रांसीसी क्रांति के सभी प्रभावों और अवशेषों को मिटाने का प्रयास किया जा रहा था। दूसरी ओर, उसी कालावधि में जर्मनी में एक उदारवादी आंदोलन भी लोकप्रिय हो रहा था। वह उदारवादी आंदोलन, व्यक्ति की स्वायत्ता और राजनैतिक-नागरिक स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए जोर दे रहा था।"

हिंदी अनुवाद करते समय मूल का अनुकरण न करके विवेकानुसार वाक्यों का उप-विभाजन करते हुए विरामादि चिन्हों का लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार स्थान बदलकर एवं कोष्ठक हटाकर अनुवाद किया गया है। इस कारण अनूदित कथन प्रभावपूर्ण बन गया है।

इसी प्रकार, एक ही वाक्य के अंदर अल्प-विराम और पूर्ण-विराम आदि विराम चिन्हों के भरमार लगा देना अंग्रेजी भाषा की प्रकृति के अनुसार संभव है। उदाहरण के लिए, किसी फोटो के नीचे दिए गए शीर्षक के एक वाक्य को देखिए[11]

L to R : Ms. Kiran Bedi, IGP; Sh. Arjun Singh, Minister, HRD; Sh. M.L. Khurana, CM, NCT, Delhi; Dr. S.K. Gandhe, VC, IGNOU; Dr. P.K. Mehta, Director, R.S.D.

उपर्युक्त उदाहरण का हिंदी में यदि मक्षिका स्थाने मक्षिका अनुपालन किया जाए तो वाक्य का हिंदी रूप होगा:

"बाएं से दाएं : सुश्री किरण बेदी, पुलिस महानिरीक्षक; श्री अर्जुन सिंह, मंत्री, मानव संसाधन विकास; श्री मदनलाल खुराना, मुख्यमंत्री, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली; डॉ॰एस॰के॰गांधे, कुलपति इग्नो; डॉ॰पी॰के॰ मेहता, निदेशक, क्षेत्रीय सेवा प्रभाग।"

किंतु क्या यह हिंदी संस्करण निर्बाध रूप से अर्थ को अभिव्यक्त करने में सक्षम है? नहीं। कारण, इस अनूदित पाठ को पढ़ते समय ऐसा महसूस होता है कि जैसे किसी वाहन में बैठे हों और वह वाहन हिचकोले मारकर चल रही है या वह झटके मार-मारकर आगे बढ़ रही है। इस तरह से अनुवाद की तुलना, सीधी-सपाट सड़क पर पड़े हुए पत्थरों से की जा सकती है जो वाहनों की आवाजाही में जगह-जगह रूकावट पैदा करते हैं। विरामादि चिह्नों के इस प्रकार प्रयोग करने से प्रेषणीय एवं प्रवाहमय अनुवाद में रूकावट पैदा हो जाती है। वैसे भी यदि कहीं गलती से कोई चिह्न लगाना छूट जाए या फिर गलत विरामादि चिह्न का प्रयोग हो जाए तो वह कथ्य के लिए अर्थ का अनर्थ सिद्ध करने वाला होगा। ऐसी स्थिति में बेहतर यह होगा कि मूल कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त विरामादि चिह्नों का तो प्रयोग किया ही जाए, किंतु उनकी बाढ़ न ला दी जाए। इस कारण फोटो के नीचे दिए गए उपर्युक्त शीर्षक का निम्नलिखित अनुवाद अपेक्षाकृत अधिक सम्प्रेष्य होगा[12] :

"बाएं से दाएं: पुलिस महानिरीक्षक सुश्री किरण बेदी; मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह; राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुरानाः इग्नो के कुलपति डॉ॰एस॰के॰गांधे; क्षेत्रीय सेवा प्रभाग के निदेशक डॉ॰ पी॰के॰ महेता।"

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि भाषा के लिखित रूप के लिए विरामादि चिह्नों का उपयोग नितांत आवश्यक है। विरामादि चिह्नों का प्रयोग कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है और विशेष तौर पर लिखित भाषा को अर्थवत्ता प्रदान करने में। इन विरामादि चिह्नों की सहायता से अर्थ की बारीकियां उद्घाटित होती हैं। वाक्य की संरचना के अंग के रूप में इनका विशेष व्याकरणिक महत्व है। वस्तुतः इनकी सहायता से भाषिक संरचना को काफी सहयोग प्राप्त होता है, भाषा का स्वरूप निखरता है। अतः इन चिन्हों का प्रयोग पूरी सावधानी एवं सतर्कता से करना चाहिए। (वैसे यह बात अलग है कि इन चिह्नों का केवल भाषा के लिखित रूप में ही महत्व है, बोलते समय इनका उल्लेख तक नहीं किया जाता।) जहां तक हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में विरामादि चिह्नों के महत्व का संबंध है, यही कहा जा सकता है कि ये अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही हिंदी में आए हैं एवं खड़ी बोली गद्य के विकास के साथ-साथ स्थापित होते गए हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि अधिकांश विरामादि चिह्नों ने हिंदी भाषा को अर्थगत-स्पष्टता और व्याकरणिक व्यवस्था को नियमित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी भाषा का रचनात्मक व्याकरण, डॉ॰ यज्ञदत्त शर्मा, लाइब्रेरी बुक सेंटर, दिल्ली, पृ.166
2. प्रयोजनमूलक हिंदी व्याकरण, डॉ॰ द्विजराम यादव, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, पृ॰ 31
3. हिंदी भाषा का रचनात्मक व्याकरण, डॉ॰ यज्ञदत्त शर्मा, लाइब्रेरी बुक सेटर, दिल्ली, पृ॰ 166
4. अच्छी हिंदी कैसे बोले कैसे लिखें, डॉ॰ भोलानाथ तिवारी, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 184
5. अच्छी हिंदी, डॉ॰ रामचन्द्र वर्म्मा॰, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ॰ 256
6. अच्छी हिंदी कैसे बोले कैसे लिखें, डॉ॰ भोलानाथ तिवारी, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 184
7. प्रयोजनमूलक हिंदी व्याकरण, डॉ॰ द्विजराम यादव, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, पृ 31
8. अच्छी हिंदी, डॉ॰ रामचन्द्र वर्म्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ 256
9. हिंदी भाषा, डॉ॰ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, नई दिल्ली, पृ200
10. सदानीरा, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, भाग-2, पृ23-24
11. IGNOU Newsletter, Indira Gandhi National Open University; Maidan Garhi, New Delhi; Volume No.4, Issue No. 12; September, 1994.
12. इं॰गां॰रा॰मु॰वि॰ न्यूजलेटर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली; वर्ष 4, अंक 12; सितंबर, 1994.

भाषा का जन्म

—डा० कृष्ण नारायण पाण्डेय

मनुष्य की बोली, भाषा के जन्म के विषय में समय—समय पर किये गये शोध कार्यों को समन्वित रूप में रखकर सत्य के निकट पहुंचना सम्भव है।

विकासवाद के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य बंदरों का विकसित रूप माना जाता है। समन्वित दृष्टि से यह सर्वमान्य होगा कि प्रारम्भ में मनुष्यों का रहन-सहन बंदरों की तरह था।

प्रारम्भिक जीवन में सब कुछ प्राकृतिक स्वाभाविक था। सबसे अधिक बुद्धिमान जीव मनुष्य की जीभ विभिन्न प्रकार की ध्वनियों कर सकती है। मनुष्य के सामान्य संकेत जब धवनियुक्त हुये तब भाषा का जन्म हुआ। मनुष्य की बोली के विकास के सात सोपान सम्भव हैं:-

1. प्राकृतिक ध्वनियों का श्रवण-पर्यावरण में सरसर हवा का चलना, कलकल जल का वहना, गड गड़ धन धन गर्जन, झर झर वर्षा और फर फर पत्तों का हिलना-सम्बंधित वस्तु के प्रथम परिचय एवं नामकरण का आधार बना। जिस प्रकार तोता शब्दानुकरण करता है उसी प्रकार मनुष्य ने भी किया होगा।
2. जीव-जन्तुओं का अनुकरण-समीपस्थ जीव-जन्तुओं की बोली के अनुसार उसका नामकरण सहज ही सम्भव है। जैसे कि कॉव कॉव ध्वनि के अनुसार "कौआ" 'काक' (संस्कृत) नाम से पुकारा गया। इसी प्रकार इंग्लिश 'कक्कू' मिश्री गाऊ (बिल्ली) तथा हिन्दी घुघ्घू शब्दों का सृजन हुआ।
3. भावनात्मक ध्वनियां-स्नेह, हर्ष, कष्ट, भूख, प्यास, भय, घृणा प्रदर्शन के लिये ओह, अहा, हाय, हूं, उहूं धिक जैसी ध्वनियों से आज भी भाव सम्प्रेषण किया जाता है। इन्हीं ध्वनियों से भावी शब्दों की नींव पड़ी।
4. प्रतीक संकेत-गूंगे लोगों के संकेतों की तरह बड़ी वस्तु के लिये दोनों हाथों से तथा छोटी वस्तु के लिये दो अंगुलियों से किये जाने वाले संकेत कालान्तर में ध्वनियुक्त होकर 'विशाल' तथा 'लघु' जैसे शब्दों के कारण बने।
5. अक्षरों का सृजन-गतिसूचक गम् गम्, गप गप ध्वनियों से 'ग' अक्षर जाने के अर्थ का बोधक बन गया। वृक्ष पर स्थित बंदर की खों खों ध्वनि 'ख' मानो आकाश का आधार बनी होगी। पक्षी के लिये 'खग' शब्द का सृजन इन दो अक्षरों के योग से हुआ है। इसी प्रकार 'ज' जन्म, 'प' पालन 'द' दान के अर्थ में प्रचलित हुये। सु, दु, कु, जैसे अक्षरों का अर्थबोध क्रमशः इसी प्रकार होता गया।
6. शब्द सृजन-क्रमशः जाना, हंसना, खेलना, कूदना जैसी क्रियाओं के चलन के साथ ही ज्ञात अक्षरों से सुलभ, दुर्लभ जैसे शब्द बनते गये।
7. वाक्य-निर्माण, विविध वस्तुओं के बहुत से शब्दों के प्रयोग से अब संकेतों के स्थान पर केवल ध्वनि के माध्यम से भाव सम्प्रेषण सम्भव हो गया, भाषा का जन्म हो गया।

भाषाओं में अंतर क्यों?

विश्व के जानवर एक सी ही ध्वनियां करते हैं। अमेरिका, अफ्रीका या एशिया में रहने वाली बिल्लियां केवल म्याऊं म्याऊं ही बोलती है परन्तु मनुष्यों की बोलियों में भाषाओं में सर्वत्र अंतर दिखाई देता है।

मनुष्य की सुविधा भोगी बुद्धि अपनी इच्छानुसार तथा जलवायु के अनुसार भी शब्दों में परिवर्तन करती रहती है फिर भी किसी न किसी रूप में भाषायी एकता के दर्शन प्रयास करने पर सम्भव है।

मनुष्य की मूल भाषा—

भारतीय दृष्टिकोण से संस्कृत अपौरूषेय, मानव की प्राचीनतम मूल भाषा है, यद्यपि साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से बौद्ध पाली को, जैन अर्द्धमागधी को ईसाई हिब्रू को, मिश्रदेशीय मिश्री को विश्व की प्राचीनतम भाषा मानते हैं। मानव शिशु का प्रथम रोना ही मानव की मूल भाषा है। इसके विश्लेषण से प्राप्त तीन स्वर 'अ इ उ' महर्षि पाणिनी के प्रथम सूत्र अ इ उ ण में सम्मिलित है अतः संस्कृत ही मानव की मूल भाषा है।

पुरातात्विक तथा साहित्यिक प्रमाणों से रहित भारत में आर्यों के आगमन की परिकल्पना के पूर्वाग्रह से मुक्त होकर विचार करें तो सिन्धुघाटी नगर सभ्यता महाभारत (3000 ई०पू०) के समकालीन थी। वैदिक ग्राम्य सभ्यता सिन्धु सभ्यता के पूर्व की है।

ऐतिहासिक दृष्टि से संस्कृत का विकास क्रम निम्नवत है :

1. वैदिक संस्कृत सृष्टिकाल, मनुष्य की मूल भाषा
2. संस्कृत रामायणकाल की, प्रागैतिहासिक समय
3. संस्कृत महाभारतकाल की 3000 ई०पू०। लिथुवानिया तथा मिश्री भाषायें अलग हुयी
4. संस्कृत पौराणिक 2000 ई०पू०की। अवेस्ता, चीनी, हिब्रू ग्रीक भाषायें बनी।
5. संस्कृत-पाणिनी द्वारा संरक्षित 1000 ई०पू० पश्चात / लैटिन, फ्रेन्च, अरबी, फारसी, पश्तों भाषाओं का विकास हुआ।
6. संस्कृत पतंजलि महाभाष्य की ई०पू० दूसरी शताब्दी। तमिल, पाली, प्राकृत भाषा प्रकाश में आई।

शेष पृष्ठ 17 पर

3686/HA

भू-भाग विश्लेषण प्रणाली तथा उसकी उपयोगिता (भू-विज्ञान के संदर्भ में)

—डॉ॰ रा॰ अ॰ चान्सरकर

[विज्ञान के क्षेत्र में नित नये अनुसंधान होते रहते हैं लेकिन इन से सभी व्यक्ति लाभान्वित नहीं हो पाते। इसका एक कारण यह है कि ये अनुसंधान कार्य हिंदी माध्यम से नहीं किए जाते हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए अब अनेक वैज्ञानिक अपने शोध कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से भी करने लगे हैं। भू-विज्ञान के क्षेत्र में रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला के निदेशक डा॰ रा॰ आ॰ चान्सरकर एक हिंदीत्तर भाषी वैज्ञानिक हैं। आपने भू-विज्ञान के क्षेत्र में अपने अनेक कार्यक्रम तथा शोध-पत्र हिंदी भाषा में प्रस्तुत किए हैं। आपके हिंदी में लिखित अनेक शोध-पत्र विविध संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किए गए हैं। डा॰ चान्सरकर द्वारा तैयार किए गए शोध लेख "भू-भाग विश्लेषण प्रणाली तथा उसकी उपयोगिता" को हम राजभाषा भारती के पाठकों के लिए यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। —संपादक]

प्रस्तावना :

'भू-भाग' शब्द का प्रयोग धरती के किसी भी पृष्ठ भाग—जोकि प्राकृतिक स्थल, पारिस्थितिक वातावरण, भू-वैज्ञानिक व्यवस्थापन या मनुष्य के उपयोग में आने वाले स्थान (अभियान्त्रिकी, स्थापत्य व्यवस्थापन या दृश्यभूमि का कोई भी कार्य) के लिये किये गये विश्लेषण में किया जाता है। मानव के विकास के लिए धरती का उपयोग आज की दृश्यभूमि और इससे प्रभावित करने वाले नैसर्गिक विपदाओं पर निर्धारित किया जाता है। आज की दृश्यभूमि पुराजैवभौगोलिक लक्षणों से भू-वैज्ञानिक चतुर्थ महाकल्प में बनी हुई है। किसी भी दृश्यभूमि का विकास विभिन्न अश्मविवर्तनिक अनुक्रमों पर विभिन्न भू-आकृतिक प्रक्रमों के प्रभाव से होता है। अतः विभिन्न चट्टानों की क्षमता और अपरदन विभव, विवर्तनिक क्षीण क्षेत्र, भ्रंश का ऊर्ध्वपात तथा भौतिक प्रक्रम ये सब मिलकर परिणामी स्थलाकृतिक भाव बनाते हैं। भू-भाग के उपयोग के लिये पृथ्वी अध्ययन से संबंधित विज्ञानों की जानकारी आवश्यक हैं। जगह-जगह नैसर्गिक कारक (जैसे भू-वैज्ञानिक, विवर्तनिक, जलवायु, मृदा, वनस्पति, जल सम्पदा) बदलते हैं और इनका संयोग भू-भाग वर्गीकरण के लिए चुनौती है।

किसी भी अच्छे वर्गीकरण की कसौटी उसकी पूर्णता, सुस्पष्ट वर्ग, उच्चतम प्रागुक्ति मान और कम से कम सूचना पर निर्भर करती है। उद्धेश्य परिशुद्ध होने से और समष्टि के स्वरूप में सुस्पष्ट विच्छेद से वर्गीकरण की कसौटियां सरलता से उतरती हैं, लेकिन जहां उद्धेश्य सुस्पष्ट न हो, समष्टि में भी संक्रमी प्रकृति हो तो वर्गीकरण की समस्या जटिल हो जाती है।

भू-भाग वर्गीकरण की भी ऐसी समस्या है। भू-भाग संबंधी आवश्यकतायें, किसान की, सिविल अभियान्त्रिक, नगर नियोजक, वनस्पति वैज्ञानिक या अन्य किसी की आवश्यकतायें एक ही भू-भाग वर्गीकरण और न्यास से यदि प्राप्त करनी हों तो विनिर्देश और यथार्थता का परिशुद्ध होना आवश्यक है। भू-भाग और उनके अनुपातों का सुस्पष्ट वर्गीकरण तथा प्राथमिक न्यास जो क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करे ऐसी पद्धति बनायी गयी है। भू-भाग अनुपातों का अन्य विनिर्देशों पर आधारित सहसंबंधों से न्यास को और भी उन्नत किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार की भू-रचनायें और उनका भू-वैज्ञानिक सबध :

पृथ्वी की सतह पर विभिन्न प्रकार की दृश्यभूमियां पायी जाती हैं। इनमें ऊंची-ऊंची बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखलाएं और उनसे बहने वाली नदियां, उनसे बनी उपजाऊ मैदानी प्रदेश, पठार, रेगिस्तान, समुद्र से लगे मैदान, द्वीपसमूह आदि सम्मिलित हैं। इन दृश्यभूमियों की बनावट और उसमें निरन्तर परिवर्तन मुख्यतः भू-वैज्ञानिक (भू-स्तर, शैल, उनकी विवर्तनिक स्थिति) भू-आकृतिक प्रक्रम (हिमनदीय, नदीय, वायूढ़, समुद्री क्रिया) और समय मापक्रम के अनुसार होती हैं। इन प्रक्रियाओं का दृश्यभूमि में परिणाम अलग-अलग पैमाने पर विश्लेषण से पता चलता है। उदाहरण के तौर पर मरूस्थली वायोढ़ प्रक्रिया से, गंगा नदी के मैदान जलोढ़ प्रक्रिया से, हिमालय की ऊंची श्रृंखलायें हिमनदीय प्रक्रिया से, अरावली पर्वत, नर्मदा-सोन घाटी, शिवालिक पहाड़ियां भू-वैज्ञानिक कारणों से स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। अतः धरती के सारे दृश्यभूमियों का वर्गीकरण किया जा सकता है। जैसे दुनिया के सारे मरूस्थली प्रदेश, पर्वत श्रृंखलायें, मैदानी प्रदेश, द्वीप, जलसमूह आदि। लेकिन अलग-अलग पैमाने पर यह वर्गीकरण जटिल होता है और उनमें नये फलक जुड़ जाते हैं। इस वर्गीकरण का प्रयास हर देश में मानव कल्याण के लिए भूमि उपयोग में किया जाता है।

भू-विश्लेषण पद्धति तथा उद्देश्य :

दृश्यभूमि के विकास के सिद्धातों का विवरण भूगोल के प्रसिद्ध और संस्थापक वैज्ञानिक 'डेविस' ने 'संरचना', प्रक्रम और अवस्था' के रूप में दिया है। इसके पश्चात भू-आकृतिक वैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त पर आगे शोध कार्य किया है। सिद्धान्तों के आधार पर किये गये वर्गीकरण का सर्वोपयोगी दृष्टि से अंगीकरण किया गया है।

ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया और अमेरिका में प्रचलित पद्धतियां :

प्रत्येक देश में किसी भी दृश्यभूमि के उपयोग के लिए वर्गीकरण तथा आकड़े एकत्रित करके विश्लेषण किया जाता है। इससे अलग-अलग क्षेत्रों में निरन्तर आकड़े एकत्रित होते रहते हैं। ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया और अमेरिका में वर्गीकरण की प्रचलित पद्धतियां तालिका—१ में दर्शायी गयी हैं। इसमें उद्धेश्य, वर्गीकरण, उसका आधार, संमागता और पर्नुरुत्पादन क्षमता तथा भू-मापन पैमाने पर तुलनात्मक स्थिति बताई गई है।

इस तालिका से यह पता चलता है कि प्रत्येक देश की धरती की बनावट अलग होने से वर्गीकरण भी उसी तरफ झुका हुआ है। लेकिन वर्गीकरण का मूल प्रारूप कुछ सीमा तक समान है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भू-आकृतिक मानचित्रों के मानकीकरण का प्रयास हो रहा है।

3686 | M17

समन्वयन प्रणाली :

भू-भाग अनुसंधान में समन्वयी पद्धति अपनायी गई है। इस वर्गीकरण के मुख्यतः दृश्यभूमि-प्रतिरूप और फलक मान्यता प्राप्त है। प्रतिरुप का अभिज्ञान भू-विज्ञान संरचना, आकृतिक भाव और जलवायु पर आधारित है। किसी भी प्रतिरूप का आगे वर्गीकरण फलकों में होता है, जिनका आधार जमीन की ढलान, उसकी बनावट—मृदा और नमी की स्थिति पर आधारित है। इस प्रणाली में भू-आकृतिक विज्ञान और सर्वोपयोगिता का समन्वय है।

भू-भाग वर्गीकरण और गुण सूची संचयन :

किसी भी दृश्यभूमि के वर्गीकरण की ईकाइयों के लिए समुचित न्यास-आधार तैयार किया जाता है। जिसमें भू-आकृतिक और अन्य परिवर्तन का समावेश होता है। इन ईकाइयों के गुणों का फलक स्तर पर विवरण तालिका — २ में दर्शाया गया है। इनमें भू-पृष्ठ वर्णन, मृदा निक्षेप, भूमि उपयोग, वनस्पति और नमी की प्रवृति का विस्तारण दिया गया है। इस पद्धति में न्यास का मानकीकरण और विकास निहित है।

दृश्यभूमि में शैलस्तरों और उनकी संरचना की छाप

जैसा की ऊपर बताया गया है कोई भी दृश्यभूमि भू-वैज्ञानिक, प्रक्रम तथा जलवायु पर आधारित होती है। इनमें से जिस कारक का प्रभाव अधिक होता है, उसकी छाप दृश्यभूमि में दिखाई देती है और इसका संकेत स्थलाकृति की बनावट, अपवाह प्रतिरूप, अपवाह विभाजकों के समन्वयित विश्लेपण हमें केवल स्थलाकृति के आधार पर ही भू-वैज्ञानिक और भू-आकृतिक जानकारी देता है तथा दृश्यमूमि के बारे में संगणक ज्ञान आधार तैयार करने में मद्द करता है। इन्हीं पहलुओं पर आधारित दो उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

शिवालिक पहाड़ियां :

मोहंड जो छुटमलपुर—देहरादून रास्ते पर पड़ता है और जहां से शिवालिक पहाड़ियों की शुरुआत होती है, भारतीय सर्वेक्षण के स्थलाकृतिक अंशचित्र क्रमाक (५३ एफ/१६) में आता है। केवल अपवाह प्रतिरूप के अध्ययन से इस क्षेत्र में आश्मिक आधार का पता चलता है और भू-भाग परिवर्तन के सूचक के रूप में भी इसका उपयोग होता है। इस दृश्यभूमि में मुख्यतः चार प्रतिरूप पहचाने गये है, जिनमें पहाड़ियां, गिरिपद मैदान, विच्छेदित गिरिपद और जलोढ़ मैदान साफ दिखाई देते हैं (आकृति १)। यही दृश्यभूमि उपग्रह द्वारा सुदूर संवेदन से प्राप्त प्रतिबिंब में (आकति २) दिखाया गया है। इन चार प्रतिरूपों का वर्णन अपवाह की विशेपताएं और आश्मिक आधार तालिका ३ में दी गई है।

अरावली पहाड़ियां :

समय और स्थिति के अनुसार जो दृश्यभूमि कई अरबों सालों से विविध प्रक्रमों से प्रभावित है। इनमें भू-आकृतिक संरचना की छाप और संकेत स्पष्ट रूप से भू-आकृति में दिखाई देते हैं। भारत देश में ऐसा प्रदेश अरावली पहाड़ियां हैं, जो भू-वैज्ञानिक समय मापन के अनुसार लम्बे समय से प्रभावित हैं। इनमें भू-आकृति और भू-विज्ञान का समन्वय बहुत अधिक है। अलवर के समीप करोली क्षेत्र का उदाहरण नीचे दिया गया है। यह क्षेत्र भारतीय सर्वेक्षण के स्थलाकृतिक अंश चित्र क्रमांक (५४ ए/१४) में आता है। इसमें केवल अपवाह और अपवाह विभाजक में विश्लेपण में भू-वैज्ञानिक संरचना के सूचक मिलते हैं। मुख्यतः तीन प्रतिरूप—वलित कटक, विच्छेदित मैदान और समतल मैदान पहचाने गये हैं। दृश्यांश प्रतिरुप और संरचनात्मक नियंत्रण में सीधा तालमेल है (आकृति ३ और तालिका ४)। [सुदूर संवेदन प्रतिबिंब (आकृति ४) में भी यह तालमेल साफ दिखाई देता है।]

भू-भाग विश्लेपण पद्धति से धरती के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन किया जा सकता है। आमतौर पर स्थलाकृतिक अंश चित्र किसी न किसी पैमाने पर मिलते हैं और आजकल उपग्रह द्वारा लिये गये प्रतिबिंब भी मिलते हैं। संगणक में तकनीकी शोध और प्रगति से आलेखी (३ डी) पर सुदूर संवेदन आंकड़े बिछा कर दृश्यभूमि का प्रतिरोपण करना संभव है। एक तरह से किसी हद तक दृश्यभूमि और उसका वर्गीकरण और विश्लेपण प्रयोगशाला में संभव है जो कि उच्च स्तर पर भूमि-नियोजन में सहायक सिद्ध होता है।

तालिका—१: ब्रिट्रेन, कनॉडा, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में प्रचलित पद्धतियां

	ब्रिटेन	कनॉडा	ऑस्ट्रेलिया	अमेरिका
उद्देश्य	विशाल भू-भाग के विकास के लिये विश्लेषण जहां कम सर्वेषण हुआ है (ऑक्सफॉर्ड समूह)	मस्केग का (बर्फ, जलाशय और कच्छ भूमि) भू-भाग विश्लेषण-गतिशीलता और संचार के लिये	पश्चिम ऑस्ट्रेलिया में विशाल भू-भाग के विकास के लिये	बाहरी क्षेत्रों में विशेष अनुपयोग के लिये
भू-भाग वर्गीकरण	प्रतिरुप, फलक, उपफलक और परिवर्त भूमि संग्रह	मस्केग वर्गीकरण	प्रतिरुप, इकाई, घटक विश्लेषण	कारक-कुल संबंध
वर्गीकरण का आधार	आकृतिक, भू-वैज्ञानिक, जलवायु संबंधी (भूमि प्रतिरुप के लिये) ढलान (फलक के लिये) सूक्ष्म उच्चावच (उपफलक के लिये) पदार्थ और नमी (परिवर्त के लिये)	ऊचाई, सतह, बर्फ की परत, दलदल, जलाशय, वनस्पति	आकृतिक, भू-वैज्ञानिक, जलवायु संबंधी (भूमि समूह के लिये) भू-वैज्ञानिक (इकाई के लिये) स्थालनीय परिवर्तन (घटक के लिये)	भू-भाग का स्थानीय गुण न्यास (विशेष अनुपयोग के लिये आकृतिक, भू-वैज्ञानिक, जलवायु संबंधी वास्तविक आंकडे
समांगता और पुनरुत्पादन क्षमता	भू-भाग इकाईयों की पहचान (थिमैटिक साहित्य, मानचित्र और वायव फोटो निर्वचन के आधार पर) सभी व्यवहारिक उपयोगों के लिए समरुपता	मस्केग वर्गीकरण में सभी इकाईयों में समरुपता	प्रत्येक भूमि समूह में समरुपता	भूमि विश्लेषण 'स्थान विशेष' के लिये।

3686/HA

भू-मापन पैमाना	१:५०,००० मानचित्रों पे (अधिक विस्तार सम्भव—नई इकाईयों के साथ)	१:५०,००० मानचित्रों पे (अधिक विस्तार सम्भव—नई इकाईयों के साथ)	१:५०,००० मानचित्रों पे (अधिक विस्तार सम्भव—नई इकाईयों के साथ)	विस्तृत, विशेष स्थानीय गुण संचयन और उनका विशेष उपयोग

तालिका—2: भू-भाग इकाइयों के गुण और उनके समूह (फलक स्तर पर अक्षरांकीय संकेत)

भू-पृष्ठ वर्णन	(क) स्थलाकृति	ऊचाई, दृश्य भूमि में स्थान, रूप / आकृति, क्षेत्रीय विस्तार, अंतराल, अनुस्थापन, ढलान — मात्रा और दिशा, ढलान की सतह का स्वरुप / सूक्ष्म उच्चावच, सीमा का स्वरुप / संलग्न फलक से सम्पर्क, सूखे और गीले मौसम में जल सतह, जल की गुणता
	(ख) अपवाह / जलनिकास	विस्तार — (लंबाई, चौड़ाई, गहराई), अनुस्थापन, प्रवणता, आकृति, अंतराल, विर्सजन
मृदा / पृष्टीय निक्षेप	(क) चट्टानें	शैल प्ररुप, नतिलंब / नति, संधि अंतराल और अनुस्थापन, संहृतशीलता / सुकरणीयता, दृश्यांश विस्तार, पारगम्यता
	(ख) असपिंडित निक्षेप / मृदा	अनुवंशिक अभिमुखता, यू एस सी एस वर्गीकरण, स्तरण / परतन, रंग (सूखी और गीली अवस्था) ग्रेंरर्वग की सीमायें, पी-एच, खारापन, गहराई, पृष्ट / अधस्तल-जलनिकास / नमी की अवस्था, मृदा की प्रबलता और नमी, पुनर्सचन, अपरदन विभव
भूमि उपयोग	(क) कृषि संबंधी	वर्षा से / नलकूप से / नहर से सिंचित, प्रमुख फसलें (रवी और खरीफ) फसल का चक्र, सिंचाई दौर, फसल की अधिकतम ऊंचाई, फसल के रंग में बदलाव, खेत (मोज़ेक, खेतों की सीमा की बनावट), भूमि क्षमता वर्ग
	(ख) खनिज / औद्योगिक कच्चा माल	प्रकार, उपयोग, खुली खदानें, कच्चे माल की गुणवत्ता
वनस्पति	(क) प्राकृतिक	वितरण / उपस्थिति, घनत्व बंटन, वितान, प्रकार, प्रमुख पेड़, किरीटाकार, व्यास, झाड़ी के प्रकार, मौसमी बदलाव
	(ख) पुरस्थापित	वृक्षावलि का प्रकार, ज्यामितीय प्रतिरुप, फलोध्यान का प्रकार, पेड़ों में अंतराल, वायव विस्तार
नमी की प्रवृति	(क) मौसमी परिवर्तन	नमी के विभिन्न स्तर, (क्षेत्रीय संतृप्तता से शुष्कता तक)
	(ख) अन्य कारण	वर्षा, नहर, अवस्त्राव, सिंचाई वगैरह

तालिका—३: अपवाह प्रतिरुप — भू-भाग में परिवर्तन के सूचक — क्षेत्र मोहंड (दृश्यभूमि के आश्मिक आधार)

प्रतिरुप	नाम	वर्णन	अपवाह की विशेषताएं	आश्मिक आधार
१.	शिवालिक पहाड़िया और मध्य हिमालय	समान्तर पहाड़ियाँ / श्रेणीयाँ और घाटियाँ असममित ढलाव वाले किरीट कटक	समाकालित अपवाह, अधिक घनत्व	अवसादी स्तर, कम स्तर नति और संधि सहित
२.	भामर / गिरिपद मैदान	कम ढलान वाले मैदान जो-कि शिवालिक पहाड़ियों से संलग्न है	बहुत लम्बे, चौड़े और दूर-दूर अंतराल पर, मौसमी बाढ़ से प्रभावित	गोलाकार बड़े पत्थर, गहरी जलसतह
३.	विच्छेदित गिरिपद	मंद ढलान वाली पुरानी जलोढ़ सतह जिसका बहुत विच्छेदन और अपरदन विभव है, अधिक सूक्ष्म उच्चावच	बहुत अधिक अपवाह घनत्व, कम लंबाई और अधिक गहराई	स्तरित, सूक्ष्मकणिक अवसाद
४.	जलोढ़ मैदान	समतल क्षेत्र, सूक्ष्मकणिक (रेत और गोद	बहुत कम अपवाह घनत्व मुख्य अपवाह - विस्तृत अंतराल पर चिरस्थायी और मौसमी बाढ़	स्तरित, सूक्ष्मकणिक अवसाद

तालिका—४: दृश्यांश प्रतिरूप — अपवाह और अपवाह विभाजन — भू-भाग में भू-वैज्ञानिक संरचना के सूचक (क्षेत्र करोली — अलवर के उत्तर के)

प्रतिरुप	नाम	वर्णन — दृश्यांश प्रतिरुप	भू-वैज्ञानिक संरचनात्मक नियंत्रण
१.	वलित कटक	लंबे संकीर्ण कटक जिनके मोड पर दृश्यांश चौडा, असममित ढलान - कटक किरीटों के दोनों तरफ, समान्तर अपवाह, अपवाहों की लंबाई ढलानों की चौड़ाई के अनुरुप	वलित संरचना, मंद ढलान, नति ढलान के समरुप, अधिक ढलान नति ढलान के विरुद्ध दिशा में, अपनति और अभिनति का दृष्टांत स्थलाकृति
२.	विच्छेदित मैदान	कटकों के आधार क्षेत्र में पाये जाने वले मंद ढलान वाले मैदान, अल्पकालिक नालों से बना मिश्रोढ़ निक्षेप	विच्छेदन और गभीरीभूत शैल संधियों से नियंत्रित
३.	समतल मैदान	करोली के दक्षिण-पूर्व का क्षेत्र, समतल क्षेत्र, सूष्म अवसाद	कटकों के साथ भ्रंश संपर्क

3686/HA

भारत की राष्ट्रीय एकता में मलयालम साहित्य का योगदान

—डॉ० एस० जे० दिवांकर

भारत की राष्ट्रीय एकता उसकी सांस्कृतिक एकता से अभिन्न रूप से संबद्ध है। जब सांस्कृतिक एकता का विनाश होता है तब फिर इस बात में कोई सन्देह नहीं रहता कि राष्ट्रीय एकता भी समाप्त होती है। सांस्कृतिक एकता के होते हुए भी अगर देश के बहुसंख्यक लोग उससे अनभिज्ञ रहें तो वह भी राष्ट्रीय एकता के लिए घातक है। इसीलिए राष्ट्रीय एकता को सुस्थिर बनाये रखना चाहते हैं तो हमें सांस्कृतिक एकता का बोध जन-हृदय में पैदा करना होगा। सांस्कृतिक एकता के होते हुए भी यदि राष्ट्रीय एकता के सिर पर 'डिमोक्लिस की तलवार' सदैव लटकती रहती है तो फिर उसके अभाव की स्थिति में क्या कहना? इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अस्तित्व का अज्ञान परिणाम में अभाव ही है। सांस्कृतिक एकता की अन्तःशक्ति के लिए मंचो पर ढिंढोरा पीटना पर्याप्त नहीं, बल्कि आगामी पीढ़ी को उसके संबंध में सोचने और काम करने की शिक्षा देनी चाहिए। देश की संस्कृति सर्वाधिक कलाओं में प्रतिबिंबित होती है और उन कलाओं में प्रमुख है साहित्य।

मलयालम साहित्य में गत शताब्दी के पूर्व की साकी रचनाओं पर ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों का आधिपत्य रहा है। यह इस बात का द्योतक है कि रामायण, भारत आदि कृतियों ने केरलीय हृदय और केरलीय जन-जीवन पर बहुत ही गहरा प्रभाव डाला है। उस काल की सभी रचनाएं ऐतिहासिक या पौराणिक तथ्यों पर आधारित है। 'रामचरितम' प्राचीनतम् केरल ग्रंथ माना जाता है। उसके बारे में एक दन्तकथा प्रचलित है कि वह केरल के जवानों में वीरता का संचार करने के लिए एक राजा द्वारा रचा गया है।

भक्ति मार्ग के नवोत्थान के रूप में 'रामायण', भारत आदि का प्रचार हुआ। 'रामचरित' के बाद प्रौढ़ कृतियों में 'निरणकृतियों' के नाम से प्रख्यात् अनुवाद संग्रह आते हैं। माधव परिणक्कर, रामपणिक्कर और शंकर पणिक्कर नामक तीन एक कुलजात कवियों ने भगवद्गीता, रामायण, भारत, भागवत आदि का अनुवाद किया। यह विशेषरूप से उल्लेखनीय है कि भारत की प्रान्तीय भाषाओं में गीता के जितने अनुवाद हुए है, उनमें माधवपणिक्कर के गीता-संग्रह का प्रमुख स्थान है। आर्य भारत की आन्तरिक आत्मा साधारण जनता के लिए अप्राप्य लगती थी, पर इस आचार्य ने उस उत्तम मंडल में दृष्टि फैलाने के लिए हमेशा के लिए खिड़की खोल दी है। उसी प्रकार उनके अनुगामी रामपणिक्कर और शंकर-पणिक्कर की सेवाएं भी अनमोल हैं। इन सब के अनुवाद संग्रहों के माध्यम से ही केरल जनता ने उन दिनों में भारत हृदय की धड़कनों का निकट से अनुभव किया था और उससे प्रभावित होकर केरल के सहृदयों ने भारतीय चैतन्य को शरीर और प्राण के साथ अपने सामने खड़े देखा।

पुराणों के मूल रूपों में मानव हृदय के विभिन्न भावों को खुलकर अभिव्यक्त किया जाता था। विशेषतः सार्वजनिक और सार्वलौकिक प्रमुख भावनाओं को स्थायी रूप प्रदान करने की भी प्रवृत्ति रहती थी। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होगा कि रति का प्रच्छन्न रूप भक्ति है। आदि रामायण में भक्ति मुख्य रस नहीं है, एक महापुरूष के प्रति आराधनाभाव था, पर उनकी भक्ति विश्वैक शक्ति की भक्ति के रूप में रंजित नहीं थी, पर वही पुराण पुरुष इतिहास के आधार पर आगे चलकर अवतार बन गया। बाल्मीकि के राम अध्यात्म रामायण और तुलसी के रामचरितमानस में कृष्ण भक्ति के प्रचार की लक्ष्यप्राप्ति के शिकार हुए हैं। भक्ति मार्ग के सन्तों ने ही भारतीय भाषा साहित्य में रामायण और भागवत् का प्रचार किया। मलयालम में भी वैष्णव-भक्ति के प्रचार ने कवियों को इतिहास तथा पुराणों का अनुवाद करने की प्रेरणा दे दी, किन्तु मलयालम भाषा के जनक एषुत्तच्छन के 'सारस्य पीयूष सार सर्वस्व' सारखल में ही वास्तव में केरल ने भक्ति का सन्देश सुना। रामानुज (1017-1137) कबीर (1440-1518), गुरूनानक (1469-1538), चैतन्य महाप्रभु (1485-1533) आदि भक्ति पथ के पथिकों ने एक महान आन्दोलन की सृष्टि तो की है। जिस प्रकार चंडीदास, विद्यापति, जयदेव, तुलसीदास, सूरदास आदि कवियों ने उत्तर भारत में और माणिक्य वाचकर, तायुमानार, पाट्टिणल् पिल्लयार, कम्पर आदि ने तमिलनाडु में भक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया उसी प्रकर कण्णशों एषुत्तच्छन, पून्तानम् और मेलपत्तूर ने केरल में भक्ति का बीज बोया और उसे पल्लवित एवं पुष्पित किया। इन सब में प्रमुख एषुत्तच्छन ही हैं। एक ऐसे समय में जबकि केरल में धर्म का पतन हुआ कर्म की ग्लानि हुई, एक नवोत्थित-शक्ति ही जनता की अन्तरात्मा को उन्निद्र कर सकती थी। उस समय केरल विदेशी आक्रमण और आभ्यन्तर संघर्ष के कारण आत्मिक दृष्टि से सुप्त पड़ा था, उसे एक प्रबल विश्वास-शक्ति ही उद्बुद्ध कर सकती थी। युग की इस मांग को पूरा करने के लिए किलिप्पाट्टुकल जिसने अध्यात्म साहित्य के प्रकाशन-साधन के रूप में जन्म लिया था पूर्णरूप से सफल हुआ। उसके सहारे केरल जनता अखंड भारतीय चैतन्य के अन्तः स्रोतों में डुबकी लगाकर आनन्द विभोर हो सकी। कवि पून्तानम् ने अपने सरल आडम्बररहित हौर अनलंकृत गीतों से भक्तों को हर्ष पुलकित किया। वे हमें न केवल भक्ति से भारत-चैतन्य के मन्दिर तक ले गये, लघुगीतों से केरल-जनता को निर्वेद दर्शन में, जो आर्य संस्कृति के विभिन्न तत्वों में से एक है, दीक्षित कराया। मलयालम साहित्य का एक बहुत बड़ा भाग पौराणिक गाथाओं का विभिन्न साहित्यिक शाखाओं के रूप में आविष्कार है ही, चम्पुओं में भी रामायण और भारत की कथाएं अनुस्यूत और आंशिक रूप में प्रतिपादित हुई हैं। नैषध चम्पू पर भारत की ऐतिहासिक कथा और

संस्कृत महाकाव्यों का प्रभाव पड़ा है। रामायण चम्पू और भारत चम्पू का वर्ण्य विषय पौराणिक कथाओं का मार्मिक प्रसंग ही है। इस प्रकार सातवीं और आठवीं शताब्दी तक रामायण और भारत का चैतन्य मलयालम भाषा साहित्य में अन्तर्धारा के रूप में रहा है। मनुष्य की सिराओं के रक्त की तरह, वृक्षों के अन्तर की चैतना की भांति, इसने मलयालम साहित्य के लिए जीवन शक्ति का काम किया है। इसलिए कोई दावा नहीं किया जा सकता कि केरल की संस्कृति, भारतीय संस्कृति से एक दम भिन्न है।

'भारत एक राष्ट्र हैं', यह विचार आधुनिक युग में ही विकसित हुआ। कहा जाता है कि ब्रिटिश शासन के कारण ही भारत एक हो गया किन्तु भारत की राष्ट्रीय एकता पर विचार करते हुए यद्यपि कुछ हद तक इसे मानना पड़े तो भी सांस्कृतिक भारत के लिए यह लागू नहीं होता। बिडम्बना तो यह है कि अपने देश में ऐसे लोग भी हैं, जिनका विश्वास है कि भारत के एकीकरण और विकास के लिए हम अंग्रेजों के ऋणी हैं। इन लोगों की राय में अंग्रेजों का शासन काल भारत का स्वर्णयुग था। भारत की धार्मिक, साम्प्रदायिक और आर्थिक असमताएं जनता में बहुत बड़े भाग को अकथनीय यातनाएं देती थी। उन असमताओं का उन्मूलन करना नहीं किन्तु उन्हें सुस्थिर बनाये रखना, अंग्रेजों की नीति थी। फलस्वरूप भारत में विभिन्न जन-विभागों की आपसी शत्रुता बनी रही, साथ ही अंग्रेजों के प्रति वफादारी भी बढ़ी। साम्प्रदायिक उच्च-नीच भावना से त्रस्त जनता उच्च वर्ग के लोगों को शाप देती थी। उसका विचार था कि इस प्रकार की दीनता के लिए दंड है— गुलामी। अतः भाग्य के सामने सिर झुकाने की एक मनोवृत्ति भी उनमें विचार थी कि इस प्रकार की दीनता के लिए दंड है— गुलामी। अतः भाग्य के सामने सिर झुकाने की एक मनोवृत्ति भी उनमें जाग उठी। महाकवि कुमारन् आशान ने लिखा—

एन्तिन्नु भारत धरे। कर युन्नु पार।
तन्तयम् निनक्कु विधिकल्पितमाणु ताये।

(भारत भूमि, रोती क्यों हो? गुलामी तेरे भाग्य की लिखी हुई है।)

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इस कवि में स्वतंत्रता की तृष्णा की कमी थी। गुलामी की ही तरह तत्कालीन समाज की कई असमताएं कवि को पीड़ा पहुंचाती थी। यद्यपि कवि लिखता है कि गुलामी भाग्य की लिखी है तो भी इंसका अर्थ यही है कि जातिमदिरा की उन्मत्तता से उत्पन्न असमताओं के रहते प्राप्त स्वतंत्रता पूर्ण स्वतंत्रता नहीं है।

तीण्डोल्ला लोटल्लेन्नु लंङल लंङले मौढ्यं
पूण्डाट्टयोटिक्कुन्न धोषमेन्नोकं निल्कुं
अन्नोलं भ्रविक्कानां आर्यधर्मत्तिन गानं
अन्नोलं निश्च्चेत्ता भ्रष्टर नां स्वराज्यनलि।

(वल्लत्तल)

पास आओ मत छुओं मत
जाति मद के इन उद्घोषों के रहते
आर्यधर्म का गीत न सुनेंगे हम
स्वराज्य में पदार्पण न करेंगे हम।

किन्तु गांधीजी के नेतृत्व में स्वदेशी और स्वतंत्रता का आन्दोलन आंधी की तरह आसेतु हिमाचल चल पड़ा और घन गंभीर रूप में गरजने लगा तब भारतीय चेतना जागृत हो उठी। इसके पूर्व जो शक्तियां ब्रिटिश साम्राज्य की तारीफ के पुल बांधती थी वे ही अब उसके विरुद्ध आवाज उठाने लगीं। आश्चर्य तो यह है कि जिस वल्लत्तोल ने विक्टोरिया महारानी के सिंहासनारोहण की रजत जयन्ती के अवसर पर उनकी बड़ी प्रशंसा की थी, वे ही इस प्रकार गरज उठे—

ध्वस्त भुवनमां दौष्ट्य में। निन्तल-
येन्न परात्तियुर्तियालं
ढ्कर्मभूमितन पिचुकाल पोरूमे
चिक्केन्नलोक्के चवुट्टि लापतान्।
भूमि को ध्वस्त करने वाली दुष्टते,
तू अपना सिर कितना भी उठाले,
उसे पद प्रहार कर नीचा करने के लिए
इस कर्मभूमि का छोटा-सा-चरण ही पर्याप्त है।

भारत की एकता और आर्ष भारत के महत्व का गीत गाते-गाते राष्ट्रीय भावनाओं से उद्बुद्ध वल्लतोल कभी थकते नहीं थे। यह नया सन्देश वल्लत्तोल में ही अधिक मुखरित हुआ, जिन्होंने स्वयं गांधी जी का शिष्यत्व स्वीकार करके उनके आदर्शों को स्वीकार किया। प्राचीन भारत की महिमा का गीत गाना परतंत्रता कही भी हों, उससे तंग जनता के प्रति सहानुभूति प्रकट करना, आजादी के आन्दोलन के रचनात्मक कार्यक्रम का समर्थन करना, नेताओं की वीराधना के भाव के साथ पूजा करना आदि उनके राष्ट्रीय गीतों के विविध भाव हैः—

भारतवर्षात्तिले पूर्वराम् ऋषीन्द्रन्मार
पाटिनुल्लटिक्कल्ल एर्तुककण्डीजिंवर
योगंकनिरतन्भार भोगनिस्पृहद् परि
त्यागैक्रद्रविग भार आबर्तन् वासंडलों
पोट्टपुल्कल कोण्डुं शुष्कपत्रोध कोण्डु
केट्टिमेंअवयाम पाप् कुटिलुकलत्रे
एडिक्लुमर्वालय निन्नंङकिट्टिय मणि-
तंमङल महहिंङल भट्टेङुमलल्यंङल।

(भारत भूमि के पूर्वज वे श्रेष्ठ मुनिगण हैं जिन्होंने धरती की आधार शिला को देखा-समझा था। वे हमेशा योग में ही लगे रहते थे और वे भोग-सुखों में स्प्रद्धा बिल्कुल नहीं रखते थे। उनका एकमेव धन त्याग था। घास और सूखे पत्तों से बनी हुई निकम्मी झोंपड़ी ही उनका आवास स्थान थी, फिर भी उनमें से ऐसे रत्न भी मिले जो बहुमूल्य हैं और दूसरे प्रदेशों में अलभ्य हैं।)

वल्लत्तोल के इस प्रकार के प्राचीन भारत के यशोगीतों की समीति संख्या नहीं है। भारत और केरल के प्रति उठते हुये देशाभिमान के 'तापमान' का उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया है—

भारतमंत्र पेरूलेहालभिमान-
पूरितमाकणमन्तरंग
केरलमन्त्र पेरू केहालो तिलक्कणं
चोरनमुक्कु अरेम्पुकलिल्।

(भारत का नाम सुनकर मन में गर्व होना चाहिये। केरल का नाम सुनकर तो नसों में खून खौलना चाहिये।

निःसंदेह दूसरे का 'तापमान' थोड़ा ऊंचा ही है, लेकिन दोनों में संघर्ष नहीं है। इतना ही नहीं बड़े सौहार्द्र से दोनों आपस में हिलमिल गए हैं।

शेष पृष्ठ 17 पर

डॉ० हरभजन सिंहः एक सूरज का सफर

—अमरजीत सिंह

पंजाबी साहित्य में एक बहुप्रतिभाशाली कवि के रूप में प्रतिष्ठित डॉ० हरभजन सिंह का जन्म पंजाब से दूर असम के एक छोटे से कस्बे में सन् 1919 में हुआ। बचपन में ही माता-पिता के निधन के कारण वे एकाकी एवं अंतर्मुखी बालक के रूप में पले-बढ़े। कई मुश्किलों से जूझते हुये उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी में एम०ए० किया। बाद में हिन्दी में शोध-कार्य के लिये उन्होंने पी०एच०डी० की उपाधि अर्जित की तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य आरम्भ किया।

डा० हरभजन सिंह ने साहितय की काव्य और गद्य दोनों ही विधाओं में लेखन कर भारतीय साहित्य की श्री वृद्धि की है। अब तक उनकी लगभग 50 से अधिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें 17 काव्य-संग्रह, 20 आलोचनात्मक पुस्तकें, आत्मकथा और 20 देशी-विदेशी कालजयी कृतियों के अनुवाद शामिल हैं।

अपनी साहित्य-सृजना के लिए उन्हें साहित्य कला परिषद पुरस्कार, पंजाब राज्य शिरोमणि पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, कबीर सम्मान तथा सरस्वती सम्मान आदि अनेक पुरस्कारों से विभूषित किया गया है।

पंजाबी साहित्यालोचना के क्षेत्र में डा० हरभजन सिंह का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उनकी आरम्भिक दो कृतियां—**पंजाबी लिटरेचर : ए न्यू पर्सपेक्टिव** (1968) और अध्ययन ते अध्यापन (1970) अपने बीजमहत्व, अभिनव दृष्टि और विवादास्पद साहित्यिक समस्याओं के वस्तुपूरक मूल्यांकन के लिए प्रसिद्ध हैं।

मुल्ल ते मूल्लांकन (1971) उनके ऐसे निबंधों का संकलन है जिसमें कविता के विवेचन एवं मूल्यांकन से जुड़ी पंजाबी समीक्षा की गहरी आलोचना के साथ गहन आत्मान्वेषण की सलाह दी गई है।

साहति शास्तर (1973), **सन्मान ते समीख्या** (खंड 1 और 2, 1986) और **खामोशी दा जजीरा** (1988) आलोचना के क्षेत्र में उनकी विशेष उपलब्धि है।

पंजाबी साहित्य चिन्तन में वे एक नए युग के सूत्रधार कहे जा सकते हैं। उन्होंने स्वयं को किसी एक साहित्य विधा अथवा काल-खंड में ही सीमित नहीं होने दिया बल्कि पंजाबी समालोचना को चिन्तन के नये आधार प्रदान किये। आलोचना को परंपरावादी और निश्चयवादी विचारधारा की एक बंधी-बंधाई चारदीवारी से निकाल कर उसे नयी दिशाओं की तरफ आगे बढ़ाया।

पंजाबी काव्य तथा गद्य के क्षेत्र में एक प्रतिभाशाली आलोचक के रूप में उनकी छाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत तथा पंजाबी आदि भाषाओं का गहरा अध्ययन होने के कारण उनके पास एक ऐसी भाषाई निपुणता एवं दृष्टि है जिनके कारण साहित्यालोचना के विभिन्न आयामों का एक समग्र दृष्टि में समन्वय सम्भव हो सका है। अतः उन्होंने पंजाबी में जो भी लिखा उसमें एक मौलिकता तथा नवीनता के दर्शन होते हैं।

आलोचना के क्षेत्र में हरभजन सिंह पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, अरस्तु के काव्यशास्त्र तथा रूसी लेखक पलेखानोव का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अपने आत्मकथ्य में वे एक स्थान पर लिखते हैं—

> "मेरी विशेष उपलब्धि आचार्य रामन्द्र शुक्ल की रचना **चिंतामणि** का अध्ययन है।...अति गंभीर विषयों का विश्लेपण-विवेचन **करते** हुये भी वे काव्य के आनन्द-पक्ष को कभी उपेक्षित नहीं होने देते। आलोचना करते हुये भी लगता है जैसे वे काव्य-रचना का आनन्द भोग रहे हों। इस तरह की आलोचना ही मेरा आदर्श है।"

पंजाबी साहित्य को समृद्ध बनाने में उनकी एक अनुवादक के रूप में भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सोफोक्लीज का **इडीपस**, गोर्की की रचना **मेरे विश्वविद्यालय**, खलील जिब्रान का **पैगम्बर** और अरस्तु का **पोएटिक्स** उनकी सुंदर अनूदित कृतियां हैं। डा० गोपाल की बहुचर्चित पुस्तक **जवाहरलाल नेहरू** के पंजाबी अनुवाद पर आपको साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

ऋग्वेद के 22 सूक्तों का पंजाबी अनुवाद पंजाबी साहित्य को उनकी एक अमूल्य देन है।

डा० हरभजन सिंह की गद्य शैली का एक और सुंदर स्वरूप हमें उनकी **आत्मकथा चोला टाकियांवालां** में मिलता है। यह पुस्तक वास्तव में उनके जीवन की काव्य-यात्रा का ही एक विस्तृत वृत्तांत है। इस कृति को 31 अध्यायों में विभाजित किया गया है जिसमें लेखक ने अपने परिचितों तथा मित्रों का एक ऐसा मूल्यांकन प्रस्तुत किया है जिसमें एक ताजगी और आन्दोलित करने की क्षमता है।

कोठा और प्रकोठा अध्याय में असम के लामडिंग कस्बे का वर्णन किया गया है जहां उनका जन्म हुआ। वहां की कुछ धुंधली स्मृतियां उनके जीवन की अभिन्न अंग बन गई हैं। असम के जन-जीवन का संगीत तथा लय उनके काव्य-रचना का सदा प्रेरणा-स्रोत रहें। उनकी कविता में पायी जाने वाली मधुरता का शायद यही रहस्य है।

हिंदी कविता : आरम्भिक प्रभाव में लेखक ने हिन्दी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा को व्यक्त किया है। उनके अचेतन व्यक्त पंजाबियत, धर्म और हिन्दी की ब्रजशैली एक दूसरे से अटूट रूप से जुड़े, अद्वैत जैसा सच बनकर समाए हुये हैं। इस अद्वैत ने उनकी काव्य रचना को भी प्रभावित किया।

आत्मकथा के **सम्पूर्ण कविता** अध्याय में हरभजन सिंह ने अपने कविता का मूल आधार बिंब बताया है। अनुभव और बिंब के बीच जो अन्तर है वही उनका कलात्मक फासला है। उनका मानना है कि बिंब केवल तस्वीरकशी नहीं, इनके साथ मनोभावों का मेल लाजमी शर्त है। इसी खंड के चन्द सफों का उन्होंने अपने हमसफर साहित्यकारों व मित्रों को बड़े प्यार से याद किया है। कहानीकार सुजान सिंह, कवि डा॰ जसवन्त सिंह नेकी, अमर सिंह आनन्द, हरनाम के साथ बिताए क्षण उनके जीवन की अमूल्य निधि बन गये हैं।

कबीर सम्मान से पुरस्कृत होने पर डा॰ हरभजन सिंह को भोपाल में भारत भवन जाने का सुअवसर मिला। इसकी यादों को उन्होंने संजोया है **भारत भवन में पांच दिन** अध्याय में। अपने काव्य-पाठ के संबंध में उनका कहना है कि वहां कविता के लिए एक सहज माहौल था, सुहृदय श्रोता थे। कविता-पाठ अपने निश्चित समय से कहीं अधिक देर तक चलता रहा। वहां ठहरने के दौरान उन्हें भवन के प्रबंधकों से मिलने का अवसर भी मिला जिनकी कार्य-शैली उनके लिये एक सुखद अनुभव था।

इसी पुस्तक में एक स्थान पर उन्होंने अपनी इस रचना के बारे में लिखा है—

"मेरी काव्य-यात्रा खोए और पाए हुये की
मिली-जुली कहानी है। फासले खड़े करके ही
मैं जिन्दगी के निकट पहुंचा हूं। यह विरोधाभास
मेरा अटल सिद्धांत है। इसी तरह से मैंने
अपने अंदर उतरने और अपने बाहर फैलने का
जतन किया है। इसी जतन का वृतान्त यह रचना है।"

पंजाबी के अग्रणी कवियों में सर्वमान्य डा॰ हरभजन सिंह की कविताएं आदर्श और यथार्थ, तथ्य और विचार के बीच निरन्तर चल रहे तनाव एवं बेचेनी को व्यक्त करती हैं। एक दार्शनिक एवं चिन्तक होने के नाते उनके काव्य में साधन और साध्य की पवित्रता का विशुद्ध आग्रह है, एक रहस्यात्मकता है, उलझे हुये प्रतीक हैं। शब्दों में गुंथी हुई कविता और कविता में गुंथे हुये शब्द, जब परत-दर-परत खोलते हैं तो हर परत एक नया अर्थ दे जाती है।

बचपन में "पूरन" का किरदार उनके मानस-पटल पर छाया रहा। कई बार वे एकांत में चौंक उठते जैसे पूरन अचानक उनके सामने प्रकट हो गया हो—

"जोग की भभूति के नीचे दफन
इच्छा का पूत हूं मैं पूरन
चेला गोरख नारा का
ललचाता घर लौटने को
भले ही मैं जानता हूं
अब घर नहीं जा सकता"

पच्चास के दशक में उनकी दो काव्य कृतियां **लासां** (1956) तथा **तार तुपका** (1957) प्रकाशित हो चुकी थीं। **तार तुपका** विध्वंसकारी हथियारों की विभीषिका और राक्षसी अनुसंधानों के लिए वैज्ञानिकों के मोह पर लिखी गई काव्य नाटिका थी—

"ये बौने जिन्न बड़ी शक्ति के स्वामी हैं
इनमें से कुछ तो नगर हिला सकते हैं
कुछ मसल कर रख दें क्षण भर में पर्वत ऊंचे
ये सागर को चुल्लू में पी सकते हैं
ये सब मिलकर धरती रौंद सकते हैं"

लोकगीत कवि की काव्य प्रतिभा का एक शक्तिशाली पक्ष है। लोक-संस्कृति की विरासत में मिलीं लोक-धारणाओं तथा परंपराओं ने कवि की चेतन में गहरे बीजों की तरह काम किया है। लोकगीत की सादी उनके काव्य-संग्रह अधरैणी की कविताओं में स्पष्ट झलकती है।

साठ के दशक में वे अपनी विशिष्ट शैली और कथ्य के सहारे पंजाबी के शीर्ष कवियों की पंक्ति में उभरने शुरू हो गये। उनके काव्य में यथार्थ और विषम परिस्थितियों से जन्मे अपने स्वयं के अनुभवों की अभिव्यक्ति थी। इसी अभिव्यक्ति की मुखर वेदना ने उनके नये कविता-संकलन न चुप्पे न छांवे को जन्म दिया, जिसे 1969 में साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कवि का बचपन मां की छाया से वंचित रहा है इसलिए मां उसके काव्य की एक प्रमुख बिंब बन गई है—

"मां पूरी सोयी भी नहीं थी
वह मेरे लौट आने की आहट ले रही थी
समुद्र में डूबे जहाज के
उस अकेले मुसाफिर की तरह
जो अभी जिन्दा है
और डूबे जहाज के तहखानों में
अपने नन्हें बच्चों को ढूढता
उनके नामों की आवाजें देता है।"

डा॰ हरभजन सिंह की सरस्वती सम्मान से विभूषित काव्य-रचना रूख से रिपी अत्यन्त महत्वपूर्ण और दार्शनिक अनुभवों को अभिव्यक्ति देने वाली एक लम्बी कविता है। वृक्ष को ऋषि के रूप में देखना हमारी पुरानी परंपरा है। उन्होंने लिखा है—

"वृक्ष से बड़ा ऋषि भला और कौन है
धूप में पाले में अविचल समाधि
वर्षा में सूखे में भी अचल अटल
प्रवचन है तेरी महक
और फूल है तेरा प्रसार"

पूर्ववर्ती समय में तथा आधुनिक काल में रचित काव्य-नाटक और महाकाव्यों से यह एक विभिन्न प्रकार की रचना है। इसका शिल्प मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक जटिलताओं के विभिन्न अनुभवों से उपजता है। यह व्यक्तिगत चेतनता के साथ-साथ सामूहिक चेतनता से भी उपजी रचना है।

इस लम्बी कविता में वृक्ष को बिंब के रूप में स्वीकार कर कवि ने आत्मकथात्मक ढंग से अपने अन्तर्मन से बाह्य जगत की यात्रा का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है—

"अपने घर में घूमता-फिरता एक वृक्ष हूं मैं
सोता जागता भी हूं मैं
अपने भीतर से मुझे सुगंध भी आती है
फल भी लगते रहे मुझ पर"

कल के गांव व कस्बे आज सीमेंट तथा कंक्रीट के महानगरों में खो चुके हैं जिनका परम सत्य सड़क है जिसके आसपास परस्पर बिखर गये मनों की बस्ती बसी हुई ह—

"सीमेंट-कंक्रीट के बने इस शहर में
परम सत्य सड़क है
सड़क की भांति ही लोग रहते हैं यहां
सड़क की भांति ही लोग रहते हैं यहां
आर को पार से बांट कर"

मानव के अस्तित्व के प्रति गहरे रूप से जुड़े प्रकृति के रहस्यों को अपनी सूक्ष्म संवेदनशील दृष्टि से देखते हुए कवि अपनी इस रचना में मनुष्य को प्रकृति के बीच रहने तथा कर्म में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देता है।

छः खंडों तथा अन्तिका के रूप में लिखी यह काव्य कृति एक गहरी दार्शनिक रचना है। कथ्य की दृष्टि से यह भौतिक एवं आध्यत्मिक द्वंदों का चित्रण करती है।

इस काव्य-कृति की अन्तहीन अनुगूंज पाठक को बहुत कुछ सोचने-समझने के लिए मजबूर करती है।

पृष्ठ 14 का शेष

अंग्रेजी साम्राज्य में परतंत्रता सह्य है—ऐसी मितवादी विचारधारा का घोर विरोध, राजनितिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में एकता आदि का युग संदेश बल्लतोल में ही सर्वाधिक मुखरित हुआ।

'इस बात में सबसे विशाल दृष्टिकोण रखने वाले दूसरे कवि शंकर कुरूपा हैं। इसके लिए उनका यह गीत द्रष्टव्य है—
मुझे जन्म देनेवाली मांतृभूमि के प्रबुद्ध कंपन में तथा प्रक्षुब्ध अंतरिक्ष के दुर्निवार निश्वास में तुम्हारे ही मुख का नित्यनूतन सौन्दर्य देखूं और उसका पान करने के लिए खड़ा रहूं, न हटूं अपने स्थान से।

इसके बाद कवि की भावधारा बदल गई। इतना ही नहीं उन्होंने उद्‌बुद्ध देश की अभिलाषाओं को एक सशक्त भाषा भी प्रदान की।

हा! वंरु वंरु नूनमाछिन-मेन् नाटिन्टे
पानव पताक्कल कटल्लि् तत्तिप्यारू
हा! वंरु वंरु नूनमाछिन-मेन् नाटिन्टे
नावनंडियाल् लोकं श्रद्धिर्क्कु कालं वंरु

(वह दिन आयेगा जबकि मेरे देश का झंडा समुद्र के उस पार भी फहरायेगा, वह दिन आयेगा जबकि मेरे देश की जीभ हिली तो संसार ध्यानपूर्वक सुनेगा।)

यद्यपि अखंड भारत की कल्पना उन्मादकारी मधुर संकल्पों को जगाने में समर्थ हैं तो भी संकुचित धार्मिक और साम्प्रदायिक दृष्टिकोणों से स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत के नष्ट-भ्रष्ट होने के नये और पुराने भीषण दृश्य आज भी हमारे स्मृतिपथ में अग्निज्वाला की तरह सजीव हैं।

इस प्रकार यह देखने में आता है कि राष्ट्रीय एकता की उत्सुकता की ही तरह सामाजिक और धार्मिक स्वतंत्रता की उत्सुकता भी देश की एकता की कल्पना से संबद्ध है। आर्थिक स्वतंत्रता की उत्सुकता भी उन्हीं के साथ ली जा सकती है। 'नाले' (कल) आदि कविताओं में हम जाग उठने वाले भारतीयों को ही नहीं जाग उठने वाले मानवमात्र को भी देखते हैं। वे उन इने-गिने सम्पन्न व्यक्तियों के साथ नहीं जो जनसिद्ध पद को पुण्यलब्ध मानकर उन्मत्त होते हैं बल्कि उन जन लक्ष्यों के साथ हैं जो प्रादेशिक भिन्नताओं से ऊपर उठकर मेहनत करके जीवन यापन करते हैं। उन्हें पहचानें बिना भारत-चैतन्य को वास्तिविक रूप में चित्रित नहीं किया जा सकता।

भारत की एकता में मलयालम के गद्य साहित्य की देन प्रमुख रूप में अनुवाद से ही हुई है। पी॰सी॰ कुट्टिकृष्ण केशवदेव पोट्टेकाड़ आदि की कहानियां और उपन्यास भी इस प्रसंग में स्मरणीय हैं। स्व॰ काप्तन नम्पुतिरि के 'प्रिया' जैसे कुछ उपन्यासों और पोट्टेकाड़ की कुछ कहानियों ने भारत के अन्य भागों की ओर-केरलीय भावना को आकृष्ट किया है किन्तु यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान ज्यादा अधिक हुआ है बंगाली-मलयालम , हिन्दी मलयालम, आदि भा... पारस्परिक अनूदित ग्रंथों से। ब्रंकिम शरत् आदि की कहानियां और उपन्यास, द्विजेन्द्र दयाल राय के नाटक रवीन्द्र की रचनाएं आदि सीधे मलयालम में आ पहुंची। यहां के साहित्यकारों की सृजनात्मक शक्ति पर उनका विलक्षण प्रभाव पड़ा है। रवीन्द्र का प्रभाव बल्लत्तोल पर सामान्य रूप में, 'जी' पर बड़े पैमाने पर और चङम्पुषा पर छोटे पैमाने पर पड़ा है। इन सबके अतिरिक्त विवेकानन्द साहत्यि भी केरल की शिक्षित जनता को प्रबुद्ध करने और भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता बनाने में सहायक हुआ है। अर्वाचीन युग में हिन्दी से अनूदित ग्रंथों ने भी अखंड भारत की कल्पना के विकास में योगदान दिया है।

पृष्ठ 9 का शेष

7. संस्कृत 1000 ईस्वी के आसपास की, राजा भोज के समय / भारत की सभी प्रान्तीय भाषाओं का जन्मकाल यही है।
8. संस्कृत आधुनिक बीसवीं शताब्दी की / तुलनात्मक भाषा विज्ञान की जननी तथा कम्प्यूटर के लिये सर्वाधिक उपयुक्त होने के कारण वर्तमान में भी प्रासंगिक है। राजभाषा हिन्दी संस्कृत की सबसे बड़ी पुत्री है। हिन्दी में प्रचलित अधिकांश शब्द प्राकृत या अपभ्रंश के न होकर शुद्ध संस्कृत रूप के हैं जो कि भारत की सभी भाषाओं में प्रयोग किए जाते हैं।

जिस प्रकार महाकवि कालिदास के "अभिज्ञान शाकुन्तलम" नाटक में प्रयुक्त "पराकृत" को संस्कृत साहित्य ही माना जाता है, उसी प्रकार राजभाषा हिन्दी को 20 वीं शताब्दी की संस्कृत भी कहा जा सकता है। इसी प्रकार हिन्दी शब्द का अर्थ भारतीय होने से तमिलनाडु की तमिल भाषा को तमिलनाडु की हिन्दी, कर्नाटक की कन्नड़ को वहां की हिन्दी भी कहा जा सकता है। इसके साथ-साथ संत विनोबा भावे का सभी भारतीय भाषाओं को देवनागरी लिपि में लिखे जाने के सुझाव का क्रियान्वयन भी भाषायी एकता का एक अद्वितीय प्रयोग सिद्ध होगा।

3686/HA

इंदिरा गांधी की साहित्य में सबसे पहले चर्चा किसने की?

—पद्मश्री डा॰ लक्ष्मीनारायण दुबे

मालवा के ममतीले बेटे, मध्यप्रदेश के वरद पुत्र, कानपुर के शेर, उत्तर प्रदेश की महान् विभूति, प्रखर पत्रकार, स्वतंत्रता संग्राम के अपराजेय योद्धा तथा प्रखर पत्रकार, स्व॰ पं॰ बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को इंदिरा गांधी की साहित्य में सर्वप्रथम चर्चा करने का सम्पूर्ण श्रेय है। उस समय वे इंदिरा प्रियदर्शिनी थीं और बाद में वे तेजस्विनी बनीं। उनका भावी रूप 'होनहार विरवान के होत चीकनेपात' का स्थिति 'नवीन' जी ने उनके शिशु अवस्था में ही निरख-परख ली थी। 'नवीन' जी 1920 से ही नेहरू-परिवार के सदस्य तथा अत्यंत घनिष्ठ बन गए थे। वे मोतीलाल नेहरू तथा स्वरूपरानी देवी के अत्यंत स्नेह भाजन थे। वे कानपुर से अक्सर प्रयाग जाते थे जहां उनका मुख्यालय आनंद भवन मे रहता था। उनको राष्ट्रीय आंदोलन में पहली बार प्रयाग में ही गिरफ्तार किया गया था जो कि सन् 1921 की बात है। इसलिए उन्होंने इंदिरा गांधी को उनके बचपन से ही अपना प्यार-दुलार दिया था।

'नवीन' जी के लिए इंदिरा गांधी 'इन्दु बेटी' थीं और इंदिरा गांधी के लिए बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' 'चाचाजी'। इंदिरा गांधी का जन्म 19 नवम्बर, 1917 को इलाहाबाद में हुआ था।

सन् 1921 में इंदिरा मात्र चार वर्ष की थी। 'नवीन' जी ने उनकी इसी आयु का वर्णन सर्वप्रथम देश में और समस्त भारतीय भाषाओं में सबसे पहली बार किया है—

जिस वक्त जवाहरलाल का दूसरा मुकदमा हो रहा था, उस वक्त. कचहरी में उनकी एकमात्र पुत्री निरंजाव्या इंदिरा भी बैठी थी। वह उन् दिनों बहुत छोटी थी। उसने निहायत भोलेपन से अपनी मां से पूछा—तो अब यह सिनेमा का तमाशा कब शुरू होगा? वास्तव में कानून का दिन-दहाड़े खून था। वह तमाशा था। मालूम नहीं, पगली इंदु बेटी को अपनी उस वक्त की वह निरी मूर्खतापूर्ण भोली-सी बात का स्मरण है या नहीं। अगर वह उसे भूल गयी हो तो मैं उसे बताये देता हूं कि उस वक्त उसने पिता के मुकदमें की कार्रवाई का जितना सुन्दर और सच्चा नामकरण किया था, राजनैतिक मुकदमों का उतना सच्चा नामकरण बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी अभी तक नहीं कर पाए हैं।

दूसरा सन्दर्भ, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने जवाहरलाल नेहरू के पंजाब में लाहौर के कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन के अध्यक्ष बनने का संस्मरण लिखते समय का वर्णन किया है जो कि दिसम्बर, 1929 का था। उस समय इंदिरा प्रियदर्शिनी की आयु बारह वर्ष की थी। 'नवीन' जी लिखते हैं—

उस समय की बात है—लाहौर की। पंजाब ने जवाहरलाल का बड़ा शानदार स्वागत किया था। घोड़े पर सवार जवाहरलाल जिस समय लाहौर की सड़कों से गुजरे थे तो लोगों ने अपनी आंखें बिछा दी थीं। प्रसिद्ध धनीमानी एवम् देशभक्त व्यापारी लाला धनीरामजी भल्ले की शानदार दुकान लाहौर के मुख्य बाजार में बड़े मौके से है। उन्हीं की दुकान पर पं॰ मोतीलाल नेहरू, माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, (उस समय) कुमारी कृष्णा नेहरू, श्रीमती विजयलक्ष्मी और नूरेचश्मी बेटी इंदिरा—ये सब जुलूस की शान देखने और अपने जवाहर की शोभा निरखने के लिए बैठे थे। पं॰ मोतीलालजी ने उस समय अपने जीवन की एक आशा को फलवती होते देखा था। मां ने अपने प्यारे पुत्र को राष्ट्र के ऊंचे से ऊंचे सिंहासन पर बैठे देखा था। कुमुदिनी कमला ने तो अपने जीवन धन चन्द्र को पूर्ण कला में विकसित देखा था। जब जुलूस खत्म होने पर घर की सब स्त्रियां नीचे उतरी तब मैंने इंदु को पकड़ लिया और उससे पूछा—बेटी, तुमने पापा का जुलूस देखा? उसने विस्मय से कहा—हां, देखा। मैंने फिर उससे पूछा—एक बार इसी तरह, इस पंजाब में अमृतसर के शहर में तुम्हारे बाबा का भी जुलूस निकल चुका है, उसकी भी बड़ी शान थी, तुम्हें याद है: कमला भाभी बोल उठी वाह, उसे क्या याद होगा? उस वक्त यह बहुत छोटी थी। ठीक है, वह बात सन् 1917 की थी।

'नवीन' जी ने ये संस्मरण कानपुर के 'प्रताप' के 'कांग्रेस विशेषांक' (अप्रैल, 1945) में लिखे थे और मेरे द्वारा सम्पादित-संकलित-बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' गद्य रचनावली (तृतीय खण्ड, मेरे समकालीन) में संग्रहीत।

'नवीन' जी ने इंदिरा गांधी की बाल्यावस्था में ही उनके भावी प्रखर राष्ट्र निर्माता, राजनीतिज्ञ एवम् अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिला का स्वरूप आंक लिया था। ये सब दुर्लभ तथ्य हैं।

इंदिरा गांधी की माता का देहांत 1936 में हुआ था। उस समय इंदिरा 19 वर्ष की थी। 'नवीन' जी ने कमला नेहरू को अपना सश्रद्ध श्रद्धांजलि अर्पित करते लिखा था:

तुम अपना प्रतिबिम्ब हमारे बीच, बेटी इंदिरा के रूप में छोड़ गई हो। जवाहरलाल के और तुम्हारे हृदय-मंथन की नवनीत स्वरूपा प्रियदर्शिनी इंदु में हमें तुम्हारी अन्नपूर्णारूपा, तुम्हारी कोमलता, तुम्हारी अव्यभिचारिणी भक्ति और तुम्हारा ज्वलन्त आदर्श-विश्वास देखने को मिले—यही हमारी प्रार्थना है।

यदि इलाहाबाद का आनंद भवन इंदिराजी का जन्मस्थान था तो वह 'नवीन' जी की राष्ट्रभक्ति का उन्नायक। 'नवीन' जी की इंदु बिटिया में प्रियदर्शिनी से विश्वदर्शिनी का प्रतिभा-स्फुरण देखने का सर्वप्रथम श्रेय उनके प्रिय एवम् आदरणीय चाचा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897-1960) को है। 'नवीन' जी इंदिराजी से आयु में लगभग दो दशक जेठे थे और उनके पिता के परम मित्र, साथी एवम् सहयोगी थे।

चाचा 'नवीन' अपनी इंदु बेटी की राष्ट्रीय आंदोलन की सक्रिय सहभागिता से पुलकित हुआ करते थे। इंदिरा गांधी को सितम्बर, 1942 में जेल की सजा हुई थी। 'नवीन' जी का नेहरू परिवार तथा आनंद भवन, प्रयाग से सतत् अनवरत, जीवित एवम् घनिष्ठ संबंध-सम्पर्क बना रहा—इसलिए वे अपनी 'इन्दु बिटिया' की विकास यात्रा को देखकर प्रमुदित होते रहे।

'नवीन' जी संविधान सभा, लोक सभा तथा राज्य सभा से जुड़े रहे—इसलिए दिल्ली में भी उनका इंदिरा गांधी से निर्बाध सम्पर्क बना रहा।

इंदिरा गांधी का फिरोज गांधी से 26 मार्च, 1942 को विवाह हुआ। उक्त विवाह में 'नवीन' जी भी सम्मिलित हुए थे। उन्होंने सितम्बर, 1951 में अपनी तृतीय काव्यकृति 'अपलक' को इंदिरा गांधी को समर्पित करते हुए, समर्पण में यह लिखा:

जिस दिन तुम्हारा विवाह हुआ था, उस दिन-अनेक जनों ने तुम्हें भेंट-उपहार समर्पित किए थे। मैं निष्कपट मन मसोस कर रहा गया। तुम्हें क्या देता? उसी दिन सोचा था- अपनी कोई कृति दूंगा। इतने दिन बीत गए। आज यह अवसर आया है। यह 'अपलक' नामक मेरा गीत-संग्रह स्वीकार करो, बेटी।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के फिरोज गांधी के साथ भी घनिष्ठ संबंध रहे क्योंकि वे दोनों संसद में रहे।

'नवीन' जी का राष्ट्रीय आंदोलन का युग कानपुर में व्यतीत हुआ, परन्तु स्वतंत्र भारत का काल उनको दिल्ली ले गया। उन्होंने इंदिरा गांधी के दोनों पुत्रों राजीव गांधी तथा संजय गांधी का बचपन भी, उनकी मां के समान, अपनी आंखों से देखा और वे उनको शुभाशीष देते रहे। इन्दौर की मासिक 'वीणा' के 'नवीन'—स्मृति अंक (अगस्त-सितम्बर, 1960) के सम्पादकीय में एक घटना का हृदयस्पर्शी उल्लेख है। सन् 1954 की आठ दिसम्बर की रात। 5, विण्डसर प्लेस, नयी दिल्ली। 'नवीन' जी का जन्म दिवस तथा संसद सदस्य (लोक सभा) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का दिल्ली का आवास-स्थल। उनके कतिपय निकट के मित्र भोजन पर आये हुए थे: सर्वश्री अजीत प्रसाद जैन, केशवदेव मालवीय, महावीर त्यागी, फिरोज गांधी, इंदिरा गांधी और अन्य कुछ। तब तक इंदिरा गांधी कांग्रेस में एक महत्वपूर्ण तथा प्रभावी व्यक्तित्व के रूप में उभर चुकी थी। राज्य पुनर्गठन आयोग का प्रतिवेदन निकल चुका था। नये मध्य प्रदेश का निर्माण स्वरूप ग्रहण कर रहा था। यों ही सहज भाव से अजित प्रसाद जैन ने पूछा—बड़े भाई, आप भी तो मध्य प्रदेश के हैं? बताइए, इस नए मध्य प्रदेश का मुख्य मंत्री कौन उपयुक्त हो सकता है? 'नवीन' जी तपाक से बोले—एक तो पं० बालकृष्ण शर्मा या फिर द्वारकाप्रसाद मिश्र परंतु बालकृष्ण शर्मा को तो जवाहर भाई मूर्ख समझते हैं, तब केवल जो आदमी बचता है: वह है भाई द्वारका। लेकिन उसे लोग बनने नहीं देंगे। इस पर इंदिरा गांधी बोलीं—चाचा जी, यह तो आप गलत कहते हैं, पापा ऐसा नहीं सोचते, आपके बारे में। इस पर ठहाका मार 'नवीन' जी हंसे और कहने लगे—इन्दु बेटी! तुम क्या जानो।

'नवीन' जी के निधन-वर्ष (1960) में, उन्होंने अपनी प्रिय बिटिया इंदु को अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में अपनी रुग्ण आंखों से देख लिया था और उनको आशीर्वाद देकर, उनके चाचा 'नवीन' इस दुनिया से विदा ले गए।

स्व० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पर शोधकार्य करके (1960-63) जब मैं उनके गद्य साहित्य की खोज, संकलन, सम्पादन एवम् मूल्यांकन के सन्दर्भ में, अखिल भारत की यात्रा में था, तब नेहरू जी के देहांत के पश्चात्, 1964 में, इलाहाबाद में, पं० उमाशंकर दीक्षित ने मेरी भेंट आनंद भवन में, इंदिरा गांधी तथा विजय लक्ष्मी पण्डित से करायी थी। विजयलक्ष्मी पण्डित तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का नाम सुनकर ही भाव-विभोर हो गयीं और अत्यंत प्रसन्न हुईं। उन्होंने मुझे 'नवीन' जी के अनेक दुर्लभ तथा मार्मिक संस्मरण सुनाए। वे 'नवीन' जी को नेहरू-परिवार का ही सदस्य मानती थीं। मैंने इंदिराजी की बुआ विजयलक्ष्मी पण्डित के एक प्रसंग की चर्चा अपने शोध ग्रन्थ (बालकृष्ण शर्मा 'नवीन': व्यक्ति एवम् काव्य) में की है। एक प्रीतिभोज में देश के बड़े-बड़े नेता सम्मिलित थे। विजयलक्ष्मीजी अन्य सहयोगियों सहित खिला-पिला रही थी। 'नवीन' जी अपने साथियों के बीच हंसी-मजाक के साथ कहकहे लगा रहे थे। इसी बीच विजयलक्ष्मी जी उधर आ निकलीं। पता नहीं, उन्होंने क्या समझा, रुकते हुए बोल उठीं—'भाई साहब के बाल सफेद हैं, किन्तु मन रंगीन।' 'नवीन' जी ने छूटते ही कहा—भाई का ही नहीं बहन का भी।—इस पर सभी समवेत स्वर से देर तक हंसते रहे। 'नवीन' जी की एक कविता 'भाई रणजीत सीतारामपण्डित के महाप्रयाण' पर उनकी 'अपलक' काव्यकृति में है।'

विजयलक्ष्मी पण्डित ने 'नवीन' जी का स्वभाव अंग्रेजों का बताया था जो दूसरों पर नहीं अपितु स्वयं पर हंसता है, खुद की आलोचना करता है। पं० उमाशंकर दीक्षित तो 'नवीन' जी के साथी, मित्र और सहपाठी ही नहीं थे अपितु उनको 'नवीन' जी ने अपनी संक्षिप्त आत्मकथा में अपना प्रतिरूप ही माना है और उनकी बड़ी सराहना की है।

आज श्रीमती इंदिरा गांधी का स्मरण प्रधान मंत्री के रूप में किया जाता है और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का क्रांतिकारी साहित्यकार के स्वरूप में।

*** हिन्दी द्वारा ही सारे देश को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।**

—स्वामी दयानंद

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

—प्रो॰ सी॰ पी॰ सिंह 'अनिल'

जीवन-परिचय:

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म, श्रावण शुक्ल 2 चंद्रवार सं॰ 1943 को चिरगांव, जिला झांसी में हुआ था। उनके पिता सेठ रामचरण 'कनकलता' उपनाम से कविता करते थे। राम के विष्णुत्व में उनका अटल विश्वास था। उनके यहां भक्त और कवि बराबर आते-जाते रहते थे। ऐसे सात्विक वातावरण में जन्म लेकर गुप्तजी ने अपने वंश का ही नहीं, अपनी जन्मभूमि का भी मस्तक उन्नत किया।

गुप्तजी आरम्भ में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के लिए झांसी गये, लेकिन वहाँ उनका मन नहीं लगा। इसलिए घर पर ही उनकी शिक्षा का प्रबन्ध किया गया। धीरे-धीरे उनकी प्रवृत्ति काव्य की ओर झुकी और वे टूटी-फूटी रचनाएँ करने लगे। उस समय वे जो रचनाएँ किया करते थे, वे प्रायः कलकत्ते से प्रकाशित एक जातीय पत्र में प्रकाशित होती थी, लेकिन आचार्य द्विवेदीजी के सम्पर्क में आने पर उनकी रचनाएँ 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगीं। द्विवेदीजी ने गुप्तजी की काव्य-प्रतिभा से प्रभावित होकर रचनाओं की भाषा तथा भावों का परिशोधन किया। इससे गुप्तजी का उत्साह बढ़ गया। गुप्तजी द्विवेदीजी को अपना काव्य-गुरू मानते थे और उनसे बराबर शिक्षा लिया करते थे। अपने ग्रामवासी मुंशी अजमेरी जी से भी उन्हें अधिक प्रेरणा मिली थी। गुप्तजी हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्र-कवि थे। भारतीय आन्दोलन के साथ-साथ उनकी कवित्व-शक्ति का विकास हुआ। भक्ति के क्षेत्र में वे भगवान् राम से और राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गाँधी से अधिक प्रभावित थे। स्वभाव से वे अत्यंत सरल और मृदु भाषी थे। वे भारतीय संसद के सदस्य भी थे। सं॰ 2021 में उनका शरीरान्त हुआ।

गुप्तजी की रचनाएँ:

गुप्तजी का रचना-काल सं॰ 1964 से आरम्भ होता है। उस समय से अपने जीवन-काल तक उन्होंने जिन काव्य-ग्रन्थों की रचना की उनकी सूची इस प्रकार है:

(1) महाकाव्य: साकेत और जयभारत।

(2) खण्डकाव्य: रंग में भंग, जयद्रथ-वध, तिलोत्तमा, चन्द्रहास, शकुन्तला, वन-वैभव, बक-संहार, सैरन्ध्री, पंचवटी, विकट भट, सिद्धराज, नहुष, हिडिम्बा, विष्णु-प्रिया, त्रिपथगा और रत्नावली।

(3) मुक्तककाव्य: पद्य: प्रबन्ध, भारत, वैतालिक, स्वदेश-संगीत, झंकार मंगल-घट, विश्व-वेदना और उच्छ्वास।

(4) उद्बोधनात्मक काव्य: किसान, पत्नावली, हिन्दू शक्ति, गुरूकुल, गुरू तेगबहादुर द्वापर, कुणालगीत, काबा और कर्बला, अजित, अर्जन और विसर्जन, अंजलि और अर्घ्य, पृथिवी-पुत्र, प्रदक्षिणा, युद्ध, भूमि-भाग और राजा-प्रजा।

(5) चम्पू: यशोधरा।

(6) रूपक: अनघ।

(7) नाट्य गीति: लीला।

(8) अनूदित काव्य अविरहिणी ब्रजांगना, पलासी का युद्ध, गीतामृत, मेघनाद-वध, वीरांगना, स्वप्नवासवदत्ता, और उमररवैयाम की रूबाइयाँ।

गुप्तजी की काव्य-साधना:

खड़ीबोली के कवियों में गुप्तजी का प्रमुख स्थान है। उनकी सम्पूर्ण रचनाएँ दो वर्गों में विभाजित की जा सकती हैं: (1) प्रबन्ध-काव्य और (2) मुक्तक काव्य। प्रबन्ध-काव्य में उनके उद्बोधनात्मक काव्य, महाकाव्य, खंड-काव्य और आत्म-कथात्मक काव्य आते हैं। इन काव्यों में भारत के गौरवमय अतीत का चित्रण किया गया है। गौरवमय अतीत के चित्रण के लिए गुप्तजी ने (1) रामायण, (2) महाभारत (3) पुराण, (4) महात्मा बुद्ध के जीवन और (5) ऐतिहासिक कथाओं का संचयन किया है और उन्हें आधुनिक वातावरण के अनुरूप चित्रित किया है। इसलिए उनके प्रबन्ध काव्यों में विषय की ही नहीं, भावों की भी विविधता है।

गुप्तजी के उद्बोधनात्मक काव्य में 'भारत-भारती', 'किसान', 'हिन्दु', 'शक्ति' आदि का प्रमुख स्थान है। 'भारत-भारती' उनकी प्रथम देश-प्रेम-प्रधान रचना है। इसमें ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर भारतीय जनता को नवजागरण का सन्देश दिया गया है। इसके साथ ही अतीत का गौरव मध्यकाल की भेद-भावपूर्ण नीति और अंग्रेजी शासन-कालीन विपन्नावस्था का वर्णन कर हमारे सामने यह समस्या रखी गयी है:

हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी।

'भारत-भारती' में देश-प्रेम के प्रत्येक पक्ष पर विचार किया गया है। उसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों के उद्धार की बात एक साथ सोची गयी है। 'हिन्दु' में हिन्दुओं के सामाजिक पक्ष पर विचार किया गया है। बाल-विवाह, अछूतोद्धार आदि अन्य कुरीतियों से हिन्दू-समाज को जो क्षति

पहुँचती है उसका चित्रण कर गुप्तजी ने इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, सिक्ख, बौद्ध आदि सब को संगठित होकर कर्तव्यपालन के लिए प्रोत्साहित किया है। मुसलमानों में सामाजिक चेतना जागृत करने के लिए 'काबा और कर्बला' की रचना की गयी है। इस प्रकार गुप्तजी हिन्दू और मुसलमान दोनों के सामाजिक उद्धार की बात एक साथ सोचते हैं। 'अर्जन और विसर्जन' में उन्होंने ईसाई-संस्कृति का भी उद्‌घाटन किया है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रति गुप्तजी की उदारता गाँधीवाद से प्रभावित है।

गुप्तजी के राम-काव्य में 'पंचवटी' और 'साकेत' का प्रमुख स्थान है। 'पंचवटी' खण्ड काव्य है और 'साकेत महाकाव्य। उन दोनों काव्य-ग्रन्थों में गुप्त जी ने नारी के दो रूपों का चित्रण किया है। नारी का एक रूप शूर्पणखा है और दूसरा उर्मिला। 'पंचवटी' की शूर्पणखा में भौतिकता है। वह काम-पीड़ित और निर्लज्ज है। इसलिए गुप्तजी ने राम के मुख से कहलाया है:

'हा नारी! किस भ्रम में है तू प्रेम नहीं,
यह तो है मोह,
आत्मा का विश्वास नहीं यह, है तेरे मन का विद्रोह।
विष से भरी वासना है यह, सुधापूर्ण वह प्रीति नहीं,
रीति नहीं, अनरीति और यह अति अनीति है,
नीति नहीं।।'

'साकेत गुप्तजी की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसकी कथा लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की जीवन-कथा है। राम के साथ लक्ष्मण के वन चले जाने पर उर्मिला को 14 वर्ष तक जो वियोग-वेदना सहनी पड़ी उसी का इसमें चित्रण किया गया है। इसके साथ 14 वर्ष के भीतर अयोध्या (साकेत) और वनवास में घटने वाली घटनाओं को भी इसमें स्थान दिया गया है। इन्हीं घटनाओं के परिवेश में रखकर गुप्तजी ने उर्मिला का चरित्रांकन किया है। उर्मिला की विरह-वेदना के चित्रण में उन्होंने उर्मिला के दोहरे व्यक्तित्व का समावेश किया है। उर्मिला का एक व्यक्तित्व तो वह है जब वह पति-वियोग में तड़पती और हाहाकार करती है। उस समय विरह-वेदना अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। लेकिन फिर भी विरह के प्रति उसका मोह बना हुआ है। वह कहती है:

'दुख भी मुझसे विमुख हो करे न कहो प्रयाण,
आज उन्हीं में तो तनिक अटके हैं ये प्राण।'

उर्मिला की इस विरह-वेदना में गुप्तजी ने भौतिक और आध्यात्मिक दोनो पक्षों का अत्यन्त सुन्दर समन्वय किया है। इसलिए वह अत्यन्त संयत और मर्यादा-पूर्ण है। उर्मिला का दूसरा व्यक्तित्व इन पक्तियों में देखिए:

'यही आता है इस मन में,
छोड़, धाम-धन जाकर मैं भी उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ रहूँ निकट भी दूर,
व्यथा रहे, पर साथ-साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में, यहीं आता है इस मन में।'

उर्मिला का यह रूप एक कर्तव्य-परायण सती-साध्वी का रूप है। गुप्तजी ने इस रूप को झलकाने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। उर्मिला की भाँति कैकेयी का चरित्र भी उन्होंने स्पष्ट रूप से मुखरित किया है। राम के प्रति उनका वही दृष्टिकोण है जो गोस्वामीजी का है, लेकिन उन्होंने उस प्रधानता नहीं दी है। उन्होंने राम को मानवता की भूमि पर चित्रित किया है। यही कारण है कि हमें उनके इस काव्य में गाँधीवाद के व्यावहारिक पक्ष की सर्वत्र गूँज सुनायी देती है।

गुप्तजी ने महाभारत की कथाओं के आधार पर जिन काव्यों की रचना की है, उन्हें हम कृष्ण-काव्य के अन्तर्गत स्थान दे सकते हैं। 'जयद्रथ-वध,' 'बक-संहार,' 'वन-वैभव,' 'जयभारत,' 'त्रिपथगा', 'द्वापर', 'सैरन्ध्री' आदि इसी प्रकार के काव्य हैं। इन सब में 'द्वापर' का प्रमुख स्थान है। यह आत्मकथात्मक काव्य है। इसमें नन्द, यशोदा, राधा, बलराम, कुब्जा, सुदामा, उद्धव, सब अपनी-अपनी बातें इस प्रकार कहते हैं कि प्रारम्भिक जीवन की एक-एक घटना छाया-चित्रों की भाँति सजग हो उठती है। इस प्रकार कथा में आरम्भ से अंत तक एक सूत्रता स्थापित हो जाती है। इसमें भी नारी-भावना को प्रधानता दी गयी है। नारी-भावना के विविध रूपों का जैसा सुन्दर चित्रण इस काव्य में हुआ है, वैसा हिन्दी के किसी काव्य में देखने को नहीं मिलता।

पौराणिक कथाओं के आधार पर लिखे हुए काव्यों में 'चन्द्रहास', 'तिलोत्तमा'', 'नहुष' और 'शकुन्तला' प्रमुख हैं। इनमें से प्रथम दो रूपक हैं और अन्तिम दो खण्ड-काव्य हैं। इन खण्ड-काव्यों का हिन्दी-जगत् में विशेष आदर है। इनमें भी नारी-भावनाओं को खुलकर स्थान दिया गया है। दुष्यन्त के ध्यान में डूबी शकुन्तला को इन पंक्तियों में देखिए :

'नाना दृश्य नये समक्ष उसके थे चित्तहारी वहीं
आते थे पर लक्ष्य में न उसके वे एक कोई कहीं।
वे सर्वत्र विशाल नेत्र उसके दुष्यन्त को देखते,
पाण्डु-ग्रस्त समस्त वस्तु जग में ज्यो पीत हो लेखते।

बौद्ध-कालीन धारा में गुप्तजी के दो काव्य 'अनघ' और 'यशोधरा' प्रसिद्ध हैं। 'अनघ' पद्य-बद्ध रूपक है। 'यशोधरा' प्रबन्ध-काव्य है और 'चम्पू' शैली में लिखा गया है। 'साकेत के पश्चात् गुप्तजी का यही काव्य अधिक लोकप्रिय है। इसमें भगवान बुद्ध और यशोधरा की कथा है। यशोधरा के मार्मिक भावों की व्यंजना गीतों में की गयी है और कहीं-कहीं कथा-सूत्र गद्य में है। इसमें भी नारी-भावना को ही प्रधानता मिली है। नारी के दो प्रमुख रूप हैं: (1) पत्नी और (2) माता। इन दोनों रूपों के विकास में ही नारी-जीवन को पूर्णता प्राप्त होती है। 'यशोधरा' में इन दोनों रूपों के अनेक सफल चित्र उतारे गये हैं। यशोधरा के पत्नीत्व का गर्व इन पंक्तियों में देखिए:

'चाहे तुम सम्बन्ध न मानो।
स्वामी! किन्तु न टूटेंगे ये, तुम कितना ही तानो!
पहले हो तुम यशोधरा के, पीछे होंगे किसी परा के,
मिथ्या भय हैं जन्म-जरा के, इन्हें न उनमें सानो!
यशोधरा का मातृत्व इन पंक्तियों में देखिए :
'ठहर, बाल गोपाल कन्हैया।
राहूल, राजा भैया!
कैसे धाऊँ पाऊँ तुझको, हार गई मैं दैया,
सद्य दूध प्रस्तुत है बेटा, दुग्ध-फेन-सी शैया।'

'गुरूकुल', 'पत्रावली', 'रंग में भंग' आदि गुप्तजी के ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित काव्य हैं। 'गुरूकुल में सिक्ख-गुरूओं का चरित्र-चित्रण किया गया है। 'पत्रावली' में पृथ्वीराज, महाराणा प्रतापसिंह, औरंगजेब, शिवाजी आदि के पद्य-बद्ध पत्र हैं। 'रंग-में-भंग' गुप्तजी की

प्रारम्भिक रचना हैं। इसमें राजपूत-युग की कथा है।

गुप्तजी के काव्य की जिन काव्य-प्रवृत्तियों का, अब तक, उल्लेख किया गया है उनमें दो भावों की प्रधानता मिलती है: (1) सामाजिक भावना और (2) देश-प्रेम की भावना। सामाजिक भावना के अन्तर्गत गुप्तजी ने नारी-भावना को प्रधानता दी है और अतीत की विभिन्न राजनीतिक परिस्थितियों के माध्यम से देश-प्रेम की भावना को झलकाया है। 'मेरी यह दिव्य धरा आज पराधीन है' की गूँज उनके काव्य में सर्वत्र सुनायी देती है। भारत की पराधीनता के युग में उनकी यह चीत्कार किसी जोशीले नेता के भाषण से कम महत्व की नहीं थी। इसलिए हम उन्हें अपना राष्ट्र-कवि मानते हैं। अपने देश का प्राचीन गौरव उन्होंने सौ-सौ तरह से बखाना है।

गुप्तजी की सामाजिक और राष्ट्रीय भावनाओं पर गाँधीवाद का यथेष्ट प्रभाव है। गाँधीवाद के दो पक्ष हैं: (1) दार्शनिक और (2) व्यावहारिक। गुप्तजी ने गाँधीवाद के व्यावहारिक पक्ष को ही अपनाया है:

(१) 'आकृति वर्ण और बहु भेष,
ये सब निज वैचित्र्य, विशेष,
डालो अन्तर्दृष्टि निमेष, देखो अहा!
एक ही प्राण,
विश्व-बन्धुता ने ही प्राण।'

(२) 'उत्पीड़न अन्याय कहीं हो,
दृढ़ता सहित विरोध करो।'
किन्तु विरोधी पर भी अपने करुणा करो,
न क्रोध करो।'

(३) 'न तन सेवा, न मन-सेवा,
सदा सच्ची भुवन-सेवा।

'झंकार' में गुप्तजी ने अपने मुक्तकों को स्थान दिया है। इन मुक्तकों में वे अपनी अध्यात्मवादी भावनाओं के अत्यन्त सफल चित्रकार हैं। नारी भावना, आर्य संस्कृति-प्रधान भावना, विभिन्न सम्प्रदायों की उदार भावना-इन सब प्रकार की भावनाओं के सम्यक् समावेश से उनका काव्य सजग हो उठा है।

भाव-व्यंजना के साथ-साथ गुप्तजी ने वस्तु व्यंजना में भी अपना काव्य-कौशल दिखाया है। रूप, मुद्राओं, मानवीय परिस्थितियों और कार्य-व्यापारों के चित्रण में उनकी वृत्ति खूब रमी है। 'पंचवटी' में शूर्पणखा का यह चित्र देखिए:

'चकाचौंध-सी लगी देखकर प्रखर ज्योति की वह ज्वाला,
निस्संकोच खड़ी थी सम्मुख एक हास्य बदनी बा—
रत्नाभरण भरे अंगो में ऐसे सुन्दर लगते थे,
ज्यों प्रफुल्ल बल्ली पर सौ-सौ जुगनू जगमग करते थे।'

गुप्तजी ने प्रकृति के भी सुन्दर चित्र अंकित किये हैं। सूर्योदय का यह संवेदनात्मक चित्र अत्यन्त सुन्दर है। उर्मिला कहती है:

'सखि! नील नभस्सर से उतरा यह हंस अहा! तरता-तरता
अब तारक मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता-चरता।'

इसी प्रकार पंचवटी' की 'चाँदनी रात' का यह दृश्य लीजिए:

चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही थी जल-थल में
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई थी अवनि और अम्बर तल में।।
पुलक प्रकट करती भी धरणी हरित तृणों की नोकों से।
मानो तरु भी झूम रहे थे मन्द पवन के झोकों से।'

गुप्तजी ने प्रकृति-चित्रण की दो ही शैलियाँ अपनायी हैं। उन्होंने प्रकृति का चित्रण या तो संवेदनात्मक रूप में किया है या फिर भूमिका के रूप में। वर्णनात्मक काव्य में इन दोनों शैलियों का विशेष महत्व है।

अपने काव्य में गुप्तजी ने तीन शैलियों को स्थान दिया है: (1) प्रबन्ध-शैली, (2) गीत-शैली (3) रूपक शैली। इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

(1) प्रबन्ध-शैली: गुप्तजी का अधिकांश काव्य इसी शैली में है। रंग में भंग', जयद्रथ-वध', साकेत', 'जयभारत', पंचवटी' आदि इसी शैली में लिखे गये हैं। यह शैली तीन प्रकार की है: (1) खण्ड-काव्य, (2) महाकाव्य और (3) उद्‌बोधनात्मक-काव्य। इन तीनों प्रकार के काव्यों में विषय का निर्वाह दो शैलियों में किया गया है: (1) वर्णनात्मक और (2) भावनात्मक। गुप्तजी विस्तार-प्रिय कवि हैं। उनमें न तो भावों का संकोच है और न विषय का। विस्तार में जाने के कारण उनकी ये शैलियाँ कहीं-कहीं आवश्यकता से अधिक उपदेशात्मक हो गयी हैं।

(2) रुपक-शैली — इस शैली में गुप्तजी ने नाटकीय प्रणाली का अनुसरण किया है। कथोपकथन पद्य में है, शेष गद्य में। 'अनघ' इसका उदाहरण है। 'तिलोत्तमा' तथा 'चन्द्रहास' गीति-नाट्य शैली में लिखे गये हैं। 'यशोधरा' चम्पू-शैली में लिखा गया है।

(3) गीति-काव्य शैली—गुप्तजी ने आधुनिक और प्राचीन शैलियों के ढंग पर गीत भी लिखे हैं। 'झंकार' मंगल-घट', स्वदेश-संगीत' आदि के गीतों में भावनाएँ तो संगीतमय हो उठी हैं, पर स्वाभाविक अनुभूति चित्रण की कमी है। उनके गीतों में भावों का स्वाभाविक प्रवाह है, पर विरह-गीतों और राष्ट्र-गीतों को छोड़कर शेष में तन्मयता का अभाव-सा है। अनुभूतियों में भी गहराई नहीं है।

गुप्तजी ने अपने काव्य में हिन्दी-छन्दों को ही मुख्यतः अपनाया है। हिन्दी-छन्दों में हरिगीतिका छन्द उन्हें अधिक प्रिय हैं। यह वर्णनात्मक कविता के लिए उपयुक्त होता है। इसी प्रकार अपनी भावात्मक कविता के लिए उन्होंने अपने ढंग के सुन्दर गीत लिखे हैं। उनके कोई-कोई गीत लम्बे अवश्य हैं, पर वे बड़े सुन्दर हैं। उनमें वह भावों की गहराई तक उतरने में सफल हो सके हैं।

गुप्ताजी ने अपने काव्य में श्रृंगार, करुणा, शांत और वीर रसों को प्रधानता दी है। भावों के प्रसरण और उनमें चमत्कार की प्रतिष्ठा करने के लिए उन्होंने अलंकारों का भी प्रयोग किया है। अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा, भ्रांति, श्लेष, रूपकातिशयोक्ति आदि के सुन्दर उदाहरण उनकी रचनाओं से एकत्र किये जा सकते हैं। शब्द की तीनों शक्तियों अभिधा, लक्षणा, और व्यंजना से भी उन्होंने काम लिया है। 'साकेत' में इनके उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं। इस प्रकार उनकी शैली कला की दृष्टि से सम्पन्न है।

शेष पृष्ठ 36 पर

राष्ट्रभाषा हिन्दी: अंतरराष्ट्रीय संदर्भ

हिमांशु जोशी

विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा कही जाती है—हिन्दी। पिछली जन-गणना के अनुसार भारत में हिन्दी-भाषियों की कुल संख्या लगभग 46 करोड़ थी, जिसमें लगभग 19 करोड़ वे लोग थे, जिनकी मातृभाषा हिन्दी न होते हुए भी, उसे उसी तरह व्यवहार में लाने की क्षमता रखते हैं, जैसे मूल हिन्दी भाषी।

एक करोड़ बीस लाख भारतीय मूल के लोग विश्व के 132 देशों में बिखरे हुए हैं। जिनमें आधे से अधिक हिन्दी से परिचित ही नहीं, उसे व्यवहार में भी लाते हैं।

इस दृष्टि से विवेचन करें तो आज संसार में हिन्दी जानने वाले अंग्रेजी से कहीं अधिक हैं। यदि किंचित और गहराई से विश्लेषण करें तो और भी विस्मयकारी तथ्य उजागर होंगे। जिस चीनी भाषा को संसार में सब से बड़ी भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है, वह है— कोई भाषा। कहा जाता है, राष्ट्रभाषा होते हुए भी इसके जानने वाले सारे चीन में उपलब्ध नहीं हैं। जिस क्षेत्र-विशेष की यह भाषा है, उसकी आबादी बीस करोड़ से अधिक नहीं है। चूंकि राष्ट्र संघ में इसे मान्यता मिली है, चीन के राजकाज की भी भाषा यही है, इसलिए इसके जानने वालों की संख्या निश्चित ही अधिक होगी, परन्तु विशेषज्ञों का मानना है, कि कुल मिला कर भी यह हिन्दी से बहुत अधिक नहीं होगी।

जिस तरह हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होते हुए भी केवल आधे भारतीय ही हिन्दी जानते हैं, वही स्थिति चीन में चीनी की है और इंग्लैंड में अंग्रेजी की।

अंग्रेजी संसार के मात्र पांच देशों की भाषा है। इंग्लैंड में यानी ब्रिटेन में अंग्रेजी के साथ-साथ वेल्स, स्काटिश और आयरिश भाषा-भाषी भी हैं। कनाडा में अंग्रेजी के समानान्तर फ्रेंच भाषा भी चलती है। अमेरिका में सर्वत्र अंग्रेजी का ही वर्चस्व है, यह धारणा भी व्यर्थ है। वहां स्पेनिश भाषियों की संख्या करोड़ों में है।

विश्व के मानचित्र में जहां हिन्दी तथा अंग्रेजी अथवा चीनी की यह स्थिति है, वहां भारत में अंग्रेजी की स्थिति और भी विस्मयकारी है। आंकड़ों के विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में हिन्दी जानने वालों की संख्या, कुल जनसंख्या का पचास प्रतिशत है, तो अंग्रेजी जानने वाले केवल 0.58 प्रतिशत मात्र ही हैं। एक प्रतिशत भी पूरे नहीं।

गत 50 वर्षों में हिन्दी की शब्द-संख्या में जितना विस्तार हुआ है, उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा में हुआ हो। आज शब्द-संख्या की दृष्टि से यह संसार की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक मानी जाती है। अंग्रेजी—जिसे महत्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय भाषा का गौरव प्राप्त है, उसके मूल शब्द जहां मात्र 10 हजार हैं, वहां हिन्दी के ढाई लाख से भी अधिक।

विश्व में बिखरे हुए हिन्दी जानने वालों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक वे देश, जहां भारतीय श्रमिक दासों के रूप में, लगभग सौ-डेढ सौ साल पहले गए थे, और आज वहां के प्रमुख नागरिकों के रूप में जिनकी गणना होती है। फीजी, मारीशस, गियाना, सूरीनाम, त्रिनीडाड आदि। भोजपुरी, अवधी भाषी ये लोग आज भी जहां बहुत बड़ी संख्या में हैं।

दूसरे ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, नीदरलैंड, स्वीडन, डेनमार्क, जर्मनी, नार्वे आदि। इसमें केन्या, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के आप्रवासियों को भी शामिल किया जा सकता है। दक्षिण-पूर्व एशिया में, यानी म्यांमार (बर्मा), थाईलैंड, सिंगापुर, मलेशिया में बसे हिंन्दी-प्रेमी भारतीय मूल के लोगों को भी। नेपाल की आधी से अधिक आबादी हिन्दी से परिचित है, यद्यपि शासन के स्तर पर, वहां सदैव हिन्दी की उपेक्षा की जाती रही है।

थाईलैंड में हिन्दी जानने वालों की संख्या लगभग एक लाख है। इनमें अधिकांश लोग दूसरे विश्व-युद्ध के समय वहां स्थायी रूप से बस गए थे। वर्मा में भारतीय मूल के लोग लाखों की संख्या में हैं। पूर्वी उत्तर-प्रदेश तथा बिहार से होने के कारण हिन्दी के प्रति इनका विशेष लगाव है।

जिन-जिन देशों या द्वीपों में भारतवंशीय बसे, वहां हिन्दी को जीवित रखने में 'आर्य-समाज', 'सनातन-धर्म' तथा अन्य धार्मिक संगठनों का विशेष योगदान रहा है। अपने घर की भाषा भोजपुरी, अवधी आदि को उन्होंने अपनी अस्मिता से जोड़ रखा, जिसका परिणाम हुआ कि हिन्दी भी किसी-न-किसी रूप में, अनेक झंझावातों के बावजूद वहां जीवित रही।

सन् 1910 में मारीशस में 'आर्य-समाज' की स्थापना के पश्चात हिन्दी को उस द्वीप में एक नई दिशा मिली। अपनी सभी पाठशालाओं में 'आर्य-समाज' ने हिन्दी को एक अनिवार्य विषय के रूप में मान्यता दिलाई। 1935 में जब भारतीय मूल के लोगों के यहां आगमन की शताब्दी मनाई गई तो हिन्दी के शिक्षण पर विशेष बल दिया गया। हिन्दी को अस्मिता के साथ-साथ अस्तित्व से भी जोड़ा।

जिसका परिणाम है कि आज वहां अनेक संस्थाएं सक्रिय हैं और हिन्दी एक नई दिशा-दृष्टि के साथ आगे बढ़ रही है। अकेले नन्हें-से इस द्वीप ने कई प्रतिभाशाली लेखक हिन्दी को दिए। स्वर्गीय सोमदत्त बखोरी, उपन्यासकार अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर आदि कई प्रतिभाएं हैं, जिन्होंने हिन्दी की श्रीवृद्धि में अपना विशेष योगदान ही नहीं दिया, बल्कि फ्रान्सिसी और अंग्रेजी के प्रबल प्रभाव के बीच हिन्दी के वर्चस्व को बनाए रखने में अपनी ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया।

आस्ट्रेलिया के निकट है, एक और छोटा-सा द्वीप—फीजी। जहां हिन्दी को हमेशा प्रतिष्ठा मिली। अनेक पत्र-पत्रिकाएं वहां से प्रकाशित होती रहीं

हैं। वहां के बाजारों में, दूकानों पर नाम पट्ट अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी लिखे रहते हैं। सड़कों के नाम भी दो भाषाओं में। सरकार द्वारा भी हिन्दी को मान्यता मिली है।

सन् 1916 में भारतीयों ने यहां अपनी पहली पाठशाला स्थापित की थी, जिसे आज एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। यद्यपि इधर वर्षों से वहां की राजनीति भारतीय मूल के लोगों के प्रतिकूल रही है, फिर भी हिन्दी-शिक्षण का कार्य एक धार्मिक अनुष्ठान की तरह चल रहा है।

त्रिनीडाड, जहां आगामी वर्ष मार्च-अप्रैल में 'पांचवां विश्व हिन्दी सम्मेलन' आयोजित होने जा रहा है, वहां भी हिन्दी के प्रति गहरा लगाव है। वहां की कुल आबादी के आधे से अधिक लोग भारतवंशीय हैं।

भारतीयों के सम्पर्क में आने के कारण वहां रह रहे अफ्रीकी मूल के लोगों ने अनेक भारतीय शब्दों को आत्मसात कर लिया है। 'आम' को वहां के अफ्रीकी आम ही उच्चारित करते हैं, और 'अचार' को अचार ही।

परन्तु, सूरीनाम का उदाहरण इस से कम रोचक नहीं। वहां देवनागरी के साथ-साथ हिन्दी रोमन-लिपि में भी लिखी जा रही है। जिसे 'सरनामी हिन्दी' कहा जाता है।

इस देश को कभी 'डच गियाना' कहा जाता था। 'डच-साम्राज्यवाद' के प्रभाव के पश्चात वहां के प्रशासन में अफ्रीकी मूल के लोगों का प्रभुत्व बढ़ा तो अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए बहुत से आप्रवासी भारतीय सूरीनाम छोड़ कर नीदरलैंड में जा बसे थे। नीदरलैंड में आज इन की संख्या एक लाख से भी अधिक है। नीदरलैंड के लाॅयडन तथा उप्रेखल विश्वविद्यालयों में भी एम०ए० तक 'सरनामी हिन्दी' पढ़ाई जा रही है।

परन्तु धीरे-धीरे अब यहां परिवर्तन परिलाक्षित हो रहे हैं, देवनागरी लिपि के समर्थकों की संख्या बढ़ रही है। यहां के सैकड़ों छात्र प्रति वर्ष 'हिन्दी प्रचार समिति वर्धा' द्वारा आयोजित परीक्षाओं में बैठ रहे हैं। इसके लिए वहां बाकायदा एक आंदोलन चल रहा है।

यों अब से लगभग एक शताब्दी पूर्व सूरीनाम में हिन्दी भाषियों के लिए डचों ने 'कुली-पाठशालाओं' की स्थापना की थी, किन्तु कालान्तर में, कुछ राजनीतिक कारणों से उन्हें बन्द कर देना पड़ा।

अब एक नए रूप में हिन्दी पुष्पित-पल्लवित हो रही है। वहां एक विचित्र बात यह देखने में आती है कि जो आदमी हिन्दी नहीं जानता, उसका मंत्री बनना प्रायः असम्भव-सा रहता है।

फ्रेंच गियाना और ब्रिटिश गियाना में भी हिन्दी की स्थिति लगभग ऐसी ही है। 'आर्य-समाज' द्वारा स्थापित पाठशालाएं तथा अन्य धार्मिक/सांस्कृतिक संस्थान हिन्दी जानने वालों की एक नई पौध तैयार कर रहे हैं।

न्यूजीलैंड में इस समय बीस हजार से अधिक लोग भारत और भारतीयता से जुड़े हैं। यहां के मूल निवासी यानी आदिवासी माओरी भी अपने को भारतीय मूल का ही मानते हैं। उन का कहना है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व उनके पूर्वज कभी भारत से यहां आकर बस गए होंगे। उनके रहन-सहन, खान-पान में भारतीयता की स्पष्ट झलक दीखती है।

कुछ वर्ष पूर्व जब नई दिल्ली में न्यूजीलैंड के दूतावास की इमारत बनी तो उसके उद्घाटन के समय न्यूजीलैंड सरकार ने माओरियो के प्रतिनिधि-मंडल को विशेष रूप से भारत भेजा था।

हिन्दी चल-चित्र वहां विशेष लोक प्रिय हैं। हिन्दी के कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए, वहां के भारतीय-मूल के लोग अपना अलग से दूरदर्शन एवं आकाशवाणी-केन्द्र स्थापित करने जा रहे हैं। हिन्दी को अपने ढंग से वे वहां बनाए हुए हैं।

इण्डोनेशिया की भाषा का तो नाम ही 'भाषा इंडोनेशिया' है। उनकी भाषा के 18 प्रतिशत से अधिक शब्द संस्कृत अथवा हिन्दी के हैं। वहां के रास्तों में 'डेंजर' या 'खतरा' नहीं, 'भय' लिखा रहता है। वहां की तीनों सेनाओं का जो समाचार-पत्र प्रकाशित हो रहा है, उसका नाम 'त्रिशक्ति' है। सारा का सारा इण्डोनेशिया किसी रूप में भारतमय यानी हिंदमय लगता है।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मूल के लोगों का अपना विशिष्ट स्थान है। वहां का अधिकांशतः व्यवसाय भारतीयों के पास है। इसलिए हिन्दी, गुजराती, भाषाओं को, अंग्रेजी-साम्राज्यवाद के बावजूद भी पनपने का पर्याप्त अवसर मिला। पिछले अनेक वर्षों से जौहान्सवर्ग विश्वविद्यालय में हिन्दी के पूर्ण प्रशिक्षण का प्रबन्ध है। नेलसन मण्डेला प्रशासन के पश्चात वहां भारतीयों के विकास के अनेक द्वार खुले हैं। वहां की पाठशालाओं में हिन्दी पठन-पाठन की व्यवस्था की जा रही है। सन् 1908 में यहां प्रथम हिन्दी पाठशाला खुली थी, पर आज इस क्षेत्र में अनेक सक्रिय हैं।

अफ्रीका महाद्वीप के ही केन्या, उगाण्डा, जैम्बिया आदि अनेक देशों में स्वाहिली भाषा के माध्यम से, हिन्दी ही नहीं, गुजराती, पंजाबी आदि भाषाएं पढ़ाई जा रही हैं। कम्पाला, तंजनिया, नाइजीरिया में लाखों की संख्या में भारतीय हैं, जो आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध हैं। उनके द्वारा संचालित धार्मिक संस्थाएं भी इस कार्य में सक्रिय हैं।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के विकास में विद्यालयों/विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभागों का योगदान कुछ कम नहीं। इस समय विदेशों के 136 विश्वविद्यालयों में हिन्दी-शिक्षण की व्यवस्था है। इन के अलावा छोटे-बड़े अनेक स्तरीय संस्थान हैं, जो वर्षों से हिंदी-सेवा के कार्य में संलग्न हैं।

अकेले जापान में 8 विश्वविद्यालय एवं संस्थान हिन्दी की पढ़ाई में जुटे हैं। लगभग तीन सौ जापानी-छात्र हिन्दी सीख रहे हैं।

जापान में हिन्दी का शिक्षण सर्वप्रथम अब से लगभग साठ साल पूर्व तोक्यो विश्वविद्यालय में, प्रो० क्योयो दोई ने आरंभ किया था। उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम०ए० ही नहीं, पी०एच०डी० की उपाधि भी प्राप्त की थी। उन्होंने 'गोदान' का मूल हिन्दी से जापानी में अनुवाद किया था, जिसकी पांच लाख प्रतियां बिकी थीं।

जापान में 'आकाशवाणी' से नियमित रूप से हिन्दी के समाचार ही नहीं, अन्य साहित्यक, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रसारित होते हैं। ओसाका विश्वविद्यालय में भी उच्च स्तर पर हिन्दी के शिक्षण की व्यवस्था है।

लगभग 20 वर्ष से जापान में 'सर्वोदय' नाम की एक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। अभी जापान में आप्रवासी भारतीयों ने अपने ही प्रयासों से एक नई हिन्दी मासिक पत्रिका 'जापान भारती' का प्रकाशन आरम्भ किया है। कुछ वर्ष पूर्व हिन्दी-सेवी योशियाकि सुजुकि ने जापान से 'ज्वालामुखी' नामक पत्रिका प्रकाशित की थी, जिस में छपने की शर्त थी—केवल जापानी ही इसमें लिखेंगे। केवल हिन्दी में लिखी रचनाओं को स्थान मिलेगा।

अभी हिन्दी कहानियों का जापानी में एक संकलन आया है।

लगभग दो सौ कोरियाई छात्र इन दिनों हिन्दी सीख रहे हैं। सीयोल स्थित विदेशी भाषाओं का विश्वविद्यालय हांकुक इस कार्य में प्रमुख रूप से सक्रिय है। एम०ए० तक हिन्दी पढ़ाने की इसमें व्यवस्था है। कोरियाई भाषा में हिन्दी कृतियों के अनुवाद का भी कुछ कार्य चल रहा है।

लगभग सत्तर साल पहले पेइचिंग विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं को पढ़ाने के लिए एक नया विभाग खुला था। प्रो० ची-श्येन पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आधुनिक चीन में भारत विद्या का श्रीगणेश किया था।

प्रो० ची-श्येन विश्व में संस्कृत के अग्रणी विद्वान हैं। जर्मनी के गौटिंगन विश्वविद्यालय में जिन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया था। चीन लौट कर संस्कृत-विभाग ही नहीं खोला, बल्कि बाल्मीकि रामायण का चीनी में पद्यवद्ध अनुवाद भी किया था।

प्रो० चिन्तिन-हा न, प्रो० ल्यू को-नान आदि समर्पित विद्वानों को श्रेय दिया जा सकता है—प्रो० ची-श्येन द्वारा स्थापित 'भारत विद्या विभाग' में हिन्दी के पाठ्य-क्रम को विधिवत आरम्भ करने का। प्रो० चिन्तिन-हान द्वारा चीनी में अनूदित पहली हिन्दी पुस्तक थी—मुंशी प्रेमचंद की कृर्ति 'निर्मला'। लगभग सात वर्षों के अथक परिश्रम के पश्चात उन्होंने 'रामचरित मानस' का पद्यवद्ध अनुवाद चीनी में प्रकाशित किया था। अपने कर्मठ जीवन के 32 वर्षों में प्रो० चिन्तिन-हान ने लगभग 620 छात्रों को हिन्दी से परिचित कराया था। आजकल वे यशपाल के 'झूठा-सच' का चीनी में अनुवाद कर रहे हैं।

हिन्दी से चीनी में अनुवाद के कार्य को विशेष गति दी थी—प्रो० ल्यु-को नान ने। उनकी योजना थी—भारतीय भाषाओं की सौ प्रतिनिधि रचनाओं के चीनी भाषा में रूपान्तर की, जो उनकी अकाल मृत्यु के कारण अधूरी रह गई। उनके द्वारा हिन्दी से, चीनी में अनूदित अन्तिम रचना थी—'कगार की आग'।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सत्तर पुस्तकों के अनुवाद चीनी में प्रकाशित हुए 'चित्रलेखा', 'मैला आंचल' अनेक कालजयी कृतियों के अनुवाद चीनी पाठकों तक पहुंच चुके हैं।

चीन में जहां पेइचिंग रेडियो प्रति दिन हिन्दी के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा है, वहां गत तीस वर्षों से 'सचित्रचीन' का हिन्दी-संस्करण निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। भारतीय वाङ्मय के प्रति चीन में बड़ा आदर भाव है। चीनी इस सत्य को आज भी सहर्ष स्वीकार करते हैं कि चीनी भाषा के निर्माण में पाणिनी के व्याकरण का विशेष योगदान है। अनेक अन्तर्विरोधों के बावजूद चीन आज भी कहीं भारतमय लगता है।

चीन की ऐतिहासिक दीवार की स्वागत-शिला पर अंकित वाक्य 'ओम नमो भगवते' आज भी दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नहीं रहता।

बर्मा यानी वर्तमान म्यांमार में कभी हिन्दी का बड़ा प्रभाव रहा। परन्तु सैनिक-शासन के पश्चात पड़ोसी देश होने के बावजूद दोनों देशों के बीच इतनी दूरी बढ़ गई कि बर्मा हमारे लिए पूर्ण रूप से एक अपरिचित देश बन कर रह गया। अनेक व्यवधान आज भी बने हैं। परन्तु वहां के भारतवासियों का हिन्दी के प्रति लगाव कम नहीं हुआ। मांडले, चोगला में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की शाखाएं हैं। अनेक स्थानों पर 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की परीक्षाएं आयोजित हो रही हैं।

वर्तमान सैनिक शासन ने भारतीयों पर अनेक प्रतिबंध लगाए हैं, परन्तु भारतीय अपनी धार्मिक/सांस्कृतिक छोटी-छोटी संस्थाओं के माध्यम से अपने बच्चों को, अपने पूर्वजों की भाषा हिन्दी से किसी तरह जोड़े हुए हैं। रंगून विश्वविद्यालय में, विश्व की अनेक प्रमुख भाषाएं पढ़ाई जा रही हैं। थाई, इण्डोनेशियन, मलय आदि, परन्तु हिन्दी के लिए वहां कोई स्थान नहीं। लगता है, निकट भविष्य में जनतंत्र की स्थापना के पश्चात, फिर पुराने दिन लौटेंगे।

श्रीलंका के तीनों विश्वविद्यालयों में उच्च स्तर तक हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। पाकिस्तान में पंजाब विश्वविद्यालय के साथ-साथ करांची विश्वविद्यालय में भी हिन्दी पढ़ाई जाती है। हिन्दी-उर्दू में बहुत अन्तर न होने के कारण, अनेक अवरोधों के पश्चात् भी हिन्दी-उर्दू मिश्रित हिन्दुस्तानी वहां खूब बोली जा रही है।

पाकिस्तान के 'लोक सेवा आयोग' की परीक्षाओं में हिन्दी एक वैकल्पिक विषय है। वहां के कई शायर अपनी नज्मों में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शब्दों का प्रयोग खुले आम करते हैं। आखिर हमारी साझी संस्कृति का प्रभाव कहीं तो रहेगा, कुछ!

सम्पूर्ण पश्चिमी दुनिया में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विश्वविद्यालयों का उल्लेखनीय योगदान है। यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया का शायद ही कोई स्तरीय विश्वविद्यालय हो, जहां आज हिन्दी के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था न हो!

फिनलैंड के हेलसिंकी विश्वविद्यालय में गत अनेक वर्षों से हिन्दी पढ़ाई जा रही है। वहां के प्राध्यापक प्रो० बातिन तिक्के ने 'गोदान' का फिनिस भाषा में रूपान्तर ही नहीं किया, बल्कि 'हिन्दी-फिनिश' शब्दकोष भी तैयार किया है।

स्वीडन में सन् 1968 में हिन्दी-विभाग का प्रारम्भ हुआ—वहां के प्राचीन विश्वविद्यालय उपशाला में। स्टाकहोम विश्वविद्यालय में भी भारतीय विद्या का एक अलग समृद्ध विभाग है। जिसमें संस्कृत, तमिल, बांग्ला तथा हिन्दी साथ-साथ पढ़ाई जा रही है।

इसी तरह नार्वे के ओस्लो विश्वविद्यालय में भी हिन्दी की विशेष व्यवस्था है। वहां हिन्दी तथा ईरानी-परिवार की सभी भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। वहां के हिन्दी-विभागाध्यक्ष प्रो० कुनुट क्रिस्तियांएन फारसी, अरबी, पश्तू बलूच, सिंधी, नेपाली के साथ-साथ भारत की प्रायः सभी भाषाएं जानते हैं। विश्व में आज वह अकेले व्यक्ति हैं, जो इतनी भारतीय तथा अन्य भाषाओं के जानकार हैं।

'शांतिदूत', 'आप्रवासी टाइम्स' आदि पत्रिकाएं वहां से, प्रकाशित हो रहा है''।

युगोस्लाविया के जाग्रेव तथा बेल्ग्रेड विश्वविद्यालयों में गत 25 वर्षों से हिन्दी अध्ययन का कार्य चल रहा है। बुल्गारिया, हंगेरी में हिन्दी का कार्य और भी बड़े पैमाने पर है। हिन्दी साहित्य का प्रचुर मात्रा में अनुवाद भी हुआ है।

पोलैंड इस दिशा में और भी आगे है। पोलैंड के भारत स्थित वर्तमान राजदूत प्रो० मारिया क्रिस्तोफ बृष्की संस्कृत और हिंदी के जाने-माने विद्वान हैं। पोर्नोवस्की ने 'गोदान' का अनुवाद पोलिश भाषा में किया था। 'प्राच्य विद्या संस्थान' की डा० दानूता स्ताशिक का योगदान भी अविस्मरणीय है।

चेक गणराज्य का भारतीय साहित्य के प्रति विशेष मोह रहा है। प्राहा स्थित चार्ल्स विश्वविद्यालय में गत सौ वर्ष से भी अधिक समय से संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था है। आधुनिक-युग में हिन्दी के अनेक विद्वान तैयार किए हैं, इस प्राचीन विश्वविद्यालय ने। वहां के पूर्व हिन्दी प्राध्यापक डा॰ ओदोलेन स्मैकल हिन्दी के विद्वान ही नहीं, हिन्दी के सुप्रतिष्ठित कवि भी हैं। हिन्दी में लिखे आठ काव्य-संग्रह इनके प्रकाशित हो चुके हैं। प्रो॰ वृष्की की तरह, ये भी इन दिनों भारत में चेक गणराज्य के राजदूत हैं।

डा॰ स्मेकल ने जहां 'गोदान' का चेक भाषा में अनुवाद किया, वहां डा॰ सारकालितविनोवा तथा डा॰ दागमार मारकोवा ने जैनेन्द्र, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, मोहन राकेश की कई कृतियों का।

रोमानिया के बुखरेस्ट विश्वविद्यालय में भी हिन्दी का एक स्वतंत्र विभाग है। वहां स्नातक स्तर तक हिन्दी का पाठ्यक्रम है।

अनुवाद का भी कुछ कार्य हुआ है। गत तीस वर्षों में इस विभाग के माध्यम से अनेक रोमानियन छात्रों ने हिन्दी में महारत हासिल की। हिन्दी से रोमानियन में अनुवाद का भी कार्य चल रहा है।

फ्रांस में कुछ प्रबुद्ध आप्रवासी भारतीय इन दिनों एक पुस्तक तैयार कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य यह है कि यदि फ्रांस के लोग रोमन के स्थान पर देवनागरी लिपि अपनी भाषा के लिए अपना लें तो उन्हें कितनी सुविधा होगी! आज वे लिखते 'गाइडे माउपासण्ट' हैं, और पढ़ते हैं—'गोद मोपाशा'! देवनागरी लिपि से उनकी ये सारी समस्याएं सुलझ जाएंगी! जैसा लिखेंगे, उसे उसी तरह उच्चारित भी कर पाएंगे!

आसान नहीं है, यह सब! पर एक सार्थक प्रयास तो है ही।

फ्रांस के सौवन विश्वविद्यालय में पिछले अनेक वर्षों से हिन्दी पढ़ाई जा रही है। 'गोदान', 'मैला आंचल', 'त्यागपत्र' आदि कृत्यिों के फ्रांसिसी भाषा में अनुवाद भी छपे हैं।

क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से बेलजियम छोटा-सा देश है। परन्तु गत 35 वर्षों से, वहां के घेंट, ल्युवेन और ल्येज विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन की व्यवस्था है।

इटली का भारतीय साहित्य एवं दर्शन के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। वहां के नेपल्स तथा वेनिस विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभागों में अनेक इटालियन छात्र हिन्दी के अध्ययन में संलग्न हैं।

कभी अंग्रेजों का साम्राज्य था, सारे विश्व में, आज अंग्रेजी का है। किन्तु हिन्दी ने जो कीर्तिमान यहां स्थापित किया है, वह ऐतिहासिक महत्व का है। यह कम आश्चर्य की बात नहीं, कि जिस हिन्दी की अपने ही देश में हम उपेक्षा करते हैं, आज सारे इंग्लैंड में अंग्रेजी के पश्चात् जो भाषा सब से अधिक बोली जा रही है। वह हिन्दी ही है।

केम्ब्रिज, यार्क तथा लंदन विश्वविद्यालयों में उच्चतम स्तर तक हिन्दी के पढ़ाए जाने की पूर्ण व्यवस्था है। लन्दन विश्वविद्यालय के अंग्रेज हिन्दी प्राध्यापक डॉ॰ रूपर्ट स्नैल, हिन्दी के ही नहीं, ब्रजभाषा के भी अनन्य भक्त हैं। ब्रज भाषा में कविताएं लिखते हैं। इन दिनों ब्रज भाषा के एक प्राचीनतम काव्य का अंग्रेजी में पद्यवद्ध अनुवाद कर रहे हैं। हिन्दी की कई कहानियों के अंग्रेजी रूपान्तर इन्होंने विश्व प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराए हैं। हिन्दी की ध्वजा लन्दन तक फहराने का श्रेय इन्हें ही जाता है।

आधुनिक यूरोपीय भाषाओं में जर्मन सब से अधिक विज्ञान-संगत भाषा है, इसका कारण है, जर्मन भाषा के व्याकरण पर संस्कृत का गहरा प्रभाव।

जर्मनी में संस्कृत तथा भारतीय भाषाओं के प्रति सदैव आदर का भाव रहा है। संस्कृत वहां अब से नहीं, डेढ़-दो सौ साल से विधिवत पढ़ाई जा रही है। जर्मनी के 17 विश्वविद्यालयों में आज हिंदी के स्वतंत्र विभाग हैं।

जर्मनी का रेडियो-कोलोन संसार का एक मात्र केन्द्र है, जहां संस्कृत में समाचार ही नहीं, प्रति सप्ताह नियमित रूप से संस्कृत में शोधपूर्ण आलेख भी प्रसारित किए जाते हैं।

डेनमार्क, स्विटजरलैंड, आस्ट्रिया यूरोप के प्रायः सभी देशों में अनेक माध्यमों से हिन्दी पढ़ाई जा रही है।

हिन्दी-शिक्षण के प्रश्न पर सोवियत संघ कभी अपना विशिष्ठ स्थान रखता था। रूस सहित उसके सभी गणराज्यों में 34 से भी अधिक संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पाठ्यक्रम चलते थे। सोवियत संघ के अतिरिक्त मंगोलिया, रोमानिया, आस्ट्रिया, पोलैंड आदि पूर्वी यूरोपीय देशों के छात्र उच्च हिन्दी शिक्षा के लिए लेनिनग्राद अथवा मास्को विश्वविद्यालयों में आते थे।

सोवियत संघ के विघटन के पश्चात यद्यपि हिन्दी पढ़ाने वाले संस्थान अभी उतने ही हैं, परन्तु राजनीतिक उथल-पुथल के कारण फिलहाल उनकी प्राथमिकताएं बदल रही हैं।

रूसी में हिन्दी पुस्तकों का जितना अनुवाद प्रकाशित हुआ, उतना शायद ही संसार की किसी भाषा में हुआ हो परन्तु आजकल यह कार्य भी पूर्णरूपेण स्थगित-सा ही है। हां, मध्य एशियाई देशों के भारत का व्यापार बढ़ रहा है, इससे आशा बंधती है कि हिन्दी शिक्षण का कार्य भी अब उन देशों में कुछ तीव्र गति से होगा।

कनाडा में भारतीय आप्रवासी कुछ कम संख्या में नहीं! पंजाब से गए लोग पंजाबी के साथ-साथ हिन्दी का भी प्रयोग करते हैं। वहां से हिन्दी में दो स्थानीय समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं। बैंकूवर, टोरंटो, मैगलिक, विंडसर विश्वविद्यालयों में हिन्दी-विभाग हैं। टोरंटो में आधुनिक ही नहीं, मध्यकालीन हिन्दी साहित्य भी वर्षों से पढ़ाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त 'वैदिक-सभा', 'आर्य समाज', 'शांतिनिकेतन कल्चरल कॉन्सिल' आदि अनेक धार्मिक तथा सांस्कृतिक संस्थाएं हैं, जो हिन्दी के प्रति समर्पित भाव से संलग्न हैं।

आस्ट्रेलिया के दो विश्वविद्यालय हिन्दी पढ़ा रहे हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका का इस दृष्टि से विशेष महत्व है। वहां के 28 विश्वविद्यालय तथा अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं हिन्दी के प्रति समर्पित भाव से जुटी हैं। यों तो संस्कृत का अध्यापन वहां सन् 1815 से प्रारम्भ हो गया था, परन्तु उसका क्षेत्र पुरानी भाषा होने के कारण इतना व्यापक एवं विस्तृत नहीं था। सन् 1875 में अमेरिका में हिन्दी का व्याकरण तैयार किया गया था, जो आज भी अपनी उपयोगिता बनाए हुए है।

गत अनेक वर्षों से मैक्सीको तथा अनेक लातीनी अमेरिकी देशों में हिन्दी का विस्तार बढ़ा है। क्यूबा, वेनेजुएला, कोलंबिया, पेरू, अर्जेनटीना, चीली आदि इस के जीवन्त उदाहरण हैं।

भारत की स्वाधीनता के पश्चात् विश्व भर में हिन्दी को जो मान्यता मिली, वह विश्व की अनेक भाषाओं के लिए दुर्लभ है।

3686/HA

हिन्दी के इस जगतव्यापी प्रचार-प्रसार में चलचित्रों की भी अहम भूमिका रही है। हिन्दी-फिल्मों के कारण हिन्दी भारत भर में ही नहीं फैली, बल्कि इसे सारे संसार में प्रबल आधार भी मिला है। जो लोग हिन्दी नहीं जानते, किसी भी भारतीय भाषा से परिचित नहीं—अनेक सागरों के पार एक दूसरी दुनिया में बसे हैं, उन्हें भी हिन्दी-फिल्में रिझाती रही हैं, यह एक और विस्मय की बात है।

फीजी, मॉरीशिस, केन्या, युगाण्डा या मध्य-पूर्व यानी मिडिल ईस्ट के देशों में तो हिन्दी चलचित्र खूब देखे ही जाते हैं, क्योंकि यहां भारतीय मूल के लोग रहते हैं, परन्तु लॉतीनी—अमेरिकी देशों में, जहां भारतीय संस्कृति का विशेष प्रभाव नहीं, न भारतीय भाषाओं का ही किंचित ज्ञान, वहां लाखों दर्शक स्पेनिश सबलटाइटिल्स के साथ, और कभी-कभी बिना सब-टाइटिल्स के भी बड़े चाव से देखते हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया में भी हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता कुछ कम नहीं। इण्डोनेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, मलेशिया में हिन्दी-फिल्मों के लिए अच्छा बाजार है। रूस, मध्य एशियाई देश भी कम दीवाने नहीं। सुप्रसिद्ध रूसी विद्वान डॉ० प० अ० बारान्निकोव आजकल रूसी भाषा में हिन्दी फिल्मों पर एक समाचार-पत्र निकाल रहे हैं, उसी से उन की रोजी-रोटी चल रही है। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् बहुत कुछ बदल गया है, परन्तु हिन्दी-फिल्मों के लिए लगाव अभी तक बना हुआ है।

जर्मनी के हाइडिल बर्ग शहर में रविवार को छविगृहों में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की फिल्में प्रदर्शित की जाती हैं। अमेरिका के कैलीफोर्निया दूरदर्शन पर हर शनिवार को 'सिनेमा-सिनेमा' कार्यक्रम के अन्तर्गत नियमित रूप से हिन्दी-फिल्में दिखलाई जाती हैं।

इंग्लैंड के बी०बी०सी० दूरदर्शन पर 'महाभारत' इतना लोकप्रिय हुआ कि भारतीय ही नहीं, अन्य देशों के आप्रवासी ही नहीं, स्वयं ब्रिटेन के तरुण/वृद्ध भी अतीत के भारत की इस शौर्य गाथा पर मुग्ध हो गए थे। लोकप्रियता के इसने कई कीर्तिमान स्थापित किए थे।

सूरीनाम के दूरदर्शन पर दो बार इसका प्रदर्शन हुआ। जापानी दर्शकों ने इस धारावाहिक के संवादों को जोड़-जोड़कर जापानी में 'महाभारत' की एक अलग पुस्तक तैयार कर डाली, जो बहुत लोकप्रिय हुई।

तुर्की, इराक, सउदी अरब, मिस्र, लीबिया, अल्जीरिया आदि इस्लामी देशों का भी हिन्दी-फिल्मों के प्रति विशेष आत्मभाव रहा।

मिस्र के राष्ट्रपति नासिर एक बार भारत की यात्रा पर आए हुए थे। एक शाम उन्हें भारतीय फिल्म दिखाने का कार्यक्रम निश्चित किया। नेहरूजी के सुझाव पर 'मदर इंडिया' का प्रदर्शन 'राष्ट्रपति-भवन' के सभागार में रखा गया।

नेहरूजी ने कह तो दिया 'मदर इंडिया' के लिए, परन्तु उन के मन में किंचित संदेह था कि क्या पता राष्ट्रपति नासिर को पसन्द भी आए या न आए!

सिनेमा समाप्त हुआ तो नेहरूजी ने यों ही औपचारिकतावश पूछा, 'हमारी यह फिल्म आपको कैसी लगी?'

राष्ट्रपति नासिर ने हंसते हुए कहा, 'बहुत अच्छी! इस से पूर्व काहिरा में इसे मैं तीन बार देख चुका हूं! यह चौथी बार है!'

यह है, हिन्दी फिल्मों की अपार लोकप्रियता!

दृश्य और श्रव्य-माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लिए लिपि सीखने की आवश्यकता नहीं होती। देख कर, सुनकर ही बहुत कुछ समझ में आ जाता है। हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज तक ले जाने में हिन्दी सिनेमा, दूरदर्शन तथा रेडियो की विशेष भूमिका रही। उसे और अधिक व्यापक एवं विस्तृत बनाने में 'कैसेट कल्चर' का योगदान और भी उल्लेखनीय रहा।

यह देख कर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहा जाता कि इंग्लैंड, कनाडा, अमेरिका, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, मॉरीशिस, फीजी, त्रिनिडाड, मलेशिया, सिंगापुर, हांगकांग, जहां-जहां भारतीय या पाकिस्तानी या बांग्लादेशी या नेपाली मूल के लोग रहते हैं, वहां के बाजार हिन्दी फिल्मों के कैसेटों से भरे पड़े हैं। कैसेट जाति, धर्म या देशों की राजनीतिक सीमाओं पर विश्वास नहीं रखते, यानी पूर्ण रूप से धर्म-निरपेक्ष हैं, इसलिए भारतीय, पाकिस्तानी, तुर्की, ईरानी सभी की दूकानों में, सभी के लिए ये समान रूप से उपलब्ध रहते हैं। बिना भेद-भाव के सब इन्हें देखते हैं।

हिन्दी फिल्में जो पहले पर्दे तक सीमित थीं, अब करोड़ों लोगों के ड्राइंग-रूम तक पहुंच गई हैं। सेटेलाइट के चैनेलों ने इन्हें और सहज बना दिया है।

सारी दुनिया में जितनी फिल्में आज हिन्दी की देखी जा रही हैं, उतनी शायद ही किसी भाषा की हों। 'हम आपके हैं कौन' फिल्म की जितनी टिकटें खिड़की से बिकी, उतनी आज तक संसार भर में किसी भी फिल्म की नहीं।

हिन्दी की विश्वव्यापी लोकप्रियता के ऐसे अनेक दृष्टान्त हैं।

इतना विशाल देश है हमारा। संसाधन भी कम नहीं! हिन्दी को राष्ट्रसंघ की भाषा हम भी बना सकते थे—अरबी-भाषा की तरह अपना अनुदान देकर। परन्तु हमारी प्राथमिकता में हिन्दी रही ही कब है? हिन्दी-भाषियों का ही जब हिन्दी के प्रति उपेक्षा भाव है, तब औरों को दोष क्या दें? लगभग 46 करोड़ लोग हैं, हम हिन्दी-भाषी। हम ही सही रूप में हिन्दी अपनालें, तो राजभाषा, राष्ट्र-भाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा यह स्वतः बन जाएगी। पर उस दिशा में हम सचेष्ट कहां हैं?

लगभग दो वर्ष पूर्व मारीशस में 'चतुर्थ विश्व हिन्दी-सम्मेलन' का आयोजन हुआ था। उससे लगभग ढाई महीने पहले मॉरीशस में ही 'विश्व —फ्रैंच सम्मेलन' आयोजित किया जा चुका था।

फ्रैंच भाषा के सम्मेलन में विश्व भर के 44 राष्ट्राध्यक्ष आए थे। मॉरीशस का हवाई-अड्डा उनके लिए नए सिरे से ठीक किया गया था। फ्रांस सरकार ने शाही अतिथियों के लिए अपनी सरकार की ओर से दो सौ नई कारें भेजी। लगभग 600 प्रैस-प्रतिनिधि दुनिया भर के देशों से आए। सम्मेलन के लिए छह करोड़ की लागत से नया सभागार बनाया गया।

इस 'फ्रैंच-सम्मेलन' में फ्रांस सरकार ने पानी की तरह पैसा बहाया। सम्मेलन में सारी राजनयिक गरिमाओं को त्याग कर, फ्रांस के राष्ट्रपति मितरां ने स्पष्ट शब्दों में घोषित किया कि फ्रांस —फ्रैंच भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए गलत-सही का भेद भुला कर, किसी भी सीमा तक जा सकता है!

3686/HA

चार-पांच दिन तक मॉरीशस घूम कर भाई लोग स्वदेश लौट आए थे, हिन्दी की जै बोलते हुए।

उस समृद्ध—फ्रेंच भाषा से मुकाबला है, मॉरीशस में हिन्दी का! हिन्दी अपने अस्तित्व की लड़ाई कैसे जीतेगी वहां?

परन्तु हिन्दी अपने अस्तित्व की लड़ाई जीतेगी, हर मोर्चे पर जीतेगी, हमारा दृढ़ विश्वास है।

धीरे-धीरे एक परिवर्तन आ रहा है अब विश्व भर में। अपनी पहचान के प्रति लोग अधिक सचेत हो रहे हैं। भारत से बाहर भी एक भारत है, अनेक देशों में बिखरा। उस में एक नई चेतना उभर रही है। जितनी अधिक भारतीयता, भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों में आज झलक रही है, उतनी हम भारत में रहने वाले भारतीयों में नहीं लगती। नार्वे, स्वीडन, जापान, रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा आदि अनेक देशों में, आज अनेक हिन्दी पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। अनेक देशों के दूरदर्शन/आकाशवाणी हिन्दी को प्राथमिकता प्रदान कर रहे हैं। हिन्दी की गरिमा बढ़ रही है।

हां, थोड़ा-थोड़ा आत्मगौरव भी अब हम हिन्दी वालों में यहां भी आने लगा है। स्वयं को भारतीय कहते हुए अब हम गौरव अनुभव करने लगे हैं। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की पहचान कराते हुए अब हम में वैसी हीन-भावना नहीं दिखती। हिन्दी की सब से बड़ी शक्ति का आधार है, उसका वैज्ञानिक आधार। आने वाले विश्व की भाषा वही बनेगी, जिसका आधार विज्ञान संगत होगा जो कम्प्यूटर की भी भाषा होगी। इस दृष्टि से हिन्दी संसार की इनी-गिनी भाषाओं में से एक है।

हिन्दी का प्रचार-प्रसार अनेक विघ्न-बाधाओं के बावजूद निरन्तर हो रहा है। दूब की तरह है हिन्दी, मिट-मिटकर भी पनपने की जिसमें अद्‌भुत क्षमता है। भाषा-विज्ञानियों का अनुमान है कि आने वाले समय में दुनिया में हिन्दी से भी अधिक प्रसार होगा—देवनागरी लिपि का। 21वीं शताब्दी भारत की हो या न हो, पर हिन्दी की अवश्य होगी!

हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य के सम्बन्ध में युग दृष्टा विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था—

'जिस हिन्दी-भाषा के खेत में, भावों की ऐसी सुनहली फसल लहलहा रही है, वह भाषा भले ही, कुछ दिन यों ही उपेक्षित पड़ी रहे, पर उसकी स्वाभाविक उर्वरता अक्षुण्ण रहेगी। वहां फिर हरीतिमा के सुदिन आएंगे और पौष मास में फिर 'नवान्न उत्सव' आयोजित होगा!'

इस 'पावस-पर्व' पर इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, उस पर सारे देश का अधिकार है।

—सरदार वल्लभभाई पटेल

अंग्रेजी से अनूदित

पुश्किन की कविता

(सन् १८२९ में रचित)

कान फोड़ती सड़कों पर भी
मैं भटका हूं
मन्दिर में भक्तों की भीड़ जहां पर
या उतावले बुलकों में
घुस कर देखा है
और न जाने क्या-क्या
कितना कुछ सोचा है।
ये साल गुजरते जाएंगे
हम जहां खड़े हैं
वहीं दिखाई देंगे
किन्तु उतारे जाएंगे
अहं की ऊंची मीनारों से नीचे
और किसी का समय
आन पहुंचा है।
दूर अकेला खड़ा ओक
लगता जंगल का राजा
जाने कितनी लम्बी मेरी उम्र
उसे वह काट जियेगा
मेरे पिता पितामह की भी
लम्बी सारी उम्र
जैसे वह काट जिया है।
प्यारे नन्हे बालक को
जब दुलारता हूं
लगता कि विदाई मांग रहा हूं
यह कह कर
'लो मेरी जगह संभालो
मेरे पतझर की गोद खिलो।'

हर दिन हर साल
गुजरता अपनी चाल
पास आती-जाती है मौत
हर साल ढूंढता हूं
अपनी बरसी का दिन ।
कहां होगा मौत से मिलन
खूनी रंगी धरती पर
या विचरण करते
सागर की उत्ताल तरंगों पर?
अचरज क्या
निकट की घाटी में जो बिखरें
मेरे ठण्डे धूल-धूसरित फूल।
कहीं गल जाये
यों तो जड़ देह
क्या फर्क पड़ेगा
सब एक बात है
कितना अच्छा हो पर
अपनी प्यारी धरती के आंचल में

सो जाऊं।
वहां मरघट के द्वार
खेलते कितने यौवन
निसर्ग प्रकृति-प्रांगण में
चमक रहे
अनन्त सुन्दरता के फूल।

हिन्दी अनुवादक—डॉ० सुरेश

वर्षा

—रीना पट्टनायक कटक

बड़ी दुष्ट, शैतान
लड़की है वर्षा।
आप बुलएँ या न बुलाएँ
पैरों में बांध कर नूपुर
तुरत चली आयगी पास।
आप कहें या न कहें
रिमझिम के स्वरों में

मनांगन के मध्य हो जायेगी
नृत्यरता, मदमरत्ता मग्न।
आप माँगें या न माँगें
शब्द को दे देगी प्रत्यय
स्वप्न को दे देगी हरीतिमा
आकाश को आवेग
और धरित्री को दे देगी चूमा।
आप जान भी न पायेंगे
मनरंजित मदमत्त कर देगी
स्वच्छ स्नेहिल सा देकर स्पर्श
बड़ी नटखट और अल्हड़सी
लड़की है वर्षा।

.....

'चन्द्रभागा'

अयस्कांत महापात्र अनुगुल

होकर पूर्ण समर्पित
तुम संग यापित करते रात
तुम्हारी ही आयु के मद से
होकर मदमत्त
तुम्हारी ही जरायु में
सहसा जब एक कवि होकर
हो जाता हूँ जन्म
तुम्हारा शरीर लगता है सागर
और वक्ष बन जाता कोणार्क।
सारी रात व्यर्थ मैं
रहता हूँ चेष्टित
मंदिर के शीर्ष को कर देने पूर्ण
किंतु हो जाता धर्मपद
नीले सागर की उताल तरंगों पर
जाता हूँ कूद
हो जाती चिर निद्रित
बन जाता कविता।

.....

हिन्दी अनुवादकः प्रद्युम्नदास वैष्णव 'विद्या वाचस्पति'

संकल्प की ओर

—क्षितिज शर्मा

पुस्तक का नामः संकल्प की ओर, लेखक; प्रेम सिंह नेगी, प्रकाशक; श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, द माल, अल्मोड़ा, यू०पी० मूल्य; 95 रु०, पृष्ठ; 360.

हिंदी में नई कहानी के दौर से ही कथा साहित्य में एक समानान्तर धारा भी चलती रही है, जिसे आंचलिक कथा साहित्य के नाम से जाना जाता रहा है। एक तरफ कथा में व्यक्तिगत त्रासदियों, संत्रासों, कुंठाओं और आंतरिक वेदनाओं को उठाया जा रहा था तो दूसरी तरफ रेणु, शैलेश मटियानी जैसे कथाकार अपने व्यापक और परिपक्व अनुभवों के साथ आंचलिक जीवन को उसके भौगौलिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ सामने लाने में जुटे हुए थे। आंचलिक कथा धारा ने यह सिद्ध किया कि व्यक्ति अपने परिवेश और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अलग कुछ भी नहीं होता। उसकी सारी दिनचर्या, कार्यकलाप, सोम और दृष्टिकोण को बनने में उसका परिवेश मददगार होता है, उसको समझने में भी सहायक होता है। उसकी पहचान का चिह्न भी यही हैं।

बाढ़ के वर्षों में हमने देखा कि हमारी श्रेष्ठ औपन्यासिक रचनाएं वही हैं, जिनमें आंचल एकपात्र के रूप में मौजूद है। संभवतः इसका कारण यह रहा कि व्यक्ति को संपूर्णता में जानने के लिए उस स्थान को जानना भी जरूरी है, जिससे वह जुड़ा है या जिसके वातावरण में वह इस कटर घुलमिल गया है कि उससे बाहर अकेलापन महसूस करता है—अपनी स्वाभाविकाता भी खो देता है।

आंचलिक उपन्यासों की कड़ी में प्रेम सिंह नेगी का पहला उपन्यास आया है, "संकल्प की ओर"। प्रेम सिंह नेगी ने उपन्यास की विषयवस्तु ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में तलाशी है, पर इतिहास यहां उतना ही है, जितना समस्या को उठाने और बताने के लिए जरूरी था। कथा का गठन दूसरे-तीसरे दशक में कुमाऊं क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आंदोलन को केन्द्र में रखकर किया गया है तब अंग्रेज अफसरों को अधिकार था कि वे दौरों पर जाते वक्त सामान ढोने के लिए स्थानीय लोगों से कुली बेगार ले सकते हैं। हर घर को कुली-बेगार देनी पड़ती थी। यह जबरन लगा कानून था। इसमें अफसरों के "कामोड" तक ढोने होते थे। कुमांऊनी जीवन पर अभिशाप बने इस काले कानून के खिलाफ तब वहां एक आंदोलन उठा था। यह स्वाधीनता की चेतना और स्वाधीनता संग्राम का पर्याय बन गया था।

मूल कथा के इर्द-गिर्द जो उपकथाएं हैं, वे समस्यों को गहराई से रेखांकित करने के अलावा तत्कालीन समाज व्यवस्था और राजतंत्र से जकड़े जन-जीवन का बारीकी से विश्लेषण भी करते जाते हैं। अंग्रेजी शासन ने अपने शिकंजे को मजबूत बनाए रखने के लिए अपने विश्वासपात्रों को "जमींदार" आदि के समानार्थक "थोकदार" "मालगुजार" जैसी उपाधियां दी हुई थी। इन विश्वास पात्रों को दिए गए अधिकार, एक तरह से शासन के औजार थे। स्थानीय जनता के लिए शासन के विरुद्ध खड़े होने से पहले इन उपाधिधारियों के खिलाफ आवाज बुलंद करनी थी। साधनविहीन निरीह प्राणियों के लिए यह सबसे कठिन काम था।

कथा नायक मोहना अधिकार संपन्न इसी वर्ग के थोकदार का बेटा है। मोहना पढ़ा-लिखा है। चाहता तो उसे बड़े ओहदे की नौकरी मिल सकती थी। पर पढ़ाई के दौरान स्वाधीनता की भावना उसे प्रेरित करती है कि उसका पहला उद्देश्य आजादी पाना और अपने लोगों में एक चेतना पैदा करना है। इसलिए वह वापस गांव आता है और आंदोलन का सूत्रधार बन जाता है।

कथा यहां आंदोलन का वरदान या नारों के बीच नायक द्वारा इकट्ठी की गई भीड़ मात्र नहीं है। इतिहास में जाने की बजाय लेखक उन पात्रों की ओर गया है जो जीवन दवाओं के कारण आंदोलन में बाधक बन रहे थे या जो परिस्थितियां और कारण उसकी चेतना को प्रबल और प्रगाढ़ कर विरोध की भावना को पका रही थी। इसी में तात्कालिक समाज, उसकी परम्पराएं, उसके संस्कार, रीति-रिवाज पूरी जीवन पद्धति के साथ उभरने लगते हैं। लगता है कि वह एक क्षेत्र विशेष का जीवन है, उसके बिना न आंदोलन के उस रूप को समझा जा सकता था, न चरित्रों की विश्वसनीयता को पकड़ा जा सकता था।

यही कारण है कि परतिमा जैसी अनपढ़ और ग्रामीण महिला जो कानून और आंदोलन की पृष्ठभूमि से लगभग अपरिचित थी, जब मोहना के संपर्क में आकर जन जागृति की मुख्य भूमिका निभाने लगती है, तब उसमें परिपक्व नेतृत्व के गुण कहां से आ गए के कारण नहीं ढूंढने पड़ते।

उपन्यास में कथा का फलक बड़ा नहीं है, उसका परिवेश और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बड़ी है। इन दोनों में संकलन बनाये रखने के लिए कथा कहीं-कहीं पर आवश्यकता से अधिक विस्तार पाई गई हैं—बिखराव भी आ गया है तथा पात्रों का पारस्परिक व्यवहार और कार्यकलाप एक आदर्श के तहत संभावित होते से जान पड़ते हैं। सहयोग, त्याग और बंधुत्व का आदान-प्रदान अतिरंगता ओढ़े हुए, आदर्शवाद की स्थापना करते हुए से लगते हैं पर यह तभी लगता है जब कथा मूल आधार से टूटने लगती है। गैर से देखें तो यह आदर्शवाद आरोपित भी नहीं हैं—तब स्वतंत्रता की चेतना ही एक आदर्शवाद थी। सामने जो मिशन था वह किसी सिद्धांत और आदर्श के बिना संभव नहीं था। आंदोलन से जुड़े लोग निजी कार्य-व्यवहार में इससे अलग ऐसे हो सकते थे।

कथा की विशेषता यह है कि वह नायक के आंदोलनकारी रूप को ही केन्द्र में नहीं रखता, उसके नितांत व्यक्तिगत पहलुओं को भी सामने लाता है। उससे उसकी इच्छाशक्ति का भी पता चलता है और मानवीय दुर्बलताओं का भी। परतिमा के प्रति उसका लगाव व्यक्तिगत समस्या थी, पर मोहना का उदेश्य स्वाधीनता था और उस समय की समाज व्यवस्था के हिसाब से परित्याक्ता से पुनर्विवाह उसे सामाजिक विरोध के सामने ला सकता था जो आंदोलन के लिए इकट्ठी की गई जनशक्ति को क्षीण कर देता। इसलिए इस संबंध को वह उस परिणति तक नहीं ले जा सका, जहां नए मूल्यों की स्थापना कर, परतिमा से विवाह कर सकता। परतिमा उसकी दुर्बलता भी बनी और ताकत भी। अंत में कीमत परतिमा को ही चुकानी पड़ी। मोहना भी इस अपराध बोध से कभी उभर नहीं पाया।

प्रसंगवश

—सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा

पुस्तक का नामः "प्रसंगवश" लेखिकाः मणिका मोहिनी, प्रकाशकः वैचारिकी संकलन, 2542, नाईवाड़ा, दिल्ली, मुद्रकः शांति मुद्रणालय, विश्वास नगर, दिल्ली—34 मूल्यः 70 रुपये

हिंदी की चर्चित लेखिका "मणिका मोहिनी, की पुस्तक "प्रसंगवश" एक सफल निबंध-संग्रह है। पुस्तक का प्रथम संस्करण 1995 में प्रकाशित हुआ है। पुस्तक के माध्यम से लेखिका ने हिंदी के जाने माने लेखकों यथा—राजेन्द्र यादव, मन्नु भण्डारी, कमलेश्वर, प्रभाकर माचवे, मालती आदि साहित्यकारों के संस्मरणों का चित्रण किया है।

"कमलेश्वर की गंगा और लोगों का स्नान" के माध्यम से उन्होंने प्रचलित सामाजिक समस्याओं को उभारा है। "अन्याय देव शिशु के साथ" में ऐसे लेखकों की प्रताड़ना की है जो साहित्य की आड़ में लोगों के मन में संवेदना पैदा करके धन की याचना करते हैं। "एक लोमहर्षक मुकदमा" में लेखिका ने "गयाना" की सामाजिक स्थिति का उल्लेख करते हुए वहां की महिलाओं के शोषण और उन पर हो रहे अत्याचारों को बखूबी चित्रित किया है। उन्होंने इस तथ्य को भी चित्रित किया है कि भारत की तरह वहां वैवाहिक संबंधों को पवित्र नहीं माना जाता। सामाजिक प्रचलन के अनुसार गैर वैवाहिक संबंधों को न अपवित्र समझा जाता है न ही अनैतिक। स्त्री-पुरुष साथ रहने के लिए कानूनी शादी की औपचारिकता में पड़ना उचित नहीं समझते।

"उसे लेखक होने ने मारा" शीर्षक कहानी में रमेश बक्षी के जीवन में आई कई औरतों के प्रसंगों का वर्णन किया गया है। लेखिका ने बहुत ही सहज ढंग से उसे "औरतबाज" से मुक्त करके "घरबाज" बनाने की तार्किक वकालत की है।

महानगरों में आजकल विशेष रूप में प्रचलित सामान्य बोलचाल की मिश्रित भाषा का उन्होंने अपने इस निबंध संग्रह में इस्तेमाल किया है। अंग्रेजी के बोलचाल के शब्दों का वाक्यों में खुलकर उपयोग किया गया, जिससे भाषा शैली और अधिक प्रवाहमय हो गई है। संग्रह में अंग्रेजी के आम प्रचलित शब्दों यथा "जैक आफ आल मास्टर आफ नन", "थिंक आफ दि डेविल एंड ही इज देयर" "देहली विद बाम्बे पीपल," "बट ए कम्बीनेशन", डिसएप्रूव", "एलर्जिक", "रूटीन", सीरियलस", "एप्रोचेबल", "बोर", "ग्लैमर", सीरियस" आदि।

पुस्तक का शीर्षक "प्रसंगवश" उपयुक्त और सटीक है परन्तु मुखपृष्ठ पर पुस्तक के नाम में मुद्रण संबंधी त्रुटि बहुत खटकती है।

विहंगम योग

—माला गुप्ता

पुस्तक का नामः विहंगम योग—अर्थात् दि साईंस आफ कान्ससनेस लेखकः श्री मदन मोहन राय, प्रकाशकः मेहरचन्द लक्ष्मनदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्याः 286 पृष्ठ, आफ़सेट प्रिन्टिंग, मूल्यः 40 रुपये, प्रकाशन वर्षः 1991।

श्री मदन मोहन राय द्वारा लिखित पुस्तक "विहंगम योग (अर्थात्—दि साईंस आफ कान्ससनेस"), अर्थात् विहंगम योग—चेतन विज्ञान, को मैंने आधोपान्त पढ़ा। अनेक विशेषताओं के साथ यह शोधपूर्ण ग्रन्थ अपने नये परिवेश में पाठकों के समक्ष आया है।

इस चेतन विज्ञान विहंगम योग का सर्वोत्कृष्ट ज्ञान आज से करीब 5000 वर्ष पूर्व महाभारत काल तक मंत्रद्रष्टा ऋषियों के पास था। महाभारत युद्ध के पश्चात काल क्रम से यह ज्ञान धीरे-धीरे लुप्त प्राय होने लगा, जिसका सूत्र पुनः शून्य शिखर आश्रम हिमालय के आदित्य विहंगम योगी महर्षि सदाफल देव जी ने अपने अथक प्रयत्नों एवं 17 वर्षों की कठोर तपस्या द्वारा अनुभव साक्षात्कार करके पुनः स्वचालित किया। विद्वान लेखक ने, जो इस विज्ञान का एक अनुरागी साधक भी है, सद्गुरु सानिध्य में रहकर अपने प्रयास द्वारा सिक्किम प्रदेश के हिमालवी पर्यावरण में सद्गुरु कृपा से अनुभव साक्षात्कार करके इस ज्ञान को अत्यन्त रोचक एवं वैज्ञानिक ढंग से लिखा है। यह एक अत्यन्त श्रेष्ठ एवं सराहनीय कार्य है। इस कार्य को निष्पादित करके श्री राय ने भारतीय संस्कृति के एक लुप्त होते हुए विज्ञान को पुनः जागृत किया है। इसी ज्ञान को बालविरागी ज्ञान रसिक शुकदेव, मिथिला के विदेह राजा जनक, गार्गी, भृ, आदि अनेक महान ऋषियों ने अनुसरण करते हुए अभीष्ट परमपद को प्राप्त किया था।

समस्त वेद, वेदाङ्ग, उपनिषद एवं तंत्रशास्त्रों में योग परक ज्ञानों की जो शृंखला है उन समस्त राशियों में मात्र विहंगम योग ही चेतन विज्ञान के रूप में प्रयुक्त हुआ है जो मुक्ति पथ को प्रशस्त करता है। योग वाङ्मय में साधना के दो धरातल हैं। एक है जड़ और दूसरा है चेतन। आज आधुनिक भौतुकी ने जिस विज्ञान का आश्रय लेकर वर्तमान पराकाष्ठा को प्राप्त किया है वे सभी उपलब्धियां मन, बुद्धि, इन्द्रियों अथवा जड़ उपकरणों के आधार पर की गई है और किये जाते हैं। इन समस्त प्रयोगों के आधार जड़ परमाणु है, उन्हीं के संयोग वियोग से सभी क्रिया कलाप चलते हैं। और चलते रहेंगे। इनमें अभी चेतन विज्ञान के स्रोतों का प्रयोग नहीं है। विहंगम योग की क्रियायें अथवा योग चेतन धरातल से की जाती है जिसके आधार आत्मा तथा अक्षर है जो दोनों चेतन पदार्थ है। इनमें स्वयं इच्छा, क्रिया, ज्ञान आप रूप से विद्यमान है। इस साधना के आधार से चेतन परमाणुओं में संयोग वियोग की क्रियायें संचालित होती है। आत्मा की किरणों को वेदी तथा उपनिषदों में चितिकला, चितिशक्ति, चिति, किरण, चितिज्ञान नामों से अभिहित किया गया है। जब चेतन किरणों को जड़ जगत में प्रयोग किया जाता है तब जड़ परमाणुओं और जब चेतन

मंडल में प्रयोग किया जाता है तब चेतन मण्डल में परमाणुओं में अन्तर्क्रिया अक्षर के माध्यम से जो एक चेतन बाईब्रेटिंग फोर्स है, उसके द्वारा होती है और तब आत्मिक शक्ति अपने अणुत्व को त्यागकर विभुत्व को प्राप्त कर लेता है और चेतन परमाणुओं में संयोग वियोग करके अपने अभीष्ट समस्त कार्यों को निष्पादित करता है।

इस विज्ञान का गुरु स्वयं नित्य अनादि सद्गुरु है जो चारों युगों में गुप्त अथवा प्रकट होकर इस अखण्ड ज्ञान का उपदेश करता है। नित्य अनादि सद्गुरु को वेदों में अज, विभु, सन्त सन्तपति, सुकृतदेव, हिरण्यगर्भ, अमानव पुरुष ज्योति आदि नामों से अभिहित किया गया है।

(i) श्रेते पन्थाः सवितः पूर्व्या सोऽरणवः सुकृता अन्तरिक्षे।
तेमिनों अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहिदेव।

(ii) त्वां दूतमग्ने अमृतं युगे युगे हव्यवाई दधिरे पायुमीड्यम।
देवासश्च मर्तासश्च जागृर्वि विभु विश्वपतिं नमषा निसेदिरे।
—ऋग्वेद—6 / 15 / 8

परमाणुओं में संयोग वियोग की क्रियायें सातो लाकों (भूः भुवः, स्वः, महः जनः तपः एवं सत्यलोकों) में आत्मिक चेतना एवं प्राण संचार द्वारा की जाती है जो अत्यन्त गुप्त होने के साथ-साथ गुस्त्राम्य भी है। इस ज्ञान के अभ्यास एवं प्रयोग द्वारा अन्याय, योग ऐश्वर्य एवं विभूतियों के अतिरिक्त आज जो विश्व में नाना प्रकार के प्रपचादि, वर्गदन्द, भेदभाव एवं अशांति का वातावरण छाया हुआ है उनसे उपरम् होकर विश्वशांति स्थापित करने में अत्यधिक सहायक होगा जिससे व्यष्टि एवं समृष्टि दोनों सत्ताओं में आध्यात्म के साम्राज्य के साथ ही साथ मानव समाज में त्रिताप दुखों की निवृति होकर इस वसुन्धरा पर सुख समृद्धि से भरपूर स्वर्ग का साम्राज्य होगा। तीसरे यह ग्रन्थ अपने विषय पर एक महान निधि है जिसमें वेदों, उपनिषदों तथा सन्त साहित्यों से चुने हुए अनेक दुर्लभ सूत्र दिये गये हैं जो आध्यात्म विज्ञान में लगे हुये अनुसंधान कर्ताओं के लिए पथ प्रदर्शक भी होगा। 'अक्षर' तत्व जो एक स्वतंत्र चेतन सत्ता है वह एक विलक्षण तत्व है और वेदों, उपनिषदों का प्राण एवं समस्त सृष्टि का नियामक एवं संचालक है, जिसके बारे में आज तक विश्व को पता नहीं है जो आज भी रहस्यमय बना हुआ है। उस पर भी अनेकों वैदिक सूत्रों को देकर सद्गुरु प्रणीत ज्ञान को पाठकों के समक्ष रखते हुए कीर्तिमान् स्थापित किया है, जो आध्यात्म विषयक खोजी विद्वानों के लिए एक निधि के रूप में कार्य करेगी, जो अत्यन्त दुर्लभ एवं अप्राप्य है। आज के वैज्ञानिकों ने जैसे जड़ परमाणुओं की खोज करके विविध विज्ञानों का उत्थान किया है, इस विहंगम योग के माध्यम से 'अक्षर' तत्व, स्कम्भ तत्व एवं चेतन परमाणुओं को पकड़कर उनमें संयोग-वियोग की क्रियाओं द्वारा त्रिलोकी को भी जीत सकता है। यह चेतन विज्ञान की महान गरिमा है।

प्रयाग विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम०ए० की उपाधि प्राप्त करने के साथ ही साथ श्री राय विश्वविद्यालय स्तर के एक अच्छे एथलीट भी रहे हैं। साथ ही पुलिस अधिकारी के रूप में सेवायुक्त होते हुए भी आध्यात्म विज्ञान में इतनी गहरी पैठ है, यह उनके व्यक्तित्व की विलक्षणता का प्रतीक है जो आज के युग में अत्यन्त दुर्लभ है। यह सद्गुरु कृपा से ही संभव हो सका है। श्री राय केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो में उप-अधीक्षक के पद पर सेवारत होते हुए कुशल अन्वेषणकर्ता के साथ ही साथ एक कुशल प्रवक्ता भी हैं। इनके विशेष प्रसंशनीय सेवाओं के लिए भारत सरकार ने इन्हें पुलिस पदक से भी सम्मानित किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ को भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय ने आर्थिक सहयोग द्वारा प्रकाशित कराया है।

वेतन भोगी करदाता, समस्या और समाधान

—नेत्र सिंह रावत

पुस्तक का नाम: वेतन भोगी करदाता समस्या और समाधान, लेखक: श्री बी० एन० गोयल, प्रकाशक: मैसर्ज ब्रह्मा विष्णु महेश ब्रादर्स 619 / 30, शाम नगर, ककरोई रोड, सोनीपत-131001 (हरियाणा), मूल्य: 80 /- रुपये।

हमारे देश में करारोपण की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। कर सरकार की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, वैसे भी इस स्रोत से सरकार को सर्वाधिक राजस्व की प्राप्ति होती है तथापि करदाता का यह प्रयास रहता है कि वह सरकार को कम-से कम कर अदा करे। लेकिन यहां यह याद रखना होता है कि कर की चोरी करना कर अधिनियम के तहत एक दण्डनीय अपराध है। अतः कर अधिनियम के तहत ही करदाता यह प्रयास कर सकता है कि वह कम-से कम कर अदा करे। इसके लिए उसे उक्त कर अधिनियम की जानकारी आवश्यक है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने उन सभी बातों का समावेश "आयकर से छूट तथा राहत" अध्याय में किया है जिनसे करदाता अधिक से अधिक कर छूट प्राप्त कर सकता है। कर्मचारियों के वेतन से कर योग्य आय निकालने के लिए किन-किन घटकों को शामिल किया जाए तथा इसके लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, इसकी विस्तृत जानकारी पुस्तक के अध्याय 10 व 11 में दी गई है। प्रायः कर योग्य आय की गणना के लिए अधिकतर कर्मचारी लेखा अधिकारी के ऊपर ही निर्भर रहते हैं, लेकिन लेखक ने विविध उदाहरण देकर यह सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है कि कर्मचारी स्वयं भी अपनी कर योग्य आय की गणना कर सकते हैं और आवश्यक निवेश / बचत करके कर छूट भी प्राप्त की जा सकती है। इस दिशा में पुस्तक का "कर बचत योजना" नामक अध्याय विशेष महत्वपूर्ण है।

करदाताओं को कर संबंधी विविध फार्मों को भी भरना अनिवार्य होता है। करदाताओं की सुविधा के लिए इस तरह के कुछ फार्म पुस्तक के अन्त में दिए गए हैं। इन फार्मों के महत्व आदि के बारे में भी पुस्तक में आवश्यक उल्लेख किया गया है। इससे पुस्तक और अधिक उपादेय बन गई है। लेखक ने पुस्तक को अद्यतन करने के उद्देश्य से इसमें वित्त अधिनियम 1995 के तहत किए गए वित्तीय वर्ष 1995-96 के लिए मुख्य-मुख्य परिवर्तनों का भी प्रस्तुत पुस्तक में समावेश किया है।

कर संबंधी बारीकियों को सरलता से समझने के लिए कर्मचारी वर्ग के लिए यह पुस्तक निःसंदेह उपयोगी है। इसके अलावा यह वाणिज्य के विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी है। पुस्तक में उपलब्ध ज्ञानवर्धक जानकारी के कारण ही वित्त मंत्रालय ने इस पुस्तक के लिए लेखक को पुरस्कृत भी किया है। पुस्तक की साजसज्जा तथा कवर पृष्ठ का डिजाइन आदि आकर्षक है।

'तटस्थ' (त्रैमासिक) का 'सुधेश विशेषांक'

—डा॰ अंजनी कुमार दुबे 'भावुक'

तटस्थ (त्रैमासिक), सम्पादकः डा॰ कृष्ण बिहारी सहल तथा जसबीर सिंह 'रहबर' मूल्यः 20.00 रु॰, प्राप्ति स्थानः सहज कविता कार्यालय, 1335 पूर्वांचल, जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय, नई दिल्ली-110067

सीकर (राजस्थान) से प्रकाशित होने वाले नयी जीवन-चेतना के त्रैमासिक 'तटस्थ' के मार्च 1994 का 'सुधेश विशेषांक' देखकर एक सच्चे और सहज साहित्यकार के कृतित्व का परिचय मिला। वादों-गुटबंदियों के मकड़-जाल में फंसा हिन्दी साहित्य, जनप्रिय भारतीय साहित्य कम; पार्टी सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार का पोस्टर अधिक बन गया है। इस गुटबाजी में प्रतिभाहीन और शब्दों को जोड़ने-तोड़ने वाले भी तथाकथित वादी साहित्यकारों की कृपा से अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों तक पहुंचे हैं। ऐसे लोगों को देखकर ही एक निष्पक्ष आलोचक ने एक टिप्पणी करते हुए कहा था कि "पुरस्कार स्वयं इन लोगों से लज्जित हो गया है, लेकिन इसे लेने वालों को लज्जा नहीं आती।" ऐसी स्थिति में डा॰ सुधेश के रचनात्मक व्यक्तित्व ने बिना किसी आडम्बर के अपनी हड्डियों के बल पर आगे बढ़ते हुए अपनी सशक्त रचनाधर्मिता के द्वारा समकालीन हिन्दी कविता में जो स्थान बनाया है, वह सच्चे साहित्यकारों के लिए मार्गदर्शक है। इसका प्रमाण 'तटस्थ' का यह विशेषांक भी है, जिसमें इसके सम्पादक डा॰ कृष्ण बिहारी सहल और जसवीर सिंह 'रहबर' स्वयं स्वीकार करते हुए कहते हैं कि—"कवि और समीक्षक डा॰ सुधेश के सम्मान में यह संकलन हमने उनके प्रेम के वशीभूत होकर निकाला है या व्यक्ति पूजा के लिए, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 'पहुंचे हुए नामों के चक्कर में न पड़कर हर वर्ग और स्तर के लोगों से सामग्री मांगी गयी।...हम अपनी खुद की, पूजन-अर्चन सामग्री से अपने प्रिय की पूजा कर रहे हैं, न कि बुद्धिजीवी बने बैठे हुओं की भांति किराये के विचारों से।—

बौद्धिक वर्ग है क्रीत दास
किराये के विचारों का उद्‌भास। (मुक्तिबोध)" (संपादकीय)

आलोचक और कवि रूप में सुधेश ने अपनी निर्विवाद पहचान बनायी है। 'तटस्थ' के माध्यम से उनका जो रचनात्मक व्यक्तित्व उभरा है, वह आज के साहित्यकारों से उनको अलग करता है, क्योंकि इसके लेखकों में कुछ नये नाम हैं और कुछ ऐसे नाम भी हैं जो हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक पुरुष हैं। दोनों ही प्रकार के लेखकों ने सुधेश के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बेबाकी से प्रकाश डाला है और इस विशेषांक के माध्यम से भारत का लगभग हर गुट विहीन बुद्धिजीवी डा॰ सुधेश से जुड़ा हुआ है। इससे सुधेश की अप्रतिम पहचान तथा लेखकीय ताकत का भी अंदाजा लगाया जा सकता है। सम्भव है उनकी रचनाधर्मिता के अतिरिक्त उनका सहज-सरल व्यक्तित्व भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहा हो। जगन्नाथ पंडित, जशबीर सिंह 'रहबर', तारिणी चरण दास, इंदु प्रकाश पाण्डेय, कृष्ण बिहारी सहल, अरुण प्रकाश मिश्र, राम सजन पाण्डेय, वेद प्रकाश अभिताभ, रामदरश मिश्र, रमेश कुंतल, मेध, नारायणदास समाधिया, हरीश कुमार जैसे विशिष्ट साहित्यकारों ने सुधेश के रचनात्मक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला तो वहीं धर्मेन्द्र गुप्त, राजीव सक्सेना, सुजाता माथुर, ज्योत्स्ना, दिनेश चंद द्विवेदी, भावुक जी द्विवेदी आदि जैसे संघर्षरत रचनाकारों ने भी पूरी साफगोई से उनके कृतित्व की चर्चा की।

आलोचना और कविता के दोनों क्षेत्रों को मिलाकर डा॰ सुधेश की अब तक कुल सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें आलोचना की 'आधुनिक हिन्दी और उर्दू कविता की प्रवृत्तियां', 'साहित्य के विविध आयाम', 'कविता का सृजन तथा मूल्यांकन' तथा 'साहित्य चिंतन' हैं। काव्य संकलनों में—'फिर सुबह होगी ही', 'घटनाहीनता के विरुद्ध' तथा 'तेज धूप' हैं। सुधेश का आलोचना-साहित्य साहित्य के विविध प्रसंगों से संबंधित उसके सटीक और वैज्ञानिक मूल्यांकन से संबंधित है जबकि तीनों काव्य-संग्रह उनके कवि मन में समय-समय पर उपजे भावों-विचारों की एक निश्चित विकास रेखा के रूप में देखे जा सकते हैं। इन तीनों काव्य-संकलनों का मूल स्वर आशा (फिर सुबह होगी ही), विद्रोह (घटनाहीनता के विरुद्ध) और क्रांति (तेज धूप) का है। डा॰ जगन्नाथ पंडित के अनुसार—डा॰ सुधेश की कविताएं जनवादी सोच और संवेदना की कविताएं हैं। वे कहीं सुविधापरस्त बुद्धिजीवियों को ललकारती हैं, कहीं कर्म का संदेश देती हैं, कहीं संघर्षों का पैना बनाती हैं, कहीं जनता को अपने हक के लिए सजग करती हैं और उन नेताओं को बपर्द करती हैं, जो जिंदगी भर गद्दी से चिपके रहना चाहते हैं।" (पृ॰ 12) इसका खुलासा करते हुए डा॰ गुरुचरण सिंह कहते हैं कि —"सुधेश की कविताएं राजनीतिक, प्रचारात्मक या प्रतिबद्ध कविताएं नहीं हैं, बल्कि कवि की प्रगतिशील चेतना को भी अभिव्यक्ति देती हैं। इस चेतना का सम्बन्ध न तो प्रगतिवादी विचारधारा से है और न जनवादी से।"(पृ॰ 28)

कवि पूर्णतः आशावादी और समाजसापेक्ष चिन्तन करने वाला है। लाख मुश्किलों में भी उसका आत्मविश्वास नहीं डिगता। इसीलिए तो कवि कहता है—

"सौ पतझड़ के बावजूद, मैं वहीं खड़ा हूं।
मेरी आंखों में बसंत है, सूखी बाहों में, बल अनंत है।
(घटनाहीनता के विरुद्ध, पृ॰ 57)

उनकी सार्थक रचनाधर्मिता पर, उनकी सहज काव्य कलात्मकता पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता। उनकी लगभग समस्त कविताएं ताजगी से भरी हुई हैं। विषय-वस्तु की विविधता में भी कहीं रुखापन नहीं आ पाया है। कवि की निजी अनुभूतियों से समन्वित होकर भी ये रचनाएं आम जनता की लगती हैं और यही लगना कवि के कवि होने का प्रमाण है। अपनी काव्य-रचना प्रक्रिया पर चिंतन करते हुए कवि सुधेश कहते हैं कि— "कविता की प्रेरणा कब और कहां मिलेगी, कहा नहीं जा सकता। इसके लिए कवि को अपने कान और आंखें खुली रखनी होंगी।...मेरी कविताओं का लक्ष्य प्रायः सामान्य पाठक रहा है। मैं नहीं समझता कि मैंने अभिजात वर्ग के विशिष्ट पाठकों की रुचि को तुष्ट करने वाली कविताएं लिखीं। मेरी दृष्टि में अक्सर आम आदमी रहा और उसके सुख-दुःख को मैंने अपना सच्चा सुख-दुःख समझा।" (पृ॰ 129-131)

सर्जक और आलोचक दोनों ही रूपों में सुधेश की प्रतिष्ठा रही है। डा॰ रमेश कुंतल मेघ के शब्दों में—"पुस्तक (कविता का सृजन और मूल्यांकन) अपनी सहजता और स्वकीयता से हमें आकर्षित करती है। इसमें पंडिताऊपन का बोझ भी नहीं है (पृ॰ 113)। डा॰ सुंदर लाल कथुरिया का विचार है कि 'डा॰ सुधेश किसी बड़े नाम से कहीं भी

आतंकित नहीं हुए हैं। चाहे वे नगेन्द्र हों या नामवर, शिवदान सिंह चौहान हों या नंददुलारे वाजपेई। उन्होंने उन सभी के मतों का जम कर खण्डन किया है। उन्होंने प्रायः वही लिखा है जिससे वे सहमत हैं...हम उनकी मौलिकता, निजी दृष्टि, विवेचन क्षमता तथा लेखकीय ईमानदारी पर संदेह नहीं कर सकते।" (पृ॰ 117) यह साहस आज किस में है जो नामवर सिंह की बातों का खण्डन करे। किन्तु डा॰ सुधेश ने किया। इसका परिणाम यह हुआ कि डा॰ सुधेश गुटबंधी के शिकार हुए। अपने स्वयं के साहस और रचनात्मक शक्ति के द्वारा डा॰ सुधेश ने जो अपनी अलग पहचान बनाई है, वह एक अन्यतम उदाहरण है। डा॰ सुधेश के इन्ही व्यक्तिगत गुणों की चर्चा करते हुए श्री कौशल कुमार कहते हैं कि, धैर्यपूर्ण दृढ़ता और सक्रियता की ऊर्जा का वह कोश उनके व्यक्तित्व में समाहित है जो उन्हें स्वयं के बल-बूते पर लक्ष्य तक पहुंचाने में पूर्णतः सक्षम है। Where there are big trees, small plants do not grow. के डा॰ सुधेश अपवाद हैं। वह न केवल उगे, वरन् सुविकसित और सुस्थापित हुए ।" (पृ॰ 136)

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'तटस्थ' का 'सुधेश विशेषांक' कवि सुधेश के बहु आयमी व्यक्तित्व को चित्रित करता है। 'तटस्थ' के सम्पादकद्वय भी विशेष बधाई के पात्र हैं जिन्होंने ऐसे विशिष्ट साहित्यकार का सम्पूर्ण परिचय आम पाठकों को कराया।

विश्व में हिंदी

—डा॰ विजय अग्रवाल

पुस्तक का नाम: विश्व में हिंदी, खण्ड-1, विश्व में हिंदी, खण्ड-2, लेखक: श्री हरिबाबू कंसल, प्रकाशक: सुधांशु बंधु, ई-9/23, वसंत विहार, नई दिल्ली-57, मूल्य: 90.00 (खण्ड-1), 144.00 रु॰ (खण्ड-2)

हिन्दी ने राष्ट्रभाषा के रूप में करीब 45 वर्ष की यात्रा पूरी कर ली है। इस दौरान जहां उसे कुछ विरोध का सामना करना पड़ा, वहीं इसके पक्ष में भी कुछ आन्दोलन हुए। विरोध और समर्थन के घात-प्रतिघात के साथ हिंदी निरन्तर आगे की ओर ही बढ़ी है। हालांकि कुछ अति संवदेनशील हिन्दी प्रेमी विकास की गति को आशा के अनुरूप न पाकर उदासी की गहराई में डूब जाते हैं। लेकिन सच तो यही है कि हिन्दी सिकुड़ी नहीं है, बल्कि फैली ही है। हिन्दी भाषा के इस फैलाव को हम समाचार-पत्र और पत्रिकाओं के फैलाव के रूप में, जन संचार माध्यमों में उसके उपयोग के रूप में तथा सरकारी नौकरियों में हिन्दी माध्यमों से प्रवेश के रूप में देख सकते हैं। केवल इतना ही नहीं, बल्कि हिन्दी भाषा के इस फैलाव को विश्व स्तर पर भी जांचा और परखा जा सकता है। यह बात अलग है कि यदि पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ काम किया गया होता, तो यह फैलाव और भी अधिक सघन और व्यापक दिखाई पड़ता, किन्तु ऐसा न किए जाने के बावजूद हिन्दी भाषा के पीछे जो जन शक्ति तथा सामाजिक सरोकारों के दबाव काम कर रहे हैं, वे इसकी जीवन्तता को निरन्तर गतिशील बनाए हुए हैं। यह विश्वास तब और भी अधिक दृढ़ हो जाता है, जब हरिबाबू कंसल की पुस्तक "विश्व में हिन्दी" पढ़ी जाए, जो हाल ही में दो खण्डों में प्रकाशित हुई है।

"विश्व में हिन्दी", खण्ड-1 करीब 150 पृष्ठ की पुस्तक है। इसके अंतर्गत लेखक ने हिन्दी की विवेचना विश्व के संदर्भ में की है। एक ओर जहां लेखक के खुद के लिखे हुए लेख हैं, वहीं दूसरी ओर वहां से जुड़े विशेषज्ञों के भी कुछ लेख संकलित किए गए हैं। उदाहरण के लिए प्रवासी भारतीयों में हिन्दी के प्रचार पर श्री ललन प्रसाद व्यास का लेख है, जो विश्व साहित्य संस्कृति संस्थान के महासचिव हैं और अन्तरराष्ट्रीय रामायण सम्मेलन के आयोजक के रूप में प्रसिद्ध हैं। कम्प्यूटर द्वारा विदेशियों को हिन्दी सिखाए जाने पर डा॰ प्रमोद कुमार का लेख है, जो केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, दिल्ली में कार्यरत हैं। विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी के स्थान पर डा॰ रामजी लाल जांगिड़ का, विदेशियों की हिन्दी सेवा पर डा॰ कैलाश चन्द्र भाटिया का तथा अन्तरराष्ट्रीय जन संचार में हिन्दी पर श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी का लेख है। इसी में एक अत्यंत प्रमुख लेख है — विश्व हिन्दी सम्मेलनों की श्रृंखला पर, जो स्वयं हरिबाबू कंसल ने लिखा है।

भाग-एक में जितने भी लेख संकलित हैं, उनमें व्यावहारिकता की स्पष्ट झलक मिलती है। एक अत्यंत प्रमुख लेख के अन्तर्गत लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि विदेशी हिन्दी क्यों सीखना चाहते हैं। यह लेख मूलतः सर्वेक्षण पर आधारित है। इस लेख को पढ़ने पर हमें सही मायने में हिन्दी की शक्ति का आभास होता है। इस लेख में कोरिया की एक महिला ने हिन्दी सीखने का जो कारण बताया है, उसकी ओर मैं विशेष रूप से भाषा प्रेमियों का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। महिला कहती हैं — "मैं कोरिया की कम्पनी में सेवारत हूँ, और उन्होंने मुझे हिन्दी सीखने भारत भेजा है। मेरी कम्पनी भारत में व्यापार करने के लिए काफी पूंजी लगाना चाहती है। कम्पनी चाहती है कि मैं हिन्दी सीखूं तथा भारतीय संस्कृति और भारतीय व्यापार शैली के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करूँ।"

नाईजीरिया की एक अन्य महिला का कथन है— "हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है। भविष्य में भारत के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने की आशा है। मैं कुछ सांस्कृतिक गतिविधियों में भी लगना चाहती हूँ।"

यदि इन दोनों कथनों को वर्तमान आर्थिक उदारीकरण के संदर्भ में देखा जाए, तो उससे हिन्दी भाषा के भविष्य की एक झलक हमारे सामने स्पष्ट हो सकेगी। इसी दिशा में यह पुस्तक उपयोगी है, क्योंकि इसके अंतर्गत विदेशों में हिन्दी शिक्षण की उपलब्ध सुविधाओं तथा उनके मार्ग में आने वाली व्यावहारिक कठिनाईयों की जानकारी मिलती है। निश्चित रूप से यह पुस्तक उन लोगों के लिए विशेष रूप से सहायक होगी, जो विदेशियों को हिन्दी सिखाने के लिए शिक्षण सामग्री तैयार कर रहे हों या फिर वहां जाकर अध्यापन करना चाह रहे हों।

"विश्व में हिन्दी," खण्ड-दो 280 पृष्ठों की पुस्तक है। इसका स्वरूप संदर्भ ग्रंथ का है। इसके अंतर्गत विश्व में जहां-जहां भी हिन्दी का अध्यापन हो रहा है, जिस रूप में हो रहा है, वहां अध्यापन की जो सुविधाएं उपलब्ध हैं, और वहां हिन्दी संबंधी जो भी गतिविधियां तथा पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं, उन सब की विस्तार से जानकारी दी गई है। इसकी विषय-सूची को देखने के बाद यह जानकर सुखद आश्चर्य होता है कि सचमुच हिन्दी भाषा विश्व के इतने देशों में पढ़ाई जा रही है। इसके अंतर्गत यूरोप के ब्रिटेन, जर्मनी, हालैण्ड, पोलैण्ड, इटली, स्विटजरलैण्ड, फ्रांस और नार्वे आदि हैं ही, इसके साथ ही सुदूर दक्षिण अमेरिका के देश चिली, मैक्सिको, अर्जेन्टीना और सेनेगल जैसे देश भी हैं।

जहां तक एशिया महाद्वीप के कुछ देशों का सवाल है, वहां हिन्दी की स्थिति निश्चित रूप से अच्छी है। इसके अंतर्गत नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगला देश, भूटान, सिंगापुर आदि हैं। मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, गयाना तथा त्रिनिदाद एवं टोबागो ऐसे देश हैं, जहां केवल हिन्दी ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति भी गहरे रूप से जमी हुई है। इसके कारण उस ऐतिहासिक तथ्य में निहित हैं, जब उन देशों में गन्ने के खेतों में काम करने के लिए भारतीय मजदूर जहाजों में भरकर भेजे गए थे। उन मजदूरों ने वहां भारतीय संस्कृति के साथ-साथ हिन्दी भाषा की भी पताका फहराई है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि वहां हिन्दी के शिक्षण की जितनी सुविधाएं होनी चाहिए, वैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। यह दर्द इस पुस्तक में उभरा है। व्यापक रूप से यह दर्द केवल इन्हीं देशों के लिए नहीं, बल्कि अन्य देशों के लिए भी व्यक्त हुआ है।

"विश्व में हिन्दी," भाग-दो की एक निजता यह भी है कि विभिन्न देशों में हिन्दी की स्थिति के बारे में लेखक के स्वयं के लेख ही नहीं हैं, बल्कि उन्होंने उन देशों में हिन्दी के लिए काम कर रहे लोगों के लेख भी शामिल किए हैं। इसके कारण उन लेखों में एक विश्वसनीयता आ सकी है। इन लेखों में भाषा के प्रति एक भावात्मक उच्छ्वास ही नहीं है, बल्कि बातों को तथ्यपूर्ण ढंग से कहने की कोशिश की गई है। चाहे वह भारतीय लेखक हो अथवा विदेशी, सभी ने अपनी बात अधिक से अधिक प्रामाणिक रूप में कही है।

हिन्दी के लिए पश्चिमी विद्वानों ने जो कार्य किया, उस पर शोध कार्य हुये हैं, और कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। लेकिन विश्व-स्तर पर हिन्दी की स्थिति क्या है, और उसके लिए किस तरह की शिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं, इस बारे में अभी तक कोई एक जगह संकलित सामग्री देखने में नहीं आई थी। इस दृष्टि से हरिबाबू कंसल का यह कार्य ऐतिहासिक महत्व का है। विश्वास है कि आने वाली पीढ़ी इस कार्य को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाएगी। केवल इतना ही नहीं, बल्कि यह पुस्तक हिन्दी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य का जो स्वरूप प्रस्तुत करती है, वह भी हिन्दी के कार्य में लगे लोगों के लिए उत्प्रेक्ष्य का काम करती है। इस पुस्तक से यह भाव तो स्पष्ट होता ही है कि यदि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर किसी भी भारतीय भाषा को मान्यता मिल सकती है, तो वह भाषा केवल हिन्दी ही है। यहां तक कि जो भी अहिन्दी भाषी विदेशों में जाते हैं, वे भी अन्य भारतीयों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए हिन्दी भाषा का ही सहारा लेते हैं।

निश्चित रूप से ये दोनों पुस्तकें हिन्दी के व्यापक प्रचार और प्रसार की दिशा में अत्यंत सहायक सिद्ध होंगी।

पृष्ठ 22 का शेष

गुप्तजी की भाषा

हिन्दी-काव्य जगत् में गुप्तजी का प्रवेश उस समय हुआ जिस समय खड़ी बोली को काव्य-भाषा बनाने का आन्दोलन चल रहा था। इस आन्दोलन में पड़कर गुप्तजी ने खड़ीबोली को ही अपनाया। खड़ीबोली का आरम्भ में जो रूप था उसमें भावों की सजीवता और उनके चित्रण के लिए अधिक गुंजाइश नहीं थी। गुप्तजी ने घटनाओं के वर्णन में ही उसका उपयोग किया, लेकिन ज्यों-ज्यों उन्हें भावों के चित्रण की आवश्यकता महसूस होती गयी, त्यों-त्यों उन्हें उस खड़ीबोली में उपयुक्त शब्दों और पदे का समावेश करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस प्रकार धीरे-धीरे उन्होंने खड़ीबोली को अपनी भाव-धारा के अनुकूल बना लिया। आरम्भ में 'भारत-भारती की भाषा में जो रुखापन था वह 'पंचवटी' तक पहुंचते-पहुंचते कम हो गया और उनकी भाषा का रूप अत्यन्त निखर उठा।

गुप्तजी की खड़ीबोली पर दो प्रभाव हैः (1) संस्कृत के तत्सम शब्दों का और (2) ठेठ बोलचाल के शब्दों का। संस्कृत के सरल तत्सम शब्दों के प्रयोग से उनकी खड़ीबोली अत्यंत सुरस, स्वाभाविक और सुबोध हो गयी है। उसमें प्रसाद, माधुर्य और ओज भी विषयानुसार पाया जाता है, लेकिन जहां उन्होंने संस्कृत के क्लिष्ट तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है, वहां भाषा कृत्रिम हो गयी है और उसका प्रवाह भी मन्द पड़ गया है। तुक के अधिक आग्रह के कारण उनकी भाषा में कहीं-कहीं अप्रचलित शब्द भी मिलते है। 'अस्तुद', 'त्वेष', 'कल्प', 'जिष्णु' आदि ऐसे ही शब्द हैं। तुक में इनसे सहायता भले ही मिल जाय, पर भाषा के स्वाभाविक प्रवाह और लय में उनसे अधिक बाधा पहुंची है। कुछ शब्दों का उन्होंने संस्कृत-व्याकरण के अनुसार निर्माण भी किया है। संस्कृत का प्रभाव उनकी पदयोजना पर भी है। शब्दों के लचर प्रयोग भी मिलते हैं पर कम। कहीं-कहीं तद्भव और तत्सम शब्दों को जोड़कर भाषा का सौंदर्य भी बिगाड़ा गया है। ऐसे स्थानों पर उनकी भाषा अत्यधिक शिथिल हो गयी है और प्रवाह मन्द हो गया है।

गुप्तजी की भाषा पर दूसरा प्रभाव है बुन्देली का। हिन्दी में अनेक प्रांतीय बोलियां है। उनके शब्दों का ग्रहण प्रायः वर्जित है, पर शब्द की उपयुक्तता की दृष्टि से इस नियम का सर्वथा त्याग नहीं किया जाता। गुप्तजी ने ऐसे शब्दों को भी अपनाया है। 'भर के', 'झीमना', 'छीटना', 'अफर', 'धडाम' आदि ऐसे ही शब्द है जो उनकी भाषा-प्रवाह में बाधक हैं। कुछ क्रिया रूप भी बुन्देली है। 'कीजो', 'दीजो', 'दीजियो', 'हुजियो' आदि में साहित्यिकता कम, पण्डिताऊपन अधिक है। उनकी भाषा में उर्दू-फारसी के एकाध ही शब्द मिलते हैं और वे भी केवल तुक के आग्रह के कारण। उन्होंने लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी कम किया है। कहीं-कहीं उनका स्वाभाविक रूप भी बदल दिया गया है। इससे भाषा का सौंदर्य नष्ट हो गया है।

(हमारे कवि से साभार)

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, जिंक लेड स्मेल्टर, विशाखापटनम

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की इकाई जिंक लेड स्मेल्टर, विशाखापटनम में हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों की अपना सरकारी कामकाज हिन्दी में करने की उनकी झिझक दूर करने के उद्देश्य से दिनांकः 13.03.1995 से 14.03.1995 तक दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला के पहले दिन दिनांक 13.03.1995 को विशाखापटनम पोर्ट ट्रस्ट के हिन्दी अधिकारी श्रीमती हेमलता राव ने राजभाषा नीति, अधिनियम व नियमों की जानकारी दी। कार्यशाला के दूसरे दिन विशाखापटनम संयंत्र के डा० एस० कृष्ण बाबू उपप्रबंधक (राजभाषा) ने राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी।

कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महाप्रबंधक श्री बी० एन० मित्तल ने भाग लिया। प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को एक शब्दकोश प्रदान किया गया। इस कार्यशाला में कुल मिलाकर 36 अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशिक्षित हुए हैं।

दिनांकः 14.03.1995 को प्रशासन भवन के सम्मेलन कक्ष में एक राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। उक्त संगोष्ठी में इकाई के महाप्रबंधक श्री बी० एन० मित्तल ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी को सरल रूप में प्रत्येक कर्मचारी अपने कार्यालयीन कामकाज में यथासम्भव अपनाएं। उक्त समारोह में श्री बी० एस० राव, व० प्रबंधक (का व प्र) एवं अन्य मुख्य प्रबंधक ने भी भाग लिया।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, जयपुर

मुख्यालय विकास आयुक्त (लघु उद्योग नई दिल्ली के मार्गदर्शन में अपने अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी में मूल रूप से कामकाज करने का प्रशिक्षण दिलाने के उद्देश्य से संस्थान ने दिनांक 30 जनवरी से 2 फरवरी, 95 तक चार दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यशाला का उद्घाटन दि० 30 जनवरी, 95 को डा० कलानाथ शास्त्री, पूर्व निदेशक, भाषा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर ने किया तथा संस्थान के निदेशक श्री ए० रंगाराव ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री घनश्याम ताती, हिन्दी अधिकारी ने संक्षिप्त में कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे निरन्तर अभ्यास बना रहता है और भाषा की अभिव्यक्ति में सुधार आता है। उन्होंने कहा कि यदि हमें राजभाषा को चलाने के लिए कड़ा रूख भी अपनाना पड़े तो वह अनुचित नहीं होगा। हिन्दी का एक शब्द यदि प्रचलन में आ जाए तो वह चल निकलेगा। अन्त में उन्होंने राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में संस्थान के निदेशक श्री ए० रंगाराव ने कहा कि हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम अपने कार्य में निरन्तर सुधार करें। ठीक इसी प्रकार हिन्दी का प्रयोग करते समय भी निरन्तर सुधार करते रहने की आवश्यकता है। इस सुधार प्रक्रिया में हिन्दी कार्यशालाओं का बड़ा महत्व है, अतः उन्होंने संस्थान कर्मियों से इसका लाभ उठाते हुए अपने द्वारा हिन्दी में किए जा रहे कार्य को बढ़ाने और उसमें अधिक सुधार लाने का आह्वान किया।

आकाशवाणी, धारवाड़

आकाशवाणी, धारवाड़ केन्द्र/कार्यालय में पाँच दिवसीय हिन्दी कार्यशाला 20-2-1995 से 24-2-1995 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 14 कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 20-2-1995 को कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ० चंदूलाल दुबे ने किया। इस अवसर पर अधीक्षक अभियंता श्री के०एस० रामकृष्णन् ने कहा कि इस केन्द्र में कर्मचारियों की सुविधा के लिए हिन्दी कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही हैं तथा कर्मचारियों को चाहिए कि इन कार्यशालाओं का भरपूर फायदा उठाएँ और अपने काम में हिन्दी का प्रयोग करें। केन्द्र निदेशक श्री वेंकटेश गोडखिंडि ने कहा कि यह अच्छी बात है कि केन्द्र में कार्यशाला आयोजित की जा रही है तथा कार्यलयीन काम को हिन्दी में कैसे किया जा सकता है इस बात का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने हेतु प्रेरित करने तथा उन्हें हिन्दी में काम करते समय होने वाली झिझक दूर करने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही में एक कार्यशाला आयोजित की जाती है। दिनांक 7-8 मार्च तथा

9-10 मार्च, 1995 को क्रमशः दो हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

दोनों कार्यशालाओं का आरंभ एक साथ ही औपचारिक उद्घाटन समारोह से हुआ। अनुसंधान शाला के संयुक्त निदेशक श्री वी० के० कुलकर्णी ने इसकी अध्यक्षता की। कार्यशाला में व्याख्याताओं की हैसियत से हिन्दी शिक्षण योजना, बंबई की सेवा निवृत्त उप निदेशक डॉ० (श्रीमती) अशुमती दुनाखे और हिन्दी शिक्षण योजना, पुणे की सेवानिवृत्त सहायक निदेशक श्रीमती लक्ष्मी अभ्यकर उपस्थित थी।

डॉ० ईश्वर दत्त गुप्ता, मुख्य अनुसंधान अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि अनुसंधानशाला एक तकनीकी संस्थान है। सरकारी आदेशों के अनुसार तकनीकी कार्यों में भी अनिवार्य रूप से हिन्दी का प्रयोग किया जाना आवश्यक है और यह अधिकारियों के सहयोग तथा पहल करने से ही संभव होगा।

संयुक्त निदेशक श्री वी० के० कुलकर्णी ने अपने उद्घाटन भाषण में बताया कि हमारे अधिकारी राजभाषा नीति और वार्षिक कार्यक्रम से पहले परिचित हो जाएं और तदनुसार वे अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से काम करवा लें। कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में करते समय होने वाली झिझक दूर करने में कार्यशाला से अधिकारियों को सहायता मिल सकेगी। इससे सरकार द्वारा हिन्दी पत्राचार के लिए निश्चित किया गया लक्ष्य हासिल करने में भी मदद हो सकेगी। उन्होंने यह भी बताया कि हिन्दी पत्राचार व तार में बढ़ोतरी होनी चाहिए। इसके लिए परियोजना प्राधिकारियों को तकनीकी रिपोर्ट/सारांश आदि के अग्रेषण पत्र हिन्दी में भेजे जा रहे हैं। तथापि हमें इसकी संख्या में वृद्धि के हर सम्भव प्रयास करने चाहिए जिससे हम वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंच सकेंगे। मंत्रालय द्वारा तिमाही प्रगति रिपोर्ट में प्रस्तुत पत्राचार के आंकड़ों पर आपत्तियां उठाई जाती है क्योंकि वार्षिक कार्यक्रम का लक्ष्य हम अब तक हासिल नहीं कर पाए हैं। अतः सभी से अनुरोध है कि कम से कम हम 50% तक लक्ष्य हासिल करें। मुझे उम्मीद है कि इस कार्यशाला से प्रेरणा लेकर आप सभी तकनीकी और प्रशासकीय दोनों कार्यों में हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक करेंगे।

अध्यक्ष ने यह भी बताया कि अनुसंधानशाला को वर्ष 1992-93 के दौरान हिन्दी में किए गए काम के आधार पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने क्षेत्रीय स्तर पर राजभाषा शील्ड व प्रमाण पत्र प्रदान किया है। यह हमारे लिए गौरव की बात है। अनुसंधानशाला में सभी अधिकारी कर्मचारी अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करें ताकि हम इससे ऊंचा स्थान प्राप्त कर सकें।

हिन्दी अनुभाग द्वारा समेकित 40 पृष्ठों की "हिन्दी कार्यशाला" नामक पुस्तिका छपवाई गई है। इसकी एक-एक प्रति कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों में वितरित की गई। यह पुस्तिका अधिकारियों को प्रतिदिन का कामकाज हिन्दी में करने के लिए सहायक सिद्ध होगी जिसमें प्रचलित प्रशासकीय भाषा में टिप्पणियां, वाक्यांश, प्रभागों के नाम, पदनाम, तारों के नमूने आदि जैसी महत्वपूर्ण सामग्री सम्मिलित की गई है।

अंत में श्रीमती कारखानीस, हिन्दी अधिकारी द्वारा अतिथि व्याख्याताओं और अधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यशाला का समापन हुआ।

महालेखाकार, राजस्थान

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) प्रथम व द्वितीय राजस्थान, जयपुर कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 30 घंटे की चतुर्थ हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 20.2.95 से 7.3.95 तक किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 20.2.95 को स० लेखापरीक्षा अधिकारी एवं हिन्दी कक्ष ने किया। उन्होंने हिन्दी कार्यशालाओं के उद्देश्यों की विस्तृत जानकारी दी। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने पर जोर दिया। साथ में यह भी कहा कि यदि उन्हें हिन्दी में कार्य करने में किसी कठिनाई का अनुभव हो तो हिन्दी कक्ष में अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 1994-95 नीति की अनुपालना में हिन्दी कार्यशालाओं के माध्यम से समस्त राजकार्य हिन्दी में करने का आग्रह किया।

कार्यशाला के समापन समारोह में प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कल्याण अधिकारी ने कहा कि आने वाला समय हिन्दी का है और आप लोगों को कार्यालय की लम्बे समय तक सेवा करनी है। अतः इन कार्यशालाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिये व अन्य कर्मचारियों को भी इनकी उपयोगिता बतानी चाहिए।

कार्यशाला में प्रशिक्षित होने वाले 19 (उन्नीस) प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये तथा सभी प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यालय में समस्त कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लिया।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

झांसी क्षेत्र में अधिकारियों के लिए दो दिवसीय 22 फरवरी से 23 फरवरी 95 तक एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न शाखाओं से 15 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन झांसी जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री के०एन०डी० द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर झांसी क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री एन०आर० फिटर ने अध्यक्षता की तथा सहायक क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री जे०एस० चावला ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला में अधिकारियों को हिन्दी में तार भेजना, वाउचर बनाना, राजभाषा नियमों, जमा योजनाओं आदि पर प्रशिक्षण दिया गया तथा अभ्यास भी कराया गया।

समापन समारोह में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती (डा०) सत्यवती पाण्डेय ने भारतीय भाषाओं के ऐक्य व हिन्दी की व्यापकता पर प्रकाश डाला तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में आंचलिक कार्यालय, लखनऊ से उप मुख्य अधिकारी डा० अरूण प्रकाश अवस्थी तथा क्षेत्रीय कार्यालय, झांसी के राजभाषा अधिकारी श्री सुरेन्द्र तिवारी ने भाग लिया।

दक्षिण सर्वेक्षण, बेंगलूर

दक्षिण सर्वेक्षण कार्यालय में दिनांक 13 और 14 दिसंबर 1994 को उच्चाधिकारियों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। इस

कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री डी०के० पणिकर, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूर द्वारा किया गया। श्री के०बी० बाबूराजन, नि०द०स०, अध्यक्ष द्वारा दिए गए स्वागत भाषण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री डी०के० पाणिकर, ने द०स० की सराहना करते हुए कहा कि इस कार्यालय ने कार्य निष्ठा से विशिष्ट उपलब्धी प्राप्त की है। उनका कथन था कि हिन्दी को आगे बढ़ाने में अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण है, अतः वे इसकी अगुआई करें। सभी प्रतिभागियों से उनका निवेदन था कि वे इस कार्रवाई में दिलचस्पी लेकर अपने सहकर्मियों को हिन्दी के विकास के लिए प्रेरित करें।

कार्यशाला के प्रस्तावना भाषण में ले० कर्नल जी०आर० वेंकटेश, उप निदेशक, द०स० ने राष्ट्र की एकता और अखण्डता में हिन्दी भाषा की महत्ता बताई। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य, हिन्दी की प्रगति के लिए अनुकूल वातावरण और स्टाफ को प्रेरित करना है। जैसा की इसमें अधिकारियों की भूमिका अहम् है, अतएव, उनका राजभाषा नीति से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कर्तव्य निष्ठा से हम हिन्दी के प्रयोग को उसका सर्वोच्च स्थान दिला सकेंगे।

तदुपरांत ब्रिग ज०आर० पीटर, उप निदेशक (प्र०श्रे०) ने प्रतिभागियों से बात करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य पर हर्ष व्यक्त किया, उनका कहना था कि हम हिन्दुस्तानी होने के नाते, हिन्दी सीखना हमारा परम कर्तव्य है। उन्होंने कार्यशाला की सफलता की कामना की।

उद्घाटन के बाद, प्रथम सत्र, श्री अमजद अली खां, प्रबन्धक, वी०ई०एम०एस०, अतिथि वक्ता द्वारा राजभाषा नीति पर था। जो, 2.30 बजे प्रारंभ हुआ। उन्होंने बहुत ही अच्छे, विनोद गयी ढंग से राजभाषा नीति नियम, लक्ष्य आदि को प्रभावात्मक रूप में समझाया। यह सभी से सराहा गया।

श्री के०बी० बाबूराजन, नि०द०स० ने सभी प्रतिभागियों के सक्रीय प्रतिभागिता की सराहना की। उनका अनुरोध था कि इस कार्यशाला से सभी प्रतिभागी संरचनात्मक दृष्टि और उपयोगी बातों को ग्रहण कर हिन्दी के कार्यान्वयन में अपना योगदान दें।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि० नई दिल्ली

"सेल" निगमित कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य को और अधिक प्रभावी बनाने के अभिप्राय से हाल ही में सभी निदेशालयों में राजभाषा उप-समितियों का गठन किया गया है। समिति के सभी सदस्यों को भारत सरकार की राजभाषा नीति से परिचित कराने के लिए दिनांक 7 मार्च, 1995 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में अधिकारियों को राजभाषा अधिनियमों, नियमों, विनियमों तथा संवैधानिक प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त सभी सदस्यों से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपेक्षाएं तथा सहायता इत्यादि के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई। समिति सदस्यों ने इस संबंध में विभिन्न सुझाव भी दिए तथा कार्यशाला को उपयोगी बताते हुए कहा कि इस प्रकार की कार्यशाला समय-समय पर आयोजित की जानी चाहिए।

यूको बैंक, धर्मशाला

बैंक में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करने तथा हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण करने के उद्देश्य से यूको बैंक, धर्मशाला मंडल ने 18 मार्च, 1995 को अधिकारियों के लिए और 20 मार्च, 1995 को लिपिक संवर्ग के लिए एक-दिवसीय दो हिन्दी कार्यशालाओं का बचत भवन धर्मशाला में आयोजन किया। इनमें क्रमशः 19 अधिकारियों और 25 लिपिक संवर्ग के कर्मचारियों ने भाग लिया। दोनों कार्यशालाओं का शुभारम्भ यूको बैंक, धर्मशाला मंडल के मंडल प्रबंधक श्री भूषण कुमार गुप्ता ने किया। संचालन मंडल कार्यालय के सहायक मुख्य अधिकारी (राजभाषा) श्री जगत सिंह रघुवंशी एवं यूको बैंक मंडल कार्यालय शिमला-I के राजभाषा अधिकारी श्री अर्जुन सिंह भाटिया ने किया। अपने उद्घाटन संबोधन में मंडल प्रबंधक महोदय ने कहा कि हमारे मंडल में हिन्दी का प्रयोग अच्छा है फिर भी हमने इस कार्य को और बढ़ाना है। इसलिए इन कार्यशालाओं में संकाय सदस्य और प्रतिभागी मिलकर हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाकर उनका निराकरण करें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि कार्यशालाओं में जाकर सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी-अपनी शाखा और कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाएंगे। हिन्दी का प्रयोग करने से ही इसका प्रसार होगा। हिन्दी का प्रचार-प्रसार हमारा प्रशासनिक कर्तव्य तो है ही तथा साथ ही यह राष्ट्र सेवा भी है। इसलिए हमें समर्पण की भावना से यह काम करना है।

पंजाब नेशनल बैंक, भोपाल

अंचल कार्यालय, भोपाल ने 10.3.95 से 13.3.95 तक तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 10.3.95 को अंचल प्रबंधक श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्ता के करकमलों से सम्पन्न हुआ। उन्होंने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए दीप प्रज्वलन किया। इस अवसर पर श्री आई.पी. महेंद्रू उप महाप्रबंधक, श्री तिलकराज कपूर, उप अंचल प्रबंधक, श्री जी.सी. शर्मा, उप अंचल प्रबंधक और श्री बी.सी गर्ग, उप अंचल प्रबंधक तथा अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री जी.आर. वधवा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय भारत सरकार भी उपस्थित थे।

कार्यशाला के उद्घाटन के उपरान्त अपने उद्बोधन में अंचल प्रबंधक महोदय ने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों के उपरान्त भी इस तरह के कार्यक्रम करना कहां तक उचित है, इस बात की विवेचना हम सभी अपने-अपने मनों में करें। हम सभी में केवल संकल्प की कमी है। यदि हम अपना समस्त काम हिन्दी में करने का संकल्प लें तो इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजनों की आवश्यकता हमें भविष्य में नहीं पड़ेगी। उन्होंने सभी स्टाफ सदस्यों का आह्वान किया कि वे अपनी-अपनी सीटों का समस्त काम हिन्दी में करें, जिससे मध्यप्रदेश अंचल के साथ-साथ सम्पूर्ण बैंक में हिन्दी का प्रयोग अधिकाधिक बढ़ सके।

श्री आई.पी. महेंद्रू, उप महाप्रबंधक ने अपने उद्बोधन में कहा कि अभी तो अंचल कार्यालय में हम शनिवार को अपना समस्त काम हिन्दी में करते हैं, किन्तु हमारा यही प्रयास रहे कि हम सप्ताह के अन्य कार्यदिवसों में अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें।

श्री तिलकराज कपूर, उप अंचल प्रबंधक ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हम काफी कार्य हिन्दी में कर रहे हैं। हमें चाहिये कि हम उस कार्य को रिपोर्टों के माध्यम से दर्शाएं भी, क्योंकि विभिन्न पुरस्कार प्राप्त करने का यही एक मात्र रास्ता है।

श्री बी.सी. गर्ग, उप अंचल प्रबंधक ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हम सभी हिन्दी में अधिकतम काम करें, यही हमारा ध्येय होना चाहिए। अपनी मातृ भाषा में सरकार का काम-काज करते हुए हमें गौरव महसूस होना चाहिए।

दूर संचार विभाग, मद्रास

मुख्य महाप्रबंधक दूरसंचार, तमिलनाडु परिमंडल, मद्रास के कार्यालय में दि॰ 21.2.95 व 22.2.95 को सर्किल कार्यालय के कर्मचारियों के लिए हिन्दी टिप्पण और आलेखन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस कार्यशाला में लगभग पंद्रह कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्‌घाटन श्री एस. तिरुमलै, उप निदेशक हिन्दी शिक्षण योजना ने किया। कार्यशाला में विभिन्न कार्यालयों के विद्वान हिन्दी अधिकारियों ने भाषण दिए। इस कार्यशाला का इंतजाम और पर्यवेक्षण श्री जे. सत्यनारायण, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने किया।

केन्द्रीय मत्स्य नौचालन एवं इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान

संस्थान द्वारा 20 एवं 21 मार्च 1995 को एक दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के उप निदेशक, श्री के.जी. मुरलीधरण मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। कार्यशाला का उद्‌घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. सी.पी. वरगीस द्वारा किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने सभी अधिकारियों को कार्यशाला के आयोजन का संक्षिप्त उद्देश्य बताया। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला के आयोजन का मुख्य उद्देश्य है— सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली व्यावहारिक हिंदी का अभ्यास करवाना जिससे अधिकारी-गण मूलरूप से राजभाषा हिंदी में अपना काम कर सकें। कार्यशाला के प्रथम एवं द्वितीय सत्र में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के उप-निदेशक श्री के.जी. मुरलीधरन ने राजभाषा संबंधी सरकार की नीतियों पर सविसतार प्रकाश डाला। तृतीय सत्र में एफ.ए.सी.टी. कोच्चिन के सहायक प्रबंधक (रा.भा.) श्रीमती वल्सा मैनन के कार्यालय में प्रयुक्त होनेवाले वाक्यांशों और टिप्पणियों के बारे में बताया।

21.3.95 को आयोजित समापन समारोह के अवसर पर केन्द्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान केन्द्र के निदेशक श्री देवराज मुख्य अतिथि थे।

श्री देवराज ने अपने वक्तव्य में कार्यालयीन कामकाज में हिंदी की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डाला।

श्रीमती वल्सा मैनन सहायक प्रबंधक ने सभी अधिकारियों को लगनपूर्वक दो दिनों तक भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया और अनुरोध किया कि, इस कार्यशाला में प्रशिक्षित अधिकारी गण अपना अधिकाधिक कामकाज हिंदी में करेंगे और राजभाषा नीति के समुचित अनुपालन में इस कार्यालय को अधिकाधिक सहयोग देंगें।

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कम्पनी लि॰

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लि. के क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली 27-1-95 व 30-1-95 को क्रमशः सहायक प्रबन्धकों / सहायक मंडलीय प्रबंधकों और कंपनी में कार्यरत कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन वाई.डब्लू.सी.ए. के कांफ्रेंस हॉल में किया गया। अधिकारियों की कार्यशाला का उद्‌घाटन "नंदन" के संपादक श्री जय प्रकाश भारती ने किया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री भारती ने कहा कि ग्राहकों को सरल हिन्दी में दस्तावेज उपलब्ध कराये जाने चाहिए। श्री भारती ने यह भी स्पष्ट किया कि चूंकि बीमा का संबंध जन-साधारण से है अतः सरल भाषा के माध्यम से ही उन तक पहुंचा जा सकता है।

क्षेत्रीय कार्यालय के प्रभारी सहायक महाप्रबन्धक श्री धर्मवीर मलिक ने अपने संबोधन के दौरान अधिकारियों और कर्मचारियों को अपने दैनिक काम-काज में ज्यादा-से-ज्यादा हिन्दी के प्रयोग करने का आह्‌वान किया। श्री मलिक जी ने बताया कि चूंकि हम "क" क्षेत्र में कार्यरत हैं साथ ही दिल्ली में भी जो कि भारत की राजधानी है, अतः जनता की अपेक्षाएं हम से अधिक ही हैं। श्री मलिक ने यह भी बताया कि हम भारत सरकार की राजभाषा नीति को लागू करने के लिए पूरी तरह से कृत संकल्प हैं।

अधिकारियों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'संघ की राजभाषा नीति एवं हमारा उत्तरदायित्व' नामक विषय पर श्री एस.सी. लखेड़ा, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, रक्षा मंत्रालय ने; 'हिन्दी का प्रयोग और उसकी अन्य भारतीय भाषाओं के साथ समानता' नामक विषय पर डा. एच. बालासुब्रह्मण्यम, पूर्व उप निदेशक केन्द्रीय निदेशालय ने; और टिप्पणी लेखन व वर्तनी का मानक रूप नामक विषय पर एन.टी.पी.सी के प्रबन्धक (राजभाषा) डा॰ राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने व्यवख्यान दिया।

कर्मचारियों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें सामान्य हिन्दी, बीमा शब्दावली और राजभाषा नियमों इत्यादि के संबंध में आॅब्जेक्टिव टाइप प्रश्न पूछे गये। अच्छा प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कार भी प्रदान किये गये।

नराकास, देवास

मध्यम श्रेणी के नगरों में स्थित विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों के कर्मचारियों को राजभाषा विषयक नियमों आदि से परिचित कराने की कोई प्रभावी समन्वित व्यवस्था सामान्यतया नहीं होती है। अतः केन्द्रीय कार्यालयों, बैंकों, बीमा एवं सरकारी उपक्रमों में राजभाषा के क्रियान्वयन हेतु गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास के तत्वावधान में माह फरवरी "95 में प्रथम संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें देवास के विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों, बैंकों, बीमा एवं सरकारी उपक्रमों के 30 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लेकर सरकारी कामकाज राजभाषा हिन्दी में सुचारूरूप से करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त किया।

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के प्रशिक्षण कक्ष में दिनांक 7 से 10 फरवरी तक आयोजित इस प्रथम संयुक्त कार्यशाला का शुभारम्भ भारतीय स्टेट बैंक के आंचलिक प्रबन्धक श्री एस.एम. कपूर ने किया। इस अवसर

पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के इस अभिनव प्रयास की प्रशंसा करते हुए श्री कपूर ने कहा कि किसी भी भाषा की उन्नति केवल नियम या अधिनियम द्वारा नहीं होती, बल्कि राष्ट्रभाषा के प्रति राष्ट्रवासियों के सम्मानभाव द्वारा होती है। उन्होंने फ्रांस, जर्मनी आदि देशों का उदाहरण देते हुए बताया कि वहां के लोग अंग्रेजी के बजाए अपनी राष्ट्रभाषा में बातें और काम करना पसंद करते हैं। इसलिए उनकी राष्ट्रभाषा इतनी विकसित हो गयी है कि उन्हें अंग्रेजी पर जरा भी निर्भर नहीं होना पड़ा है।

चार दिवसीय इस कार्यशाला में विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने अपने सारगर्भित व्याख्यानों द्वारा कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन किया। प्रतिभागियों की सक्रियता और भागीदारी बनाए रखने हेतु निष्पादन पुरस्कारों की भी व्यवस्था की गयी। इस कार्यशाला में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए श्री संजय त्रिवेदी (भा.जी.बी.नि.) ने प्रथम, पुरूषोत्तम श्रीवास्तव (देवास-शाजापुर बैंक) ने द्वितीय तथा बैंक ऑफ बड़ौदा के मुकेश पण्ड्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दस फरवरी को कृष्णाजी पंवार स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवास के प्राचार्य श्री जी.सी. जैन के मुख्य आतिथ्य में कार्यशाला का समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हुआ। श्री जैन ने कहा कि "राष्ट्रभाषा हिन्दी को जन-जन तक पहुंचाने तथा उसे लोकप्रिय बनाने के लिए स्वप्रेरणा का होना बहुत जरूरी है। क्योंकि जहां चाह है वहां राह है। इसलिए यदि अपना कार्य स्वप्रेरणा से हिन्दी में किया जाए तो राष्ट्रभाषा को तो सम्मान प्राप्त होगा ही, साथ ही हिन्दी भाषी क्षेत्र के बैंक बीमा और अन्य सरकारी संस्थानों से जुड़े ग्राहकों एवं उपभोक्ताओं को भी सुविधा होगी। जब विज्ञान जैसे क्लिष्ट विषय हिन्दी माध्यम से सफलतापूर्वक पढ़ाए जा रहे हैं तो सरकारी कामकाज में हिन्दी क्यों प्रयुक्त नहीं हो सकती। इस अवसर पर उन्होंने पुरस्कृत कर्मचारियों को पुरस्कार देते हुए अनुरोध किया कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में पहली बार आयोजित उक्त संयुक्त कार्यशाला के सफल आयोजन का श्रेय समिति के अध्यक्ष एवं बैंक नोट मुद्रणालय के महाप्रबन्धक श्री जे.सी. गुलाटी को है। जिन्होंने देवास शहर के समस्त कार्यालयों एवं उपक्रमों को समन्वित कर इस अभिनव कार्यशाला को मूर्त रूप दिया।

कार्यशाला के उद्घाटन तथा समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक नोट मुद्रणालय के महाप्रबन्धक श्री जे.सी. गुलाटी ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री जे.सी. गुलाटी ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फ्रांसीसी बालिका की राष्ट्रभाषा निष्ठा का उदाहरण देते हुए बताया कि किसी भी देश के लिए उसकी राष्ट्रभाषा गौरव तथा सम्मान का प्रतीक है। हमारे राष्ट्रीय प्रतीकों की तरह राजभाषा भाषा भी सम्माननीय और वंदनीय है। हमें उसका सम्मान करते हुए हिन्दी में सरकारी कामकाज करते हुए सच्चे भारतीय होने का परिचय देना चाहिए।

बैंक नोट मुद्रणालय के प्रशिक्षण कक्ष में आयोजित इस कार्यक्रम के आरम्भ में सेन्ट्रल बैंक के शाखा प्रबन्धक श्री जी. बी. पाटीदार ने कार्यशालाओं के उद्देश्य पर प्रकाश डाला, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव डा. आलोक कुमार रस्तोगी ने कार्यक्रमों का संचालन किया तथा नेशनल इंश्योरेन्स कम्पनी के शाखा प्रबन्धक श्री विजय शाह तथा बैंक ऑफ इंडिया के मुख्य प्रबन्धक श्री भारत भूषण जैन ने आभार माना।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्

हिंदी में कार्यालय, कार्य करने की दक्षता प्राप्त करने के लिए अभातशिप के अधिकारियों और कार्मिकों के लिए दिनांक 18 अप्रैल, 1995 से 10-दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई।

यह व्यावहारिक प्रशिक्षण डा० नगेन्द्र जी की देखरेख में अभातशिप में हिंदी कार्यों में संलग्न अधिकारी श्री शिव दयाल ने प्रदान किया। प्रशिक्षण में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित विषयों पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया:—

(क) परिषद् के दैनिक कार्यालय-कार्य में प्रयुक्त शब्दावली को आधार बनाकर हिंदी में नोट लिखने और प्राप्त पत्रों के उत्तर तैयार करने की विधि बताई गई तथा परिषद् से भेजे जाने वाले सरकारी / अर्द्धसरकारी पत्रों, परिपत्रों, ज्ञापनों, कार्यालय आदेशों आदि के प्रारूप तैयार करने की प्रणाली बोर्ड पर समझाई गई और उसके बाद उनका अभ्यास भी कराया गया।

(ख) परिषद् में कार्यरत अधिकारी और कार्मिक तकनीकी अर्हताएं और अनुभव रखते हैं और इसलिए उन्हें फाइल खोलना, फाइल का टिप्पण और पत्राचार भाग बनाना, पृष्ठ संख्या देना, संदर्भ चिह्नों के प्रयोग आदि के लिए निर्धारित कार्यप्रणाली से अवगत कराया गया।

(ग) आदर्श अनुवाद की प्रविधि का भी ज्ञान कराया गया और साथ ही अनुवाद-अभ्यास भी कराया गया। आदर्श अनुवाद के नमूने भी उनके समक्ष रखे गए।

(घ) दैनिक प्रयोग में आने वाले लेटिन भाषा के लगभग 50 शब्दों / पदों जैसे De facto, De juse, Post Facto, Modus operandi, Fact accompli, Prima Facie, Sub-judice आदि के हिंदी पर्यायों से परिचय तथा अभ्यास कराया गया।

ऐसी व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं को भविष्य में भी अभातशिप के अन्य अधिकारियों और कार्मिकों के लिए समय-समय पर आयोजित किया जाएगा ताकि इनमें हिंदी में कार्य करने की दक्षता और कार्यक्षमता उत्पन्न की जा सके और वे बेझिझक / बेहिचक अपना कार्यालय-कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न कर सकें।

आकाशवाणी, कलकत्ता

सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये दिनांक 10.5.95 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला, आकाशवाणी कलकत्ता केन्द्र के साथ संयुक्त रूप से आयोजित की गई।

दिनांक 10.5.95 को आयोजित एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला में प्रतिभागियों को "आदेश, कार्यालय ज्ञापन एवं प्रशासन संबंधी और आवती पत्र पर आधारित टिप्पणियों का ज्ञान एवं अभ्यास कराया गया। इस अवसर पर विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी कलकत्ता के केन्द्र निदेशक, डा० अलोक सेन कार्यशाला में उपस्थित हुए और उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों की लगन की सराहना की। एवं उन्होंने यह घोषणा किये कि हर माह के अन्तिम सप्ताह में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला की आयोजन किया जाये।

दूसरे सत्र में फर्नीचर, टेलिफोन, लेखन सामग्री आदि विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर यू० को० बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री पी० पाण्डेय ने उक्त विषय पर व्याख्यान एवं अभ्यास कराया। उक्त कार्यशाला में प्रशिक्षण के लिये कर्मचारियों को नामित किया गया था।

आकाशवाणी, हैदराबाद

कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 26.4.95 को दो सत्रों में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में केन्द्र के 15 अधिकारियों तथा 3 कर्मचारियों ने सक्रिय भाग लिया।

सर्वप्रथम हिन्दी अधिकारी ने कार्यशाला में उपस्थित सभी सहभागियों तथा कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित अतिथि वक्ता श्री एस. देवीदास, सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उपसंस्थान, रा.भा. विभाग, हैदराबाद का स्वागत किया।

कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन करते हुए श्री एन. श्रीनिवासन, अधीक्षण अभियंता ने अपने संक्षिप्त भाषण में कार्यशाला की आवश्यकता और उसकी महत्ता पर बल दिया। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा अधिनियम का लागू होने से पूर्व से ही दूसरे केन्द्रीय कार्यालयों को अपेक्षा आकाशवाणी द्वारा हिन्दी का प्रचार-प्रसार विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा हो रहा है। उन्होंने सहभागियों से आग्रह किया कि वे कार्यशाला में अधिक रुचि लेकर कार्यशाला को सफल बनाएं।

तत्पश्चात् कार्यशाला दो सत्रों में चलायी गयी। कार्यशाला के प्रथम सत्र में अतिथि वक्ता ने "राजभाषा नीति, अधिनियम तथा नियम" पर व्याख्यान दिया। उन्होंने संविधान में राजभाषा संबंधी विभिन्न अनुच्छेदों विशेष कर अनुच्छेद 351, राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अन्तर, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम की व्यवस्थाओं, 14 सितम्बर, को ही हिन्दी दिवस क्यों मनाना है, दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों के कर्तव्यों, हिन्दी कार्यशालाओं की आवश्यकता आदि विषयों को बड़ी सहज और सरल हिन्दी में सहभागियों को समझाया। उन्होंने अपने व्याख्यान में इस बात पर जोर दिया कि चूंकि हम केन्द्र सरकार के कर्मचारी हैं अतः नियमानुसार हमें बाध्य होकर निर्धारित मात्रा में हिन्दी में सरकारी कामकाज करना चाहिए।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, आगरा

लघु उद्योग सेवा संस्थान, आगरा में दिनांक 27.3.95 से 29.3.95 तक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के निदेशक, श्री एस०एल० भट्टाचार्य जी ने मां सरस्वती की प्रतिमा / चित्र पर माल्यार्पण करके तथा दीप जला कर किया। निदेशक महोदय ने अपने उद्घाटन भाषण में संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना समस्त सरकारी कार्य यथासम्भव हिन्दी में ही करने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर संस्थान के सहायक निदेशक (प्रशा.) श्री एम० एन० राय ने संस्थान में हुई हिन्दी प्रगति की जानकारी प्रदान की तथा उन्होंने कहा कि यह संस्थान एक तकनीकी संस्थान हैं फिर भी यहां पर अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में ही किया जा रहा है।

तत्पश्चात श्री नरेन्द्र मोहन वशिष्ठ, हिन्दी अधिकारी, पंजाब नेशनल बैंक, संजय प्लेस, आगरा ने संस्थान के अधिकारियों / कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति से अवगत कराया।

दूरदर्शन केन्द्र, भोपाल

दूरदर्शन केन्द्र भोपाल में दिनांक 8 मई 1995 से 10 मई 1995 तक तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के आयोजन का मूल उद्देश्य सरकारी कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करना था। कार्यशाला का उद्घाटन श्री अक्षय कुमार जैन, अध्यक्ष मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोपाल ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि राष्ट्र निर्माण में उस राष्ट्र की राजभाषा एक अहम् भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि हमें अपने दैनिक कामकाज में सरल हिन्दी का प्रयोग करना चाहिये। और भाषा के उत्तरोत्तर प्रयोग में अन्य भाषाओं के शब्दों से हमें परहेज नहीं करना चाहिए। हम कितनी भी भाषाएं सीख सकते हैं, लेकिन भाषाई अस्मिता और भाषाई गौरव के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने दैनिक कामकाज में अपनी भाषा का ही प्रयोग करें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्र निदेशक श्री लीलाधर मंडलोई ने कहा कि हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन से सरकारी कार्यालयों में एक हिन्दीमय वातावरण बना है जो राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए एक सुखद स्थिति है। उन्होंने कहा कि हमें निष्ठा और समर्पण भाव से राजभाषा हिन्दी में कार्य करना है। उन्होंने राजभाषा हिन्दी की सरलता और सरसता का वर्णन करते हुए बताया कि हिन्दी इतनी सरल भाषा है कि इसमें कार्य करने में किसी को कोई कठिनाई नहीं है। आवश्यकता है केवल उसे अपनाने की। उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना दैनिक कामकाज राजभाषा हिन्दी में करने पर बल दिया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में केन्द्र के सहायक निदेशक श्री सैलानी सियोते ने सरस्वती वन्दना कर प्रतिभागियों को भावमग्न कर दिया। श्री रामनिवास शुक्ल, हिन्दी अधिकारी ने दूरदर्शन केन्द्र, भोपाल में राजभाषा हिन्दी की संवर्द्धनात्मक गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में राजभाषा हिन्दी पर बोलते हुए श्री अरूण कुमार तिवारी, सहायक निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, भोपाल ने कहा कि हिन्दी इस देश की राजभाषा है। अतः हमारा पावन कर्तव्य है कि हम सब अपना दैनिक कामकाज राजभाषा हिन्दी में करें।

सिंडिकेट बैंक, नई दिल्ली

दक्षिण भारतीय मूल का बैंक होने के नाते सिंडिकेट बैंक के कर्मचारियों और अधिकारियों का हिन्दी ज्ञान अपेक्षित स्तर का नहीं था और भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रति जागरूकता भी नहीं थी। एतदर्थ बैंक ने भारत सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के समानान्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया और अपने कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण महाविद्यालयों के माध्यम से हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन भी किया। परन्तु फिर भी हिन्दी प्रशिक्षण के अपेक्षित स्तर पर नहीं पहुंचा जा सका।

उपर्युक्त के दृष्टिगत बैंक ने निगम स्तर पर हिन्दी प्रशिक्षण की समीक्षा करके यह निश्चय किया कि शाखा स्तर पर हिन्दी प्रशिक्षण आरंभ किए जाएं। और इसके लिए कार्यपद्धति यह अपनायी गयी कि प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं के पास जाएं। यह जिम्मेदारी बैंक ने अपने

आंचलिक कार्यालयों और मंडल कार्यालयों के राजभाषा अनुभागों को सौंपी।

बैंक के दिल्ली स्थित आंचलिक कार्यालय के राजभाषा अनुभाग ने उपर्युक्त योजना को एक चुनौती की तरह स्वीकार करके अपनी दिल्ली स्थित शाखाओं में इन कार्यक्रमों का आयोजन आरम्भ किया था और इस वर्ष अब तक ऐसे 23 कार्यक्रमों में कुल मिलाकर 619 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जो अपने आप में एक रिकार्ड है।

उल्लेखनीय है कि नुक्कड़ नाटकों की तर्ज पर ये कार्यक्रम बिना किसी औपचारिकता के शाखा भवन में उपलब्ध किसी भी सुविधाजनक स्थान पर चलाये गए और इनमें अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रबन्धकों, सभी ने बड़े उत्साह और उन्मुक्त भाव से भाग लिया। प्रशिक्षण में निम्नलिखित विषयों को सिम्मलित किया गया:

1. राजभाषा नीति,
2. वार्षिक कार्यक्रम,
3. बैंकिंग शब्दावली,
4. हिन्दी पत्राचार और टिप्पण,
5. द्विभाषी फार्मों को हिन्दी में भरना।

इसके अतिरिक्त प्रसंगानुसार बीच-बीच में हिन्दी व्याकरण पर भी प्रकाश डाला गया। इन सभी विषयों पर हैंड आउट भी दिए गए।

उक्त कार्यक्रम ने केवल प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्द्धक और उपयोगी रहे बल्कि समय, खर्च और जन शक्ति के उपयोग की दृष्टि से बैंक के लिए भी नितान्त उपादेय सिद्ध हुए हैं।

इस कार्यक्रमों का आयोजन मुख्यतः आंचलिक कार्यालय के दोनों राजभाषा अधिकारियों सुश्री ज्ञानकौर और श्री कर्ण ने किया।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड उदयपुर स्थित प्रधान कार्यालय की ओर से जावर माइन्स इकाई में 26 अप्रैल से 28 अप्रैल, 1995 तक उच्च स्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें कम्पनी की पश्चिम क्षेत्रीय इकाइयों के चयनित कर्मचारियों ने भाग लिया। हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन हिन्दी-संस्कृत के विद्वान श्री वासुदेव शास्त्री ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हिन्दी जन-जन की वाणी है। इसके अधिकाधिक प्रयोग से जनता एवं प्रशासन के बीच की खाई पाटी जा सकती है। उद्घाटन सत्र में सुखाड़िया विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डा० एस०एन० व्यास ने राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति पर प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता इकाई के उप-महाप्रबंधक श्री अवधेश कुमार वाजपेयी ने की। प्रांरभ में कम्पनी के प्रबंधक (राजभाषा) डा० पुरुषोत्तम छंगाणी ने हिन्दी कार्यशाला की महत्ता को रेखांकित किया।

कार्यशाला के दूसरे दिन हिन्दी कम्प्यूटर पर गोष्ठी रखी गई। गोष्ठी के प्रमुख वक्त हिन्दी के जाने-माने लेखक डा० विजय कुलश्रेष्ठ थे। इस गोष्ठी में राजभाषा के क्षेत्र में अपनाये जा रहे यंत्रीकरण की विस्तार से जानकारी दी गई। कम्प्यूटर पर हिन्दी प्रयोग विषय पर डा० बलवीर सिंह भटनागर ने पत्र वाचन किया। इस अवसर पर सुलिपि कम्प्यूटर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के प्रतिनिधि ने कम्प्यूटर के लिए उपयोगी हिन्दी सांफ्ट-वेयरों का प्रदर्शन भी किया। इस गोष्ठी में प्रबंधक (राजभाषा) डा० पुरुषोत्तम छंगाणी तथा वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री दीनदयाल गुप्ता ने राजभाषा नियमों आदि की जानकारी दी।

इस त्रिदिवसीय हिन्दी कार्यशाला के समापन समारोह में मेवाड़ महा-मण्डलेश्वर महंत मुरली मनोहर शास्त्री ने अपने प्रवचन में कहा कि हमें संस्कृत का आधार लेकर हिन्दी की दिशा तय करनी होगी ताकि सम्पूर्ण राष्ट्र एकता की दिशा में पहुंच सके। उन्होंने कहा कि दक्षिणी राज्यों में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का अधिक सम्मान है। हिन्दी का राष्ट्रभाषा स्वरूप इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए निश्चित किया जाना चाहिए। उनसे पूर्व राजस्थान साहित्य अकादमी के सचिव डा० लक्ष्मीनारायण नंदवाना ने राष्ट्रीय चेतना और राजभाषा के रागात्मक संबंधों की चर्चा की। कार्यशाला में हिन्दी प्रयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। इकाई के राजभाषा अधिकारी श्री हरमन चौहान ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आयकर आयुक्त, आगरा

आयकर आयुक्त महोदय श्री जवाहर लाल नेगी जी की अध्यक्षता में आयकर प्रभार, आगरा के सहायक आयकर आयुक्तों एवं आयकर अधिकारियों के स्तर की एक दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 25 व 26 अप्रैल, 1995 को आयकर भवन, संजय प्लेस, आगरा में किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन आयकर आयुक्त महोदय द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमां पर माल्यार्पण एवं द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर प्रभार के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री एस०डी० पाण्डेय द्वारा हिंदी कार्यशाला के महत्व का वर्णन करते हुए प्रशिक्षार्थियों का अध्यक्ष महोदय से परिचय करवाया गया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री जवाहर लाल नेगी, आयकर आयुक्त, आगरा ने प्रभार में हिंदी कार्यशाला की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रभार में अधिकारियों की कार्यशाला काफी समय से प्रस्तावित थी जिसका आयोजन निश्चित रूप से प्रसंशनीय है। उन्होंने कहा कि मैं अच्छी तरह से समझता हूं कि प्रत्येक अधिकारी हिंदी में कार्य में दक्ष है तथा हिंदी में कार्य करने में रूचि भी रखते हैं परन्तु कहीं-कहीं आने वाली हिचक इस प्रकार की कार्यशालाओं से दूर किया जा सकता है। उन्होंने इस पुनीत अवसर पर सभी अधिकारियों से अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के संकल्प का आह्वान किया। उन्होंने साधनों की कमी के उपरान्त भी अधिकारियों द्वारा हिंदी में अधिकाधिक कार्य के लिए उनकी प्रशंसा की। उन्होंने सभी को शुभकामनाएं देतें हुए आश्वासन दिया कि हिंदी की प्रगति के मार्ग में आने वाली किसी भी प्रशासनिक कठिनाई को दूर किया जाएगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन एस०डी० पाण्डेय सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया।

दिनांक 26.4.1995 को कार्यशाला के समापन समारोह के अवसर पर आयकर उपायुक्त एवं राजभाषा अधिकारी श्री अशोक मनचंदा ने प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए तथा अपने उद्बोधन में कहा कि हमें कम से कम इस प्रमाण-पत्र की लाज अवश्य रखनी है। उन्होंने कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब यहां से प्राप्त प्रशिक्षण का उपयोग हम अपने कार्यालय कार्य में करेंगे। इस अवसर पर उन्होंने प्रशिक्षण पर आए सभी सहायक आयकर आयुक्तों एवं आयकर अधिकारियों को उनके सक्रिय सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर, पश्चिमी बंगाल

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर (प० बंगाल) में प्रशासनिक, तकनीकी एवं अधिकारियों के लिए तीन द्विदिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। चार सत्रों में आयोजित प्रत्येक कार्यशाला के लिए कुल 12 कक्षाओं का आयोजन किया गया। कक्षाओं का संचालन संस्थान के हिन्दी अधिकारी श्री टी०पी० श्रीवास्तव एवं वरिष्ठ अनुवादक श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने किया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ० डी० शरतचन्द्र ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने अन्य प्रावधानों की भांति राजभाषा संबंधी प्रावधानों के भी अनुपालन पर बल दिया। उन्होंने कार्यशाला में प्रशिक्षित होकर सरकारी कामकाज हिन्दी में करने की सलाह दी। उद्घाटन सत्र में अन्य वक्ताओं में संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ० एस०के० सेन, डॉ० एस०एम०एच० कादरी तथा उप सचिव (प्रशासन) श्री पी०एल० बांगजी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। संस्थान के हिन्दी अधिकारी श्री टी०पी० श्रीवास्तव ने हिन्दी कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला में विभिन्न संवर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशासनिक/तकनीकी टिप्पण-आलेखन, मसौदा-लेखन, प्रशासनिक/तकनीकी अंग्रेजी हिन्दी वाक्यांश, मानक व परिवर्धित देवनागरी, हिन्दी में वर्तनी की समस्या के अलावा राजभाषा नियम/अधिनियम की जानकारी दी गई।

कार्यशाला के समापन-सत्र की अध्यक्षता संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ० एस०के० सेन ने किया। उन्होंने सफलतापूर्वक कार्यशाला के संचालन पर संतोष व्यक्त किया एवं प्रशिक्षण के उपरांत सरकारी कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को ही कार्यशाला की सार्थकता बताया।

बर्न स्टैण्डर्ड कम्पनी लि०, बर्नपुर

कम्पनी द्वारा दिनांक 29.3.95 को "हिन्दी कार्यशाला" का आयोजन किया गया जिसमें 20 अधिकारी/स्टाफ प्रशिक्षित किये गये। कार्यशाला के पाठ्यक्रम में राजभाषा नियम, अधिनियम एवं व्यवस्थाएं, अनुवाद विधि, टिप्पण और आलेखन, विविध प्रकार के पत्राचार तथा व्याकरण पर विस्तार-पूर्वक चर्चा शामिल थी। कार्यशाला के सत्रों का संचालन श्री पौहारी शरण सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (हिन्दी) इस्को, बर्नपुर तथा प्रधान कार्यालय से आये श्री लोकनाथ सिंह, हिंदी अधिकारी ने किया।

अपने उद्घाटन भाषण के दौरान इकाई के महाप्रबंधक श्री एच० एन० दास ने आयोजन की सफलता की कामना करते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की आवश्यकता बतायी। इस सत्र में बोलते हुए कम्पनी में नव नियुक्त मुख्य प्रबन्धक (का० एवम् प्र०) श्री के० एन० शर्मा ने अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर यह कहा कि "ग" क्षेत्र में स्थित यह कम्पनी राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है।

इस अवसर पर बोलते हुए उप महाप्रबन्धक श्री असीम दासगुप्त ने इसे राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय कदम बताया।

समापन समारोह के अवसर पर बोलते हुए श्री ए० आर० आचार्य ने हिन्दी के प्रयोग को और बढ़ाने की अपील की। धन्यवाद ज्ञापन श्री अरविन्द दत्त, सहायक प्रबंधक (का) ने किया।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल, भोपाल

कार्यालय के सरकारी कामों में राजभाषा हिन्दी को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने तथा तत्सम्बन्धी गृह-मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित निर्देशों के तारतम्य में इस कार्यालय द्वारा दिनांक-04/04/95 से 06/04/95 तक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कैलाश पन्त द्वारा भावपूर्ण व्याख्यान में यह निरूपित किया गया कि यदि सरकारी कार्यालयों में हिन्दी जो कि जनभाषा है इसमें कार्य नहीं किया जाता है तो वास्तविक रूप से हम स्वतंत्र नागरिक की श्रेणी में नहीं आते हैं। देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप हम नागरिकों का सम्मान तभी अर्जित कर सकते हैं जब हम जनसामान्य की भाषा में अपना समस्त कार्य सम्पन्न कर देश की मुख्य धारा में सम्मिलित होंगे।

डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री ने भाषा की समस्या को अत्यंत कुशलरूप से विश्लेषण करने के उपरांत यह निष्कर्ष दिया कि समस्त कार्यालयों में हिन्दी का उपयोग होना अति आवश्यक है परन्तु इस क्षेत्र में पुरातत्व कार्यालयों का अन्तयंत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह विभाग इतिहास व संस्कृति का संरक्षक है इसलिए इसको दायित्व निर्वाहन में कोई कोताही नहीं करना चाहिए। उन्होंने अपने अत्यंत विद्वतापूर्ण भाषण के दौरान हिन्दी और हमारी विरासत का उल्लेख करते हुए उनके अर्न्तसम्बन्धों की विवेचना प्रस्तुत की जो कि अत्यंत भावपूर्ण व कार्यक्रम का अभिन्न अंग रहा।

इस दिन कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेश कुमार शुक्ल, हिन्दी अनुवादक तथा आभार प्रदर्शन करते हुए डॉ० आर० सी० अग्रवाल,, अधीक्षण पुरातत्वविद् ने यह आश्वस्त किया कि कार्यशाला से जो हमें प्रेरणा मिली है उसे निश्चय ही कार्यरूप में परिणित किया जाएगा।

हिन्दुस्तान जिंक लि० अग्निगुण्डाला लेड प्रोजेक्ट, बण्डलमोद्ट

दिनांकः 23.02.1995 को इस प्रोजेक्ट के कामगारों के लिए एक एक-दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित किया गया। उद्घाटन खान अधीक्षक, श्री सी० श्रीनाथ ने किया।

उद्घाटन समारोह में प्रबंधक (भूविज्ञान), प्रबन्धक (अ०स०), प्रबन्धक (माल), मान्यता प्राप्त मजदूर संघ (आईएन्टीयूसी) की नेता श्री डी० जयकरराव आदि ने कार्यशाला के बारे में अपने विचार प्रकट किस। उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए खान अधीक्षक श्री सी० श्रीनाथ ने बताया कि हिन्दी कार्यशाला में भाग लिए कर्मचारियों को अपना हिन्दी ज्ञान फिर एक बार विकसित कराने का मौका मिलता है। सरकारी कामकाज में उत्पन्न होनेवाली भय-सन्देह दूर करने के लिए इसी तरह कार्यशालाएं आयोजित करना आवश्यक है। श्री वी०आर० सुदर्शन, वरिष्ठ

कार्मिक अधिकारी ने कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य एवं कार्यशाला में दिए गए सामग्री उपयोग करने की तरीका आदि के बारे में बताया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

कृषि वैज्ञानिक भाषा का सरलीकरण करके वैज्ञानिक उपलब्धियों को किसानों तक पहुंचाने के लिए इस कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी में 13-17, दिसंबर 94 तक की गयी कार्यशाला में कृषि वैज्ञानिक भाषा के सरलीकृत प्रारूप के प्रयोग से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। कृषि उत्पादन और उत्पादकता की वृद्धि के लिये कृषि प्रसार और प्रचार को सुगम और सुलभ करने के लिये कृषक के स्थानीय ज्ञान और ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध और प्रचलित में पांरपरिक माध्यम की प्रभावोत्पादकता पर वैचारिक लेख और स्थिति लेखों को प्रस्तुत किया गया।

यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया

यूरेनियम कारपोरेशन आॅफ इण्डिया लिमिटेड, जादुगोड़ा में 24 से 31 मार्च, 1995 के दौरान एक तकनीकी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कारपोरेशन के 18 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि तथा यूसील के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जे० एल० भसीन द्वारा किया गया। उद्घाटन भाषण में मुख्य अतिथि ने कहा कि जीवन में सफलता के लिए हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है। सरल हिन्दी का प्रयोग कर लोगों को प्रोत्साहित किया जा सकता है । उन्होंने इस प्रकार की कार्यशालाएं आयोजित करने पर बल देते हुए कहा कि इसमें लोग अपने ज्ञान का आदान-प्रदान कर सकते हैं तथा व्यावहारिक जीवन में उसका उपयोग कर सकते हैं।

इस अवसर पर निदेशक (तकनीकी) श्री के०के० बेरी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दी का प्रयोग इस तरह से किया जाये जिससे कि आसानी से लोग इसे समझ सकें।

अपर प्रबंधक (कार्मिक एवं औद्योगिक सम्पर्क), श्री अनिल कुमार सिन्हा ने हिन्दी को अपनाये जाने पर बल देते हुए कहा कि लोगों को अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाकर इस भाषा को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, श्री वासुदेव शर्मा ने बताया कि कारपोरेशन में हिन्दी का प्रयोग प्रगति पर है तथा व्यवहार में दूसरी भाषाओं के शब्दों को हिन्दी में प्रयोग करने हेतु सुझाव दिया। राजभाषा, अधिकारी, श्री एस०एन० शाह ने कहा कि भारत सरकार की नीतियों का पालन करते हुए सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की प्रगति एवं जनता की उन्नति के लिए भेद भाव मिटाना होगा। आज 91 करोड़ जनता को शिक्षित करने की जरूरत है जिसके लिए हिन्दी ही सुगम रास्ता है। राष्ट्र की एकता को मजबूत करने के लिए सच्चे मन से कार्य करना होगा।

पुस्तकालय अधिकारी, श्री राजेश्वर कुमार सिंह ने कहा कि 50 करोड़ लोग हिन्दी लिखते और पढ़ते हैं तथा 70 करोड़ से ज्यादा लोग इस भाषा को समझते हैं। उन्होंने कहा कि कार्यशाला के उपयोग का फल कर्मचारियों में धीरे-धीरे हो रहा है तथा आत्म विश्वास पैदा करने से सारी कठिनाइयां दूर हो जायेगी। इस अवसर पर कारपोरेशन के उप महाप्रबंधक, यू० के तिवारी, एम० पी० विश्वकर्मा, श्री आर० पी० वर्मा, मुख्य अधीक्षक (अनुसंधान, विकास एवं अनुरक्षण), डा० वी० एम० पाण्डेय, खान प्रबंधक, श्री डी० आचार्य के अतिरिक्त यूसील के अनेक अधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यशाला के प्रथम दिन वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, डा० गिरधर झा ने औद्योगिक सुरक्षा पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यशाला के समापन अवसर पर श्री मदन मोहन प्रसाद, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति एवं कारपोरेशन में हिन्दी के प्रयोग की संभावना पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी प्रतिभागियों से कारपोरेशन के कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने पर बल दिया।

*** जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं, आपका कोई राष्ट्र भी नहीं।**

—मुंशी प्रेमचंद

*** किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है, लेकिन दूसरी भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात है।**

—महादेवी वर्मा

*****

हिंदी दिवस

भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय, रायपुर

स्थानीय प्रधान कार्यालय द्वारा राजभाषा मास के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। राजभाषा मास का समापन समारोह दिनांक 1.10.1994 को आंचलिक कार्यालय में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रबंधक, राजभाषा श्री के०एल० डे ने कहा कि हिंदी में अति उत्तम कार्य के लिए मण्डल स्तरीय मुख्य महाप्रबंधक की शील्ड रायपुर आंचलिक कार्य को प्रदान की गई है।

प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित नाटक प्रतियोगिता के अन्तर्गत "मारीच संवाद" को सर्वश्रेष्ठ नाटक घोषित किया गया और मुख्य महाप्रबधक द्वारा चल वैजयन्ती प्रदान की गई। नाटक में उत्तम अभिनय के लिए श्रीमती संध्या पोदवार को प्रथम पुरस्कार दिया गया तथा संगीत के लिए संयुक्त रूप से सर्वश्री विनोद संघाणी एवं देवाशीष गांगुली को प्रथम पुरस्कार दिए गए।

भोपाल में आयोजित मण्डल स्तरीय तात्कालिक टिप्पण प्रतियोगिता, छायाचित्र प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता में रायपुर के प्रतियोगियों ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। सर्वश्री व्ही०आर० कोप्पर, उप महाप्रबंधक, संगीत शुक्ला, सहायक महाप्रबंधक, एस०एस० जोशी के कर-कमलों से विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

श्री गोविद खण्डेवाल, संयोजक एवं जन संपर्क अधिकारी ने समारोह के आयोजन में सहयोग देने वालों की सराहना की तथा अंत में श्री शकील साजिद ने सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों तथा विद्वानों को धन्यवाद दिया।

हिंदुस्तान स्टील वर्क्स कंस्ट्रकशन लि० भिलाई

हिन्दी पखवाड़ा आयोजन का सिलसिला 12 दिसम्बर, 1994 को आयोजित उद्घाटन समारोह से हुआ। इसी अनुक्रम को आगे बढ़ाते हुए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, राजभाषा प्रश्न मंच (क्विज) प्रतियोगिता हिन्दी टंकण प्रतियोगिता तथा एच०एस०सी०एल० परिवार के बच्चों के लिए हिन्दी सुलेख एवं हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निर्माण भवन स्थित विभागों के अलावा साइट कार्यालयों में भी राजभाषा विचार गोष्ठी एवं परिचर्चा का आयोजन कर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा नियम, अधिनियम की जानकारी तथा वर्ष 1994-95 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए चर्चा हुई एंव समुचित उपाय बातये गये।

इस अवसर पर दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम दिन विभागाध्यक्ष स्तर के 35 अधिकारियों एवं दूसरे दिन 40 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया हिन्दी पखवाड़े के दौरान राजभाषा पत्रिका "निर्माण -भारती" के षष्ठम अंक का प्रकाशन किया गया। इस तरह 26 दिसम्बर, 1994 को हिन्दी पखवाड़ा सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में दिनांक 30 मार्च, 1995 को हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किया गया, राजभाषा पत्रिका "निर्माण भारती" का विमोचन किया गया तथा हिंदी सेवियों को राजभाषा उन्नायक सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर "निर्माण भारती" में प्रकाशित लेख /कविता /संस्मरण के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री शांताराम तिवारी, परियोजनाध्यक्ष एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति और विशिष्ट अतिथि के रूप में दैनिक भास्कर, रायपुर के सम्पादक श्री रमेश नैयर को आमंत्रित किया गया था।

समारोह की अध्यक्षता महाप्रबंधक श्री सुरेन्द्र नाथ सिंह ने की एवं मुख्य वक्ता के रूप में श्री सुरज प्रसाद सिंह, उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) उपस्थित थे।

हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री सत्येंद्र प्रसाद सिंह, उप मुख्य प्रबंधक (कार्मिक) ने इकाई में हुई हिन्दी की प्रगति का विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत किया तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी।

सर्वश्री सूरज प्रसाद सिंह, रमेश नैयर, सुरेन्द्र नाथ सिंह तथा श्री शांताराम तिवारी ने राजभाषा के प्रचार-प्रसार पर बल देते हुये कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करने की अपील की।

मुख्य अतिथि श्री तिवारी के कर-कमलों द्वारा राजभाषा पत्रिका "निर्माण-भारती" का विमोचन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री शिव कुमार प्रसाद सिन्हा, उप-महाप्रबंधक (वर्क्स) द्वारा हिन्दी सेवियों सर्वश्री सूरज प्रसाद सिंह तथा शांताराम तिवारी का राजभाषा उन्नायक सम्मान श्रीफल-शाल भेंटकर किया गया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को एक सौ से अधिक पुरस्कार वितरित किये गये। निर्माण भारती में प्रकाशित उत्कृष्ट लेख / कविता आदि के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। एच०एस०सी०एल० परिवार के बच्चों को हिन्दी कविता पाठ तथा हिन्दी

सुलेख प्रतियोगिता के लिये पुरस्कार दिये गये। सभाध्यक्ष श्री सिंह द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। विशिष्ट अतिथि श्री रमेश नैयर जी को परियोजनाध्यक्ष श्री तिवारी द्वारा संस्थान की ओर से भेंट दी गई।

कार्यक्रम के दौरान हिन्दी कविता पाठ में पुरस्कृत बच्चों कु० मोक्षदा, कु० निताशा, कु० निकिता एवं मास्टर सौरभ श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत गान को सुनकर उपस्थित जन-समुदाय मंत्रमुग्ध हो गये। कार्यक्रम के अंत में हिन्दी विभाग के श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव ने "हिन्दी हिन्दुस्तान की धड़कन, वाणी जनगण मन की" नामक कविता प्रस्तुत की।

केन्द्रीय धान अनुसंधान संस्थान, कटक

केन्द्रीय धान अनुसंधान संस्थान, कटक धान के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान करता है। यह कटक शहर के बाहर पांच किलोमीटर की दूरी पर पारादीप जाने वाली सड़क के किनारे अहिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित है।

इस संस्थान में दिनांक 14 से 20 सितम्बर, 1994 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस दौरान संस्थान के अहिन्दी भाषी प्रांतों के स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहित करने के लिए जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है सुलेख, शब्दावली तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। सुलेख प्रतियोगिता में देवनागरी वर्णमाला तथा हिन्दी में पैराग्राफ एवं शब्दावली प्रतियोगिता में वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द लेखन तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय "हिन्दी देश की एकता को मजबूत करने का एक साधन है" रखा गया था।

अध्यक्ष ने पुरस्कार वितरण के उपरांत समारोह को संबोधित करते हुये कहा कि संस्थान के अधिकांश सदस्यों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो गया है। अब हिन्दी सबके जबान में आ चुकी है। इसका सरकारी फाइलों में आने का वक्त आ गया है। उन्होंने सभी उपस्थित सदस्यों से आग्रह किया कि वे शुरूआत के रूप में अपना कुछ काम हिन्दी में करने का प्रयास करें।

अंत में सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाईयां दी। समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों के प्रति उनके अभार प्रदर्शन तथा धन्यवाद अपर्ण के साथ समारोह का समापन हुआ।

केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान एडनवाला रोड, माटुंगा, बम्बई

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान में हिंदी-दिवस / सप्ताह समारोह का आयोजन बृहत स्तर पर किया गया। यह समारोह दिनांक 14.9.1994 से 24.9.1994 तक लगभग एक पखवाड़े तक चला। इस समारोह में हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं को आयोजित किया गया।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप श्री रमाकान्त शर्मा, उद्भ्रान्त, सहायक केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन ने कहा कि आज तक उन्हें पता ही नहीं कि यह संस्थान किसान भाईयों के लिये एक मददगार, सहायक के तौर पर कार्य करती है और इस प्रकार सहायता देनी वाली सरकार संस्थान, बम्बई जैसे महानगर में हो सकती है। जिसका ज्यादातर कार्य तकनीकी तथा वैज्ञानिक पद्धति का होने के बावजूद यहां अपना रोजमर्रा का ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी भाषा में होता आ रहा है। यह हिन्दी भाषा के लिये तथा देश के लिये गौरव की बात है।

समापन समारोह के दिन सौमय्या कालेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० हरिवंश पांडे जी ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि हिन्दी के साथ-साथ हमें क्षेत्रीय भाषाओं के विकास पर भी बल देना चाहिये। उन्होंने आज यह भी कहा कि हमें अपनी मातृभाषा और राजभाषा को अधिक से अधिक समृद्ध करना चाहिये।

इसके पश्चात् श्री एम० एस० पार्थसारथी, प्रधान वैज्ञानिक जो कि इस वर्ष संस्थान से निवृत्त होने वाले है, उनका इस संस्थान में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने तथा उनकी हिंदी-सेवा के लिये सम्मान किया गया।

इस वर्ष से संस्थान में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने वाले विभाग/अनुभाग को राजभाषा चल-शील्ड देकर हिन्दी को प्रोत्साहित करना शुरु किया गया है। इस वर्ष प्रशासन अनुभाग को ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी में करने के कारण राजभाषा चल-शील्ड प्रदान की गई। प्रशासन अधिकारी श्री म०कु० जैन, ने प्रशासन अनुभाग की तरफ से राजभाषा चल-शील्ड को स्वीकार किया।

समारोह के अन्त में श्री म०कु० जैन, सदस्य ने मुख्य अतिथि डा० हरिवंश पांडे जी, समारोह अध्यक्ष डा० पाटील तथा आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री मुन्तजिर अहमद को धन्यवाद प्रदान किया। उन्होंने सभी निर्णायकों तथा संस्थान के उन सभी कर्मचारियों का भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से इस समारोह में हिस्सा लिया। अंत में उन्होंने आयोजन समिति के सभी सदस्यों का भी आभार व्यक्त किया।

हिंदी शिक्षण योजना (दक्षिण क्षेत्र), मद्रास

हिंदी शिक्षण योजना (गृह मंत्रालय) दक्षिण क्षेत्र, मद्रास में 23 सितंबर 94 को मनाया गया। इस अवसर पर काफी संख्या में शिक्षण व शिक्षणोत्तर कर्मचारी व अधिकारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम सरस्वती मां की बंदना से प्रारम्भ हुआ। स्वागत भाषण उप निदेशक श्री तिरुमलै ने किया।

इस अवसर पर हिन्दी दिवस/पखवाड़े के उपलक्ष्य में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में सफल कर्मचारियों को मुख्य अतिथि श्री क्षेत्रपाल शर्मा ने पुरस्कार प्रदान किए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री शर्मा ने हिन्दी को देश की जनभाषा/राष्ट्र भाषा बनाने में बापूजी, मुंशीजी व अयांगर जी आदि महानुभावों की सेवाओं को याद किया, जो देश की आजादी के दौरान की गई। उन्होंने संविधान में वर्णित आकांक्षाओं को पूरा करने की सभी से प्रार्थना की एवं याद दिलाया कि सेवा में आने से पूर्व सरकारी कर्मचारी संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ लेते हैं। उसके अनुसार देश की राजभाषा हिन्दी है और हमें अपनी निष्ठा शपथ का पालन करना चाहिये। हम देश की जनता के प्रति लोक सेवक होने का दायित्व तभी पूरा कर सकते हैं, जब जनता का काम जनता की भाषा में हो। श्री शर्मा ने कहा कि इसीलिए यह दिवस/पखवाड़ा हिन्दी दिवस के साथ-साथ भारतीय भाषाओं के सौहार्द

दिवस के रूप में मनाया गया है। श्री शर्मा ने हिन्दी शिक्षण योजना मद्रास द्वारा किये गये प्रत्नत्यों की सराहना की।

धन्यवाद ज्ञापन सहायक निदेशक श्री नवनाथ कांबले ने दिया। अंत में राष्ट्रमान के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, करनाल

लघु उद्योग सेवा संस्थान, करनाल में 14 सितम्बर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम, का उद्घाटन, संस्थान के निदेशक श्री मनमोहन वर्मा ने किया इस अवसर पर संस्थान के नामित राजभाषा अधिकारी श्री टी० आर० कठेरिया ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुये हिन्दी दिवस के उद्देश्य एवं महत्व के बारे में बताया। तत्पश्चात संस्थान के निदेशक, श्री मनमोहन वर्मा ने भी सभी सदस्यों से अपील की कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा एवं राजकाज की भाषा है। हमारे संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया है एवं यह सम्पर्क भी भाषा है और हमें केवल 14 सितम्बर से 21 सितम्बर को ही अपना हिन्दी का कार्य बढ़ाने का प्रयास नहीं करना है बल्कि पूरे वर्ष अपना हिन्दी का ज्यादा-से-ज्यादा काम करना है। हिन्दी एक सरल भाषा है, इस भाषा में पत्राचार करना आसान है। हमें अपनी मातृभाषा जिसे संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है, का सम्मान करते हुये अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करना चाहिये।

महासर्वेक्षक कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून

महासर्वेक्षक कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून में 15 फरवरी, 1995 को वार्षिक हिन्दी समारोह मनाया गया। समारोह में विभाग के देहरादून स्थित अन्य कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता भारत के महासर्वेक्षक मेजर जनरल सुरेन्द्र प्रकाश मेहता नें की। भारत के महासर्वेक्षक ने दीप प्रज्वलित करके समारोह का शुभारंभ किया।

समारोह की आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री कुंवर सिंह पंवार, उपनिदेशक ने समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों का स्वागत करते हुये कहा कि इस समारोह का मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित करना है। उन्होंने समारोह से पूर्व आयोजित हिन्दी विषयक विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में विचार व्यक्त करते हुये कहा कि निरंतर अभ्यास से अर्जित ज्ञान में वृद्धि होती है। अतः हिन्दी में प्रशिक्षित व्यक्तियों के ज्ञान का सदुपयोग किया जाना चाहिये।

समारोह में भारत के महासर्वेक्षक कार्यालय में सितम्बर, 1994 माह में "राजभाषा मास" के रूप में आयोजित हिन्दी विषयक विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा, निबंध लेखन भाषण, कविता-पाठ, सुलेख, टिप्पण और आलेखन, हिन्दी टाइपिंग के विजेताओं और कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में हिन्दी में सर्वोत्तम काम करने वाले कर्मचारियों को आकर्षक पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र वितरित किये। वर्ष 1993-94 में हिन्दी में सर्वोत्तम कार्य करने के लिए कार्यालय के विनियम अनुभाग को चल वैजयन्ती प्रदान की गई।

समारोह में ब्रिडियर आर०एन० श्रीवास्तव, उपमहासर्वेक्षक ने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों के साथ पूरा पत्राचार हिन्दी में ही किया जाना चाहिये। उन्होंने तकनीकी शब्दों के हिंदी पर्याय ढूंढने के बजाय ऐसे शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखने का सुझाव देते हुये कहा कि टैलेक्स संदेश हिन्दी में भेजे जाने चाहिये।

भारत के महासर्वेक्षक ने कार्यक्रम की सराहना करते हुये कहा कि "क" क्षेत्र में स्थित होने और विभाग का मुख्यालय होने के कारण इस कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को पूरा कार्य राजभाषा हिन्दी में ही करने का आदर्श स्थापित करना चाहिये। इसके लिये प्रत्येक स्तर पर जागरूकता जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमें हिन्दी के प्रयोग के बारे में सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति शीघ्रातिशीघ्र करने के लिए हर संभव उपाय करने चाहिए। उन्होंने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को बधाई दी।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उत्तर पूर्वी पर्वतीय कृषि अनुसंधान परिसर, बड़ापानी (मेघालय)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के बड़ावनी में स्थित उत्तर पूर्वी पर्वतीय कृषि अनुसंधान परिसर में 14 सितंबर, 94 से 21 सितंबर, 94 तक हिंदी दिवस व सप्ताह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा० शांतिमय लश्कर ने संस्थान मुख्यालय तथा सभी केंद्रों के कर्मचारी गणों के नाम एक अपील जारी कर उनका आह्वान किया कि "जैसे वर्ष भर साधना करते हैं उपासक लोग किंतु अक्टूबर में आयोजित पूजा उनमें एक नई स्फूर्ति भर देती है ठीक उसी प्रकार हिंदी दिवस से हमें वर्ष भर राजभाषा में कार्य करने की प्रेरणा व नवस्फूर्ति प्राप्त करनी चाहिए और हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए।

हिंदी दिवस का शुभारंभ कर्मचारियों के नन्हें-मुन्हें बाल कलाकारों द्वारा "सरस्वती वंदना" से हुआ। संस्थान के निदेशक ने दीप जलाकर समारोह का विधिवित उद्घाटन किया। इस अवसर पर "हम होंगे कामयाब" की धुन पर एक राजभाषा गीत जिसे कि संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री हरीश जोशी ने लिखा तथा संगीतबद्ध किया। लोगों द्वारा काफी सराहा गया जिसके आरंभिक बोल इस प्रकार हैं। "हिंदी सीखेंगे जरूर, सीखेंगे जरूर, सीखेंगे जरुर एक दिन हम सब हिंदुस्तानी हैं, हां हां हिंदुस्तानी हैं, हिंदी सीखेंगे जरुर एक दिन सब भाषाए अपनी हैं ये हिंदी की बहनें हैं जैसे माला हो मोतियों की, पर हिंदी तो हिंदी है सारे देश की बिंदी है, हिंदी सीखेंगे जरुर एक दिन। बंगला हो असमिया हो, उड़िया हो, गुजराती हो, सबकी अपनी अलग शान है, पर हिंदी तो हिंदी है, सारे देश की बिंदी है, हिंदी हम सबकी पहचान है।" संस्थान के खासी, बंगला, असमिया, गारो, जयन्तिया तथा दक्षिण भारतीय कर्मचारियों ने एक साथ मिलकर इस गीत को गाया।

संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री हरीश जोशी ने इस अवसर पर उपस्थित कर्मचारियों एवं अधिकारियों से राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन संबंधी जानकारी दी तथा सप्ताह के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की रूप रेखा बताते हुए उनसे निवेदन किया कि वे अधिक से अधिक संख्या में अपना योगदान दें ताकि हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाया जा सके।

गृह मंत्रालय हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

गृह मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की 34वीं बैठक श्री पी०एम० सईद, गृह राज्य मंत्री (राज्य) की अध्यक्षता में सोमवार, 27 मार्च, 1995 संसद भवन एनेक्सी, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

बैठक की कार्यवाही प्रारंभ करते हुए अध्यक्ष महोदय ने गृह मंत्री जी की ओर से, अपनी ओर से तथा गृह मंत्रालय के सब अधिकारियों व कर्मचारियों की ओर से उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने बताया कि गृह मंत्री जी स्वयं बैठक लेना चाहते थे लेकिन अपरिहार्य कारणों से वे स्वयं नहीं आ पाए हैं और उन्होंने यह जिम्मेदारी उन्हें सौंपी है। अध्यक्ष महोदय ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि यह बैठक बहुत देर बाद हो रही है। उन्होंने यह भी बताया कि, जैसा सदस्यों को मालूम है, दो बार बैठक की तारीख व समय निश्चित किया गया था। लेकिन अपरिहार्य कारणवश दोनों बार ऐन वक्त पर बैठक स्थगित करनी पड़ी थी। इस बारे में सदस्यों का कहना था कि बैठक नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिए। कुछ सदस्यों ने यह भी कहा कि अगर गृह मंत्री जी स्वयं बैठक लेने में समर्थ न हो पाएं तो दोनों में से किसी एक राज्य मंत्री की अध्यक्षता में यह बैठक जरुर आयोजित की जानी चाहिए, हालांकि उन्हें खुशी होगी यदि गृह मंत्री जी स्वयं इसके लिए थोड़ा समय निकाल सकें। अध्यक्ष महोदय ने आश्वासन दिया कि यथासंभव समय-समय पर बैठक बुलाने का पूरा प्रयास किया जाएगा।

राजभाषा हिन्दी के वर्तमान स्वरूप की चर्चा करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार-प्रसार औपचारिक एवं अनौपचारिक दो तरह से हो रहा है। औपचारिक रूप से राजभाषा विभाग सरकार की भाषा नीति को लागू करने और अमल में लाने के लिए अधिनियम और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराने में लगा है। दूसरी तरफ समाचार-पत्र, संचार माध्यम, फिल्मों, कारोबार और लोगों के एक जगह से दूसरी जगह, एक प्रदेश से दूसरी प्रदेश में आने-जाने से अनौपचारिक रूप से हिन्दी को बढ़ावा मिल रहा है और अब हम उस मुकाम पर आ पहुंचे हैं जहां से इस दिशा में आगे बढ़ना, हिन्दी को उसका सही दर्जा दिलाना मुश्किल नहीं होगा। सरल व सुबोध के इस्तेमाल पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि हमें ऐसी हिन्दी का इस्तेमाल करना चाहिए जो सभी को आसानी से समझ आये, तभी वह जनमानस की भाषा बनेगी।

अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों को सूचित किया कि 07 नवम्बर, 1994 को महामहिम राष्ट्रपति जी ने गृह मंत्रालय को वर्ष 1991-92 के दौरान हिन्दी में बढ़िया काम करने के लिए तृतीय पुरस्कार के तौर पर वर्ष 1992-93 में हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार स्वरूप "इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड" प्रदान की है। उन्होंने यह भी कहा कि इससे जाहिर है कि मंत्रालय के अधिकारी व कर्मचारी अपने रोजमर्रा के सरकारी कामकाज में हिन्दी के इस्तेमाल को बढ़ावा देने के प्रति जागरूक हैं। उपस्थित सदस्यों ने इस पर हर्ष व्यक्त किया और मंत्रालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई दी। अध्यक्ष महोदय ने यह भी बताया कि मंत्रालय के संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के लिए भी शील्ड योजना लागू है और इसके अंतर्गत पहले तीन स्थान प्राप्त करने वाले कार्यालयों को शील्ड व ट्रॉफी दी जाती है तथा जो अधिकारी व कर्मचारी अपने संगठन को पुरस्कार दिलाने में सब से ज्यादा सहायक होते हैं उन्हें भी सम्मानित किया जाता है। अध्यक्ष महोदय ने आशा व्यक्त की कि बैठक में ऐसे व्यवहारिक सुझाव आएंगे जिनसे गृह मंत्रालय में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में मदद मिलेगी।

बैठक में लिए गए कुछ प्रमुख निर्णय इस प्रकार हैं:

(1) गृह मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की 33वीं बैठक में किये गये निर्णयों/सिफारिशों और उनके अनुपालन के लिए की गई अनुवर्ती कार्रवाई की स्थिति की चर्चा करते हुए विशेष सचिव ने बताया कि 33वीं बैठक में 11 निर्णय/सिफारिश की गई थी जिनमें से 10 पर कार्रवाई पूरी कर ली गई है तथा केवल गोवा, सिक्किम, दमन व दीव को "ख" क्षेत्र में लाने का मामला अभी पूरी तरह से तय नहीं हुआ है। इस मामले की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि सिक्किम सरकार ने सूचित किया है कि कुल कर्मचारियों की तुलना में हिन्दी का ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की संख्या एक से दो प्रतिशत के बीच है। अतः सिक्किम सरकार ने "ख" क्षेत्र में शामिल होने में अपनी असमर्थता व्यक्त की है। उन्होंने यह भी बताया कि गोवा सरकार ने भी "ख" क्षेत्र में शामिल होने में अपनी असमर्थता व्यक्त की है। दमन तथा दीव प्रशासन के साथ पत्र-व्यवहार अभी जारी है, संयुक्त सचिव स्तर से दमन व दीव प्रशासन के मुख्य सचिव को अनुस्मारक भेजे गये हैं और अनुरोध किया गया कि इस बारे में शीघ्र निर्णय लिया जाए। सदस्य इस स्थिति से संतुष्ट नहीं थे और उनका कहना था कि इन राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की ज्यादातर जनता हिन्दी जानती है। इस विषय पर विस्तृत विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि सिक्किम और गोवा में हाल ही में हुए चुनावों के बाद गठित नई सरकारों के साथ पुनः मामला उठाया जाए और उन्हें "ख" क्षेत्र में आने के लिए राजी करने का प्रयास किया जाए। दमन व दीव के बारे में भी यथाशीघ्र समुचित कार्रवाई करके निर्णय लेने का फैसला किया गया।

(2) गृह मंत्रालय में एकलभाषी टेलीप्रिंटरों के स्थान पर द्विभाषी टेलीप्रिंटरों की व्यवस्था करने के बारे में समिति को बताया गया कि 4 अंग्रेजी टेलीप्रिंटरों के साथ-साथ 4 हिंदी टेलीप्रिंटर भी लगाए गए हैं और वे काम कर रहे हैं। सदस्यों ने इस पर हर्ष व्यक्त किया।

(3) हिन्दी टाइप मशीनों के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के बारे में बताया गया कि 2 साल पहले निर्णय किया गया था कि भविष्य में केवल द्विभाषी टाइप मशीनें ही खरीदी जाएं तथा इस निर्णय का अनुपालन किया गया है।

मंत्रालय के संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के बारे में सूचित किया गया कि समुचित कार्रवाई करने के आदेश जारी किए गए थे और अनुरोध किया गया था कि जब तक हिन्दी टाइपराइटरों का निर्धारित लक्ष्य पूरा न हो जाए, अंग्रेजी का कोई भी टाइपराइटर न खरीदा जाए।

(4) समिति को बताया गया कि गृह सचिव की ओर से अपील जारी की गई थी जिसमें मंत्रालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को विशेष रूप से वरिष्ठ अधिकारियों को अपना सरकारी कार्य हिन्दी में करने की अपील की गई थी। श्री नाथू राम मिर्धा, संसद सदस्य का कहना था कि अपील या अनुरोध करके संतुष्ट होना अब काफी नहीं रहा। उन्होंने कहा कि हिन्दी में प्रवीण अधिकारियों को राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत अपना पूरा काम हिन्दी में करने का आदेश दिया जाना चाहिए। इस पर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि किसी पर जोर-जबरदस्ती नहीं की जानी चाहिए और दबाव नहीं डाला जाना चाहिए क्योंकि इससे हिन्दी का अहित होने का ही अंदेशा है। उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार की भाषा नीति सबको साथ लेकर और प्रोत्साहन व प्रेरणा से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की है अतः हमें इस नीति का अनुसरण करते रहना चाहिए।

(5) समिति को बताया गया कि मंत्रालय व उसके लगभग सभी संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन किया जा रहा है। जहां कहीं कोताही नजर आती है, संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया जाता है और उनसे भविष्य में इस धारा का अनुपालन सुनिश्चित करने का अनुरोध किया जाता है।

(6) परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम की छूट के बारे में बताया गया है कि मंत्रालय के जिन संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा परीक्षा ली जाती है, या साक्षात्कार का आयोजन किया जाता है, उनमें तकनीकी विषयों को छोड़कर लिखित परीक्षा व साक्षात्कार में हिन्दी-विकल्प की छूट होती है। सदस्यों का कहना था कि तकनीकी विषयों में भी हिन्दी के विकल्प की छूट की संभावना का परीक्षण किया जाए और अगली बैठक में स्थिति प्रस्तुत की जाए।

उपर्युक्त के अतिरिक्त बैठक में सदस्यों से प्राप्त मदों/सुझावों पर भी विचार किया गया, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

श्री ओम प्रकाश देवड़ा का सुझाव था कि समिति के सदस्यों को अपने विभाग द्वारा दिए जाने वाले प्रशिक्षण केन्द्रों में जाकर भेंट करने का अवसर मिलना चाहिए ताकि समिति द्वारा लिए निर्णय का अमल ठीक ढंग से हो रहा है अथवा नहीं, इसे वह देख सकें तथा सदस्यों को इस विषय में बैठक के अतिरिक्त भी कुछ काम का दायित्व देना चाहिए।

इस सिलसिले में समिति को बताया गया कि विभिन्न मंत्रालयों में हिन्दी सलाहकार समितियों के गठन का उद्देश्य अपने-अपने मंत्रालयों में हिन्दी की प्रगति की समीक्षा करना, मंत्रालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के तरीके सोचना तथा राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए ठोस कदम उठाना है। समिति के सदस्यों के सुझावों तथा समिति की बैठकों में लिए गए निर्णयों का लागू करवाने और प्रगति समीक्षा करने का काम सरकारी तंत्र का है। मंत्रालय में संयुक्त सचिव (प्रशासन) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्यों के सुझावों/निर्णयों के अनुपालन की प्रगति नियमित रूप से मानीटर की जाती है।

श्री नंद किशोर नोटियाल ने विभिन्न मंत्रालयों तथा उपक्रमों में हिन्दी की वर्तनी में अंतर पाए जाने तथा वर्तनी की एकरूपता के बारे में ठोस निर्णय लिए जाने के अपने सुझाव के बारे में कहा कि वे किसी दूसरे समुचित फोरम में उठाएंगे क्योंकि मंत्रालय की सलाहकार समिति समुचित कार्रवाई करने की स्थिति में नहीं है।

स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की वर्ष में एक या दो बैठकें बुलाकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्य को बढ़ावा देने से संबंधित श्री रामलाल पारीख के सुझाव पर स्थिति स्पष्ट करते हुए बताया गया कि राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित सम्मेलनों/संगोष्ठियों में इन संस्थाओं के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया जाता है।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के लिए आवंटित मकान 34 कोटला मार्ग, नई दिल्ली पर चर्चा के बाद अध्यक्ष महोदय ने निर्णय दिया कि मामले का निर्णय हालांकि आवास मंत्रालय द्वारा किया जाना है फिर भी गृह मंत्रालय से उस मंत्रालय को चिटठी लिखने में कोई हर्ज नहीं है। सचिव (राजभाषा) ने आश्वासन दिया कि वे इस बारे में पहल करते हुए आवास मंत्रालय को लिखेंगे।

गुणता आश्वासन महानिदेशालय मुख्यालय

गुणता आश्वासन महानिदेशालय मुख्यालय, रक्षा उत्पादन एवं आपूर्ति विभाग रक्षा मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 41वीं बैठक दिनांक 28 फरवरी, 95 को लेफ्टि० जनरल आर० शिवदासानी, गुणता आश्वासन महानिदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में 13 अधिकारी उपस्थित थे।

सर्वप्रथम समिति के अध्यक्ष लेफ्टि० जनरल आर० शिवदासानी ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने यह सूचित करते हुए हर्ष व्यक्त किया कि डी० जी० क्यू० ए० को हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने पर रक्षा राज्य मंत्री जी ने रक्षा मंत्रालय की पहले नम्बर की राजभाषा शील्ड दी है। यह डी० जी० क्यू० ए० के लिए बड़े गौरव की बात है। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि सभी निदेशकों को हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में और अधिक प्रगति करनी होगी ताकि यह शील्ड डी० जी० क्यू० ए० के पास ही रहे, साथ ही उन्होंने इस क्षेत्र में भविष्य में और अधिक जिम्मेदारी के साथ काम करने की हिदायत भी दी। उन्होंने बताया कि कुछ वर्षों से गु०आ०म०नि० संगठन में तकनीकी संगोष्ठियां आयोजित होने लगी हैं। इस वर्ष गु०आ०नि० (इलै०) ने नेशनल स्टेडियम तथा जबलपुर में गु०आ०नि० (शस्त्र) ने तकनीकी संगोष्ठियां आयोजित की, जिनकी उच्च स्तर पर भूरी-भूरी प्रशंसा हुई है। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि अन्य निदेशालय भी ऐसी संगोष्ठियों की पहल करें। तत्पश्चात बैठक की कार्यसूची की विविध मदों पर विचार-विमर्श हुआ। 'क' व 'ख' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों आदि के साथ शतप्रतिशत पत्राचार हिंदी में करने, कार्मिकों को हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण देने, सी० डी० बी० में द्विभाषी कम्प्यूटर पर कार्य करने का

प्रशिक्षण देने, हिंदी, हिंदी टाइपिंग, हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए नामित कार्मिकों की कक्षाओं में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने आदि के संबंध में उल्लेखनीय निर्णय लिए गए।

केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क उत्तर प्रदेश समाहर्तालय, मेरठ

समाहर्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक श्री सुधांशु शेखर झा, समाहर्ता, केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, मेरठ की अध्यक्षता में दिनांक 28.3.95 को समाहर्तालय के सभा कक्ष में आयोजित हुई। इस बैठक में 19 अधिकारियों ने भाग लिया।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने समिति को सूचित किया कि हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में पूरे मेरठ स्थित सभी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में तीसरा स्थान प्राप्त करने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मेरठ ने इस समाहर्तालय को अचल वैजयन्ती प्रदान की है। हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में मेरठ समाहर्तालय द्वारा प्राप्त की गई इस उपलब्धि पर समिति ने प्रसन्नता प्रकट की। अध्यक्ष महोदय ने इस उपलब्धि के लिए सराहना करते हुए आशा प्रकट की कि भविष्य में हम और भी अच्छा प्रदर्शन कर सकेंगे। सहायक निदेशक (राजभाषा) ने आश्वासन दिया कि यदि इसी तरह सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा तो भविष्य में हम प्रथम स्थान भी प्राप्त कर सकेंगे।

बैठक में अक्टूबर-दिसम्बर, 94 की मंडल कार्यालयों तथा शाखाओं से प्राप्त हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट की विस्तृत समीक्षा की गई। मुख्यालय की शाखाओं द्वारा हिन्दी पत्राचार में वृद्धि पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि यहां हिन्दी की अच्छी प्रगति हो रही है फिर भी न्यायनिर्णय, रिव्यू विधि, सतर्कता शाखाओं तथा अधिकांश मंडल कार्यालयों द्वारा हिन्दी में कम पत्राचार किया जा रहा है। उन्होंने सहायक निदेशक (राजभाषा) को निर्देश दिया कि 50% से कम हिन्दी पत्राचार करने वाली शाखाओं तथा मंडल प्रभारियों को पत्र लिखकर पूछा जाए कि हिन्दी में पत्राचार का प्रतिशत इतना कम क्यों है? समिति के कुछ सदस्यों ने कहा कि सतर्कता विधि रिव्यू तथा न्यायनिर्णय शाखाओं द्वारा भेजे गए आंकड़े गलत प्रतीत होते हैं। इस पर अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिया कि सभी शाखा प्रभारी भविष्य में सही आंकड़े भेजें।

अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिया कि न्यायनिर्णय विधि, रिव्यू तथा सतर्कता शाखाओं द्वारा सभी अनुस्मारक तथा अग्रेषण पत्र हिन्दी में ही भेजे जाने चाहिए जिससे हिन्दी पत्राचार के प्रतिशत में वृद्धि हो सके।

समाहर्ता महोदय ने सहायक निदेशक (राजभाषा) को निर्देश दिया कि वे मंडल कार्यालयों में जाकर वहां हिन्दी की प्रगति संबंधी निरीक्षण करें तथा अधिकारियों/कर्मचारियों का मार्गदर्शन करें।

मंडल कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन सुनिश्चित करने के संबंध में श्री राम प्रकाश, अपर समाहर्ता (निवारक) ने कहा कि हर तिमाही में मंडल कार्यालयों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित करने हेतु सहायक निदेशक (राजभाषा) पत्र लिखा करें और वे स्वयं भी इन बैठकों में भाग लिया करें। समाहर्ता महोदय ने इस पर अपनी सहमति प्रकट की।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि यह अच्छी बात है कि हमारे समाहर्तालय में हिन्दी में चहुंमुखी विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि यहां जितने उत्सव या कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं उनमें मैं स्वयं हिन्दी में बोलता हूं तथा अन्य अधिकारी भी हिन्दी में ही बोलते हैं। उन्होंने सभी सदस्यों का आह्वान किया कि वे हिन्दी कार्यान्वयन हेतु और अधिक प्रयास करें।

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल, हरियाणा

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चौथी बैठक दिनांक 31 मार्च, 1995 को संस्थान के समिति कक्ष में संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं निदेशक डा० नरेन्द्र कुमार त्यागी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में संस्थान के सभी विभागाध्यक्षों/इकाइयों के प्रभारियों/सहायक एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि संस्थान के कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य करने की क्षमता बढ़ाने हेतु एक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाये जिसमें कम से कम 25 लिपिक/अन्य कर्मचारी भाग ले सकें। निदेशक महोदय ने पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर की गई अनुवर्ती कार्यवाही पर संतोष प्रकट करते हुए सभा में उपस्थित सभी अधिकारियों के उनके विभागों/इकाइयों द्वारा आगामी वर्ष के राजभाषा कार्यान्वयन के वार्षिक कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग देने हेतु आग्रह किया। समिति के सचिव डा० श्रवण कुमार दुबे ने सभा में उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया।

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 20.3.95 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रियर एंडमिरल बी० आर० मेनन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में अध्यक्ष सहित 9 सदस्य उपस्थित थे।

बैठक में अध्यक्ष महोदय ने सर्वप्रथम सदस्यों का स्वागत किया। इसके बाद बैठक की कार्यसूची की विभिन्न मदों पर विचार-विमर्श हुआ। बैठक में हिन्दी पत्राचार को बढ़ाने, पर्सनल कम्प्यूटर की मरम्मत, धारा 3(3) का अनुपालन, प्रशिक्षु विद्यालय में हिन्दी का प्रयोग, प्रेरणा देने वाले वीडियों कैसेटों की खरीद और नुक्कड़ नाटकों द्वारा हिन्दी का प्रचार आदि विविध मदों पर यथोचित निर्णय लिए गए।

भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय, वाराणसी

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मण्डल कार्यालय, वाराणसी की तिमाही बैठक वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक श्री रामचन्द्र अग्रवाल की अध्यक्षता में दिनांक 27.3.95 को सम्पन्न हुई। जिसमें 11 अधिकारी/सदस्य उपस्थित हुए थे।

बैठक में सर्वप्रथम राजभाषा अधिकारी द्वारा पिछले त्रैमासिक बैठक की कार्यवाही पढ़ी गयी और उसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गयी।

वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की स्थिति पर चर्चा हुई:—सचिव ने बताया कि इस मण्डल में (1) पत्राचार (2) चेकों

का भुगतान (3) तार भेजना एवं प्रपत्रों की छपाई का कार्य शत-प्रतिशत देवनागरी में हो रहा है जिसके लिए हमारी स्थिति न कि मात्र उत्तर मध्य क्षेत्र बल्कि पूरे "क" क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट है। सदस्यों ने करतल ध्वनि से प्रसन्नता व्यक्त की। जो क्षेत्र जहां लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में कुछ पीछे हैं वहां भी त्वरित गति से सुधार हुआ है।

सचिव ने वर्ष 1994-95 की प्रमुख उपलब्धियों का विवरण देते हुए बताया कि दिनांक 02.03.95 को हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में नगर के लगभग 125 केन्द्रीय/सार्वजनिक उपक्रमों/बैंकों एवं निगमों की श्रेणी में हमारे मण्डल कार्यालय में हुए सर्वाधिक एवं सर्वोत्कृष्ट रूप से देवनागरी में कार्य करने के लिए श्री दिग्विजय कुमार, उप आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक को एक चल वैजयन्ती एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक द्वारा यहां किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण एवं आंकड़ा प्रस्तुत करने पर वहां उपस्थित सदस्यों ने तालियों की गड़गड़ाहट से प्रसन्नता व्यक्त की।

मण्डल कार्यालय के विभागों में पत्राचार व तार आदि में लक्ष्य प्राप्ति लगभग शत-प्रतिशत है तथा 29 शाखाओं में से 20 शाखाओं में पत्राचार व तार आदि में शत-प्रतिशत का लक्ष्य लगभग प्राप्त कर लिया है। शेष शाखाएं भी लगभग शत-प्रतिशत के निकट पहुंच गयी हैं।

उत्तर मध्य क्षेत्रीय कार्यालय में मण्डलों को सम्पर्क अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारियों की बैठक में भी हमारे आंकड़े तथ्यपरक पाए गये। समय से सभी विवरणियां भेजे जाने एवं राजभाषा संबंधी कार्रवाई में अग्रणी होने के लिए क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी एवं क्षेत्रीय प्रबन्धक द्वारा प्रशंसा की गयी।

हम अपने यहां तथा शाखाओं में कार्यान्वयन समिति की बैठक निर्बाध रूप से करते हैं, हिन्दी दिवस मनाते हैं तथा वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए दिशा निर्देश का पालन करते हैं।

दिसम्बर 94 तिमाही में विभिन्न शाखाओं/विभागों से प्राप्त प्रगति विवरणों के आधार पर मण्डल में स्थिति प्रस्तुत की गयी जो इस प्रकार हैं—धारा 3(3) के कागजात 100% द्विभाषी रूप में जारी किए गए। हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए। मूल पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग लगभग 100 प्रतिशत हुआ। 'अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में' श्री चन्द्रशेखर पाठक, प्रबन्धक (का०औ०सं०) ए० सम्पर्क अधिकारी (राजभाषा) ने श्री एस० सी० एल० श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी के लगभग डेढ़ वर्ष के कार्यकाल में मण्डल कार्यलय में हिन्दी में कार्य की दिशा में अनवरत एवं उत्साहपूर्ण कार्यों के लिए किए गए प्रयास की सराहना की एवं अध्यक्ष महोदय ने स्मृति-चिह्न प्रदान कर उनका सम्मान किया।

अन्त में अध्यक्ष के धन्यवाद के साथ बैठक का समापन हुआ।

पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ मण्डल

पूर्वोत्तर रेलवे की लखनऊ मण्डल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की इस वर्ष की प्रथम बैठक 4 अप्रैल, 95 को मण्डल कार्यालय में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता मण्डल रेल प्रबन्धक श्री अस्लम महमूद ने की। श्री महमूद ने कहा कि इस मण्डल में राजभाषा (हिन्दी) की प्रगति अन्य मण्डलों से कहीं अधिक है किन्तु शत-प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए इस दिशा में हमें ढिलाई नहीं करनी है। हिन्दी में किये गये कार्यों के लिए सिगनल एवं कार्मिक शाखा के अधिकारियों को रेलवे बोर्ड द्वारा प्रदत्त पुरस्कारों की चर्चा करते हुए उन्होंने लखनऊ मण्डल के अधिकारियों की हिन्दी के प्रति-प्रतिबद्धता की सराहना की। मण्डल के बड़े—बड़े स्टेशनों पर स्थापित 13 पुस्तकालयों की उपयोगिता के बारे में बताया कि इनसे रेल कर्मचारी एवं उनके आश्रित परिवारजन भी लाभान्वित हो रहे हैं।

बैठक में रेलवे बोर्ड के संयुकत निदेशक (राजभाषा) श्री के० के० चौहान ने पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मण्डल में हिन्दी प्रयोग की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने अधिकारियों से इस दिशा में विशेष सहयोग का अनुरोध किया और कहा कि इससे अधीनस्थ कर्मचारियों का मनोबल बढ़ेगा एवं हिन्दी प्रयोग की प्रगति पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। मुख्यालय गोरखपुर वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/1, श्री चन्द्रगोपाल शर्मा ने राजभाषा अधिकारी विहीन मण्डल की कार्यप्रणाली को सुचारू रूप से चलाने के लिए उप मुख्य राजभाषा अधिकारी कार्यपद्धति की सराहना की और बताया कि लखनऊ मण्डल की परम्परायें प्रशंसनीय रही हैं। श्री शर्मा ने पुराने टाइपराइटरों के कुंजीपटल बदलवाने के स्थान पर नये टाइपराइटरों की खरीद, कम्प्यूटरों पर हिन्दी का प्रयोग एवं सभी बैठकों से पूर्व निरीक्षण एवं निगरानी तन्त्र को चुस्त करने पर बल दिया।

कार्यभारी सचिव एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अरविन्द कुमार ने विगत तिमाही की प्रगति रपट प्रस्तुत करते हुए मण्डल में राजभाषा के प्रयोग की समीक्षा की और बताया कि लखनऊ मण्डल में हिन्दी प्रयोग का प्रतिशत 98-5% है।

अपर मंडल रेल प्रबन्धक, श्रीमती सुषमा पाण्डे के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुई।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क समाहर्तालय, नागपुर

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क समाहर्तालय कार्यालय, नागपुर की पुनर्गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 17वीं बैठक दिनांक 23.3.95 को हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री जेड० बी० नगरकर समाहर्ता की अध्यक्षता में हुई।

बैठक के प्रारंभ में अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया। तत्पश्चात पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा की गई और फिर बैठक की कार्यसूची की विविध मदों पर विचार विमर्श हुआ।

अधिकारियों/कर्मचारियों के हिन्दी प्रशिक्षण एवं हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण के बारे में समिति को बताया गया कि जनवरी, 1995 सत्र से 1 अधिकारी और दो कर्मचारियों को हिन्दी शिक्षण तथा फरवरी, 1995 सत्र में दो कर्मचारियों को हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण के लिए भेजा गया है।

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिसम्बर, 1994 को समाप्त तिमाही की रिपोर्ट की समीक्षा करने पर स्पष्ट हुआ कि हिन्दी पत्राचार के अंतर्गत 66% पत्र हिन्दी में भेजे गए हैं जो कि निर्धारित लक्ष्य से कम हैं। हिन्दी पत्राचार के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक निदेश दिए गए। उक्त अवधि

में हिन्दी में तार भेजने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

आकाशवाणी, दरभंगा

आकाशवाणी, दरभंगा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 18.4.1995 को श्री त्रिपुरि कांत शर्मा, केन्द्र निदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में 15 सदस्य उपस्थित थे। सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय द्वारा पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा की गई। तत्पश्चात बैठक की कार्यसूची की विविध मदों पर विस्तार के विचार विमर्श हुआ। पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग और राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का कड़ाई से अनुपालन करने के लिए सभी अनुभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए गए। प्रशासन में प्रयुक्त अंग्रेजी के फार्मों के हिन्दी रूपातर प्राप्त करने के लिए संबंधित कार्यालयों से पत्राचार करने हेतु भी आवश्यक निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्त कार्यशालाओं, संगोष्ठियों आदि का आयोजन करने, कर्मचारियों को हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण देने तथा प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करने आदि के बारे में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से उल्लेखनीय निर्णय लिए गए।

आकाशवाणी, हैदराबाद

आकाशवाणी हैदराबाद की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 1995-96 की प्रथम बैठक दिनांक 4.5.1995 को सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री वी० वी० शास्त्री, केन्द्र निदेशक ने की । बैठक में 31 मार्च, 1995 को समाप्त तिमाही की हिंदी की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई। हिंदी पत्राचार के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए। उक्त अवधि में हिंदी में कोई तार नहीं भेजे गए। इस संबंध में निर्णय किया गया कि भविष्य में तारों की डाक प्रतियां हिंदी में भेजी जाएं। कर्मचारियों को हिंदी, हिंदी टाईपिंग, हिंदी आशुलिपि के प्रशिक्षण के लिए नामित करने के संबंध में निर्णय लिया गया।

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 1994-95 की तीसरी बैठक 31.3.95 को मुख्य परिचालन प्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री राम अवध पाण्डेय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्यालय के विभिन्न विभागों में हो रही हिंदी की प्रगति की समीक्षा की गई। कार्मिक विभाग द्वारा "पूर्वोत्तर रेल के राजपत्रित अधिकारियों की वर्गीकृत सूची" पुस्तिका रेल पर पहली बार हिंदी में प्रकाशित की गई। सिगनल दूर संचार द्वारा टेलीफोन निर्देशिका हिंदी में तैयार की गई। यांत्रिक कारखाने में जिस्ट कार्ड युक्त कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य किया जा रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से करने, द्विभाषिक इलेक्ट्रानिक टाइपराइटरों/कम्प्यूटरों तथा टेलेक्सों/टेलीप्रिंटरों की हिंदी क्षमता का पूर्ण उपयोग करने और कर्मचारियों/अधिकारियों को इस संबंध में प्रशिक्षित करने आदि विविध निर्णय लिए गए।

केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क, वड़ोदरा

केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क समाहर्तालय, बड़ोदरा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 20.3.95 को श्री ए० के० मित्र, समाहर्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में 19 अधिकारी उपस्थित थे। पिछली बैठक में किए गए निर्णयों की समीक्षा करने के पश्चात् बैठक की कार्यसूची की विविध मदों पर चर्चा हुई। हिंदी पत्राचार, मूल पत्राचार, धारा(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले कागजात आदि के संबंध में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु अध्यक्ष द्वारा आवश्यक निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्त हिंदी टाईपिंग में प्रशिक्षित कर्मचारियों की सेवाओं का भी पूरा-पूरा उपयोग करने, कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने, टेलेक्स द्वारा हिंदी संदेश भिजवाने आदि के संबंध में भी हिंदी के प्रगामी प्रयोग को दृष्टि में रखते हुए अपेक्षित निर्णय किए गए।

केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क समाहर्ता का कार्यालय, औरंगाबाद

केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क समाहर्तालय कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 19.4.95 को श्री अजित कुमार, अपर समाहर्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की 31 मार्च, 1995 को समाप्त तिमाही की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई। निवारक अनुभाग को छोड़कर धारा 3(3) के अधीन आने वाले कागजात सभी अनुभागों द्वारा हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में जारी किए गए। हिंदी में तार भेजने की दिशा में सभी अनुभागों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। लेखा परीक्षा के दौरे के कार्यक्रम एवं लेखापरीक्षा अनुभाग से संबंधित विविध पत्रादि को हिंदी में जारी करने का निर्णय लिया गया। देवगिरी पत्रिका के लिए अधिकारियों से लेख लिखवाने के लिए अध्यक्ष महोदय ने सभी अनुभाग प्रमुखों से कहा ताकि पत्रिका प्रकाशित की जा सके।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें बेंगलूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंगलूर के तत्वावधान में और रक्षा लेखा नियंत्रक बेंगलूर के प्रायोजन में दिनांक 29 मार्च 1995 को रक्षा लेखा नियंत्रक के कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन पदाधिकारियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

प्रतिभागियों का स्वागत डॉ एन० के० नागराज, हिन्दी अधिकारी, रक्षा लेखा नियंत्रक ने किया और कार्यक्रम का उद्घाटन श्री वी० वी० राव, भा०र०ले०से०, नियंत्रक, रक्षा लेखा नियंत्रक ने किया। श्री एस० अनंतकृष्णन, महानिदेशक, सी पी आर आई एवं अध्यक्ष, नराकास ने अपने संबोधन में बताया कि समिति की जिम्मेदारी सदस्य कार्यालयों की जिम्मेदारी है और सदस्य कार्यालयों द्वारा कार्यक्रमों के ऐसे प्रायोजन से समिति सुदृढ़ बनेगी। उन्होंने हर्ष व्यक्त किया कि अभिविन्यास कार्यक्रम के प्रस्ताव को रक्षा लेखा नियंत्रक ने सहर्ष स्वीकारा और कार्यक्रम को आयोजित किया है। डॉ विजया मल्लिक, हिन्दी अधिकारी, सी० पी० आर० आई० और सदस्य सचिव, नराकास ने समिति की ओर से आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण प्रश्नावली, हिन्दी कार्यशालाएं क्यों कैसे और किसलिए और हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट" पर व्याख्यान दिए गए और व्याख्याता थे डॉ एन० के० नागराज, हिन्दी अधिकारी, रक्षा लेखा नियंत्रक, श्री एम०पी० दुबे, सहायक निदेशक और श्री एन० ठाकुर, अनुसंधान अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय बेंगलूर।

इस कार्यक्रम में लगभग 170 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया।

व्याख्यान के पश्चात् "प्रश्न-चर्चा" के सत्र में सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय भाग लिया। दिनांक 10 अप्रैल 1995, को भारतीय प्रबंध संस्थान में मुख्य कार्यपालकों के लिए एक राजभाषा अभिविन्यास/अनुकूलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रतिभागी अधिकारियों का स्वागत श्री जी० वाई० सुहारा, कार्मिक प्रबंधक, भारतीय प्रबंध संस्थान ने किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ के० आर० एस० मूर्ति, निदेशक, भारतीय प्रबंध संस्थान ने दीप प्रज्वलित करके किया। डॉ विजया मल्लिक, हिन्दी अधिकारी, सी० पी० आर० आई० एवं सदस्य सचिव, नराकास ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

श्री एस० अनंकृष्णन महानिदेशक, सी पी आर आई एवं अध्यक्ष नराकास ने आशा व्यक्त की कि उक्त कार्यक्रम राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक ठोस प्रयास साबित होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बी० वी० बल्लाल, उपमहाप्रबंधक, सिंडिकेट बैंक एवं अध्यक्ष, नरकास (बैंक) ने कार्यक्रम के आयोजन पर अपना हर्ष व्यक्त किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में श्री डी० के० पणिक्कर, उपनिदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय ने "राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम एवं राजभाषा विभाग— रूपरेखा और अधिकारी स्तर की टिप्पणियां विषय पर व्याख्यान दिए।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में श्री एन० ठाकुर, अनुसंधान अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय ने "राजभाषा प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में मुख्य कार्यपालकों की भूमिका" विषय पर व्याख्यान दिए।

गोवा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गोवा की 21वीं बैठक दि० 22.2.95 को श्री कृष्णा कान्त, समाहर्ता सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क गोवा की अध्यक्षता में "गोवा चेम्बर आॅफ कॉमर्स, पणजी के "सुरेन्द्रबाबु तिमलो हॉल" में संपन्न हुई।

इस बैठक में वर्ष 1992-93 तथा 1993-94 के दौरान कार्यालयों में हिन्दी के कार्य निष्पादन के लिए, राजभाषा विभाग (पश्चिम क्षेत्र), बम्बई के अधीन गोवा शिपयार्ड लि०, वास्को, मुरगांव पत्तन न्यास, मुरगांव आकाशवाणी कार्यालय, पणजी, जलपरिवहन कार्यालय, मार्मागोवा तथा सीमा शुल्क तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहर्तालय, पणजी को शील्ड/प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ पी० आर० दुभाषी, उप कुलगुरु; गोवा विश्वविद्यालय तथा श्रीमती दुभाषी उपस्थित थीं।

मुख्य अतिथि द्वारा निम्नलिखित कार्यालयों को पुरस्कार-शील्ड/प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

1. सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहर्तालय, पणजी, 2. आकाशवाणी, पणजी, 3. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त का कार्यालय, पणजी, 4. जल परिवहन विभाग, गोवा, 5. गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को, 6. मुरगांव पत्तन न्यास, मुरगांव।

पुरस्कार वितरण के बाद डॉ० दुभाषी ने सभी पुरस्कार प्राप्त कार्यालयों का अभिनंदन किया। अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि सभी सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी चलती है। अपनी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए पुरस्कार देना पड़ता है। हमारी बौद्धिक गुलामगिरी अब तक चल रही है। इस तरह के किसी प्रोत्साहन के बिना ही हर एक को अपनी भाषा के प्रति आदर रखना चाहिए और ज़्यादातर सरकारी कार्य हिन्दी में ही करने का प्रयास करना चाहिए। जनता की भाषा में ही प्रशासन होना चाहिए। विदेशों में अपने अनुभव के अनुसार आपने कहा कि अपनी राष्ट्रभाषा के सिवा दूसरी भाषा विदेशों में नहीं अपनाई जाती है। हर राष्ट्र को अपनी भाषा का अभिमान होता है। उसी प्रकार हम भारतीयों ने अपनी राष्ट्रभाषा का अभिमान रखना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा कामकाज हिन्दी में करने का प्रयास करना चाहिए। हिन्दी ऐसी भाषा है कि भारत के किसी कोने में जाकर हिन्दी में हम एक-दूसरे से बातचीत कर सकते है, एक-दूसरे से विचार-विमर्श कर सकते हैं। राष्ट्रभाषा का प्रचार-प्रसार करना हर भारतीय का कर्तव्य है। हम गर्व से कह सकते है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।

समारोह के अन्त में उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग ने सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार संबंधी कार्य का नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की कार्य का संक्षिप्त में सारांश बताया तथा हिन्दी कार्य के संबंधी मार्गदर्शन किया।

श्रीमती सुनीता यादव, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना ने उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ० पी० आर० दुभाषी, श्री कृष्ण नारायण मेहता, उपनिदेशक (राजभाषा) तथा सभी उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

पटना (बैंक)

नराकास पटना की 20वीं बैठक दिनांक 11-3-95 को होटल चाणक्य, पटना में श्री ए० एन० गांधी, आंचलिक प्रबंधक, बैंक आफ इंडिया की अध्यक्षता में आयोजित हुई। श्री हरि ओम श्रीवास्तव, उपनिदेशक (कार्या०) मुख्य अतिथि थे।

श्री चेतन चांदना, सदस्य सचिव ने सचिवीय रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए समिति को सूचित किया कि राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, पटना द्वारा वर्ष 1993-94 हेतु निम्नलिखित बैंकों को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु पुरस्कृत किया गया है—

राष्ट्रीयकृत बैंक वर्ग—प्रथम पुरस्कारः बैंक आॅफ इंडिया
द्वितीय पुरस्कारः सेंटरल बैंक आॅफ इंड़िया
तृतीय पुरस्कारः यूनियन बैंक आॅफ इंडिया

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक—प्रथम पुरस्कारः मगध ग्रामीण बैंक
द्वितीय पुरस्कारः गिरिडीह क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

वित्त संस्थाएं— प्रथम पुरस्कारः भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक

उक्त पुरस्कार दि० 19.10.94 को आयोजित राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक में बिहार सरकार के संस्थागत वित्त आयुक्त श्री अभिमन्यु सिंह द्वारा प्रदान किये गये। उन्होंने इन बैंकों को समिति की ओर से बधाई दी।

सदस्य सचिव ने यह भी सूचित किया कि पटना नगर रा०भा०का०स० के तत्वावधान में समिति के सदस्य बैंको/संस्थानों द्वारा दि० 14 सितंबर, 94 से 21 सितंबर, 94 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवधि

के दौरान सदस्य बैंकों/संस्थाओं द्वारा अपना अधिकतम कार्य हिंदी में किया गया। साथ ही राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु एक स्वस्थ व अनुकल वातावरण बनाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

सदस्य सचिव ने समिति को सूचित किया कि पटना स्थित बैंकों के राजभाषा अधिकारियों की बैठक दि० 14.2.95 को बैंक आॅफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय के सभाकक्ष में उप अंचलिक प्रबंधक डा० एस० सी० यादव की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिये गये:—

1. कुछ बैंकों में कार्यरत ऐसे टेलेक्स आपरेटरों को, जिन्हें द्विभाषी टेलेक्स यंत्र में प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है, प्रशिक्षित आपरेटरों द्वारा प्रशिक्षित किया जाये।
2. समिति की अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट के प्रोफार्मा में कम्प्यूटरों में हिन्दी के प्रयोग के संबंध में कालम सम्मिलित किया जाये।
3. पटना स्थित ऐसे बैंकों, जिनकी यहां केवल एक शाखा है, को अन्य बैंकों के राजभाषा अधिकारियों को सेवाएं उपलब्ध कराना।

श्री ए० एन० गांधी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सर्वप्रथम बैठक में उपस्थित राजभाषा विभाग के उपनिदेशक श्री हरिओम श्रीवास्तव व सभी बैंक के कार्यपालकों एवं प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा नियम 5 तथा धारा 3(3) का उल्लंघन खेद जनक है, जो नहीं किया जाना चाहिए। जहां तक टाइपराइटरों की प्रतिशतता का संबंध है, उन्होंने कहा कि पहले से खरीदे गये अंग्रेजी टाइपराइटर बेकार पड़े हैं तथा उनका उपयोग नहीं किया जाता है। यहां तक पत्र इत्यादि हाथ से लिख कर भेजे जाते हैं। ऐसी स्थिति में इनकी संख्या में निश्चित रूप से कमी लाई जा सकती है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तिमाही रिपोर्टों की प्रतियां क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कलकत्ता को नियमित रूप से भेजी जाये तथा इनमें दिये गये आंकड़ों का सत्यापन किया जाये।

श्री गांधी ने यह भी कहा कि हिंदी हमारी एकता के लिए भी आवश्यक है। उन्होंने कार्यपालकों से अनुरोध किया कि वे समय—समय पर अपने स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने के लिए कहें। इस बैठक में वरिष्ठ कार्यपालाक की उपस्थिति का यही उद्देश्य है कि हम राजभाषा प्रयोग को उच्च स्तर तक ले जा सकें। राजभाषा अधिकारी भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

जयपुर

दिनांक 28 फरवरी, 1995 को कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.), राजस्थान, जयपुर के सभागार में "जयपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति" की 28वीं अर्द्ध वार्षिक बैठक (वर्ष 1994-95 की द्वितीय बैठक) आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री मदन सिंह शेखावत, महालेखाकार (लेखा व हक.) ने की। गृह-मंत्रालय राजभाषा विभाग के भोपाल स्थित मध्य क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के उप निदेशक श्री जी०आर० वधवा, राजभाषा प्रतिनिधि तथा श्री अतुल देशपाण्डे उप महालेखाकार (प्रशासन) ने सचिव के रूप में बैठक में भाग लिया। जयपुर नगर स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, निगमों तथा उपक्रमों के विभागाध्यक्षों और अन्य प्रतिनिधियों व अधिकारियों ने भी इस बैठक में भाग लिया। बैठक की कार्यवाही का संचालन श्री प्रभाशंकर शर्मा ने किया।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि राजभाषा नीति को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सभी कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान होना चाहिए। इस कार्यालय में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। नियमित कक्षाएं लगती है। वर्ष में दो बार परिक्षाएं होती हैं। इसी प्रकार हिन्दी टाइपिंग व हिन्दी आशुलिपि सिखलाने की व्यवस्था है। इन प्रशिक्षणों में उत्तीर्ण होने वाले कर्मचारियों / अधिकारियों को प्रोत्साहन एवं नगद पुरस्कार भी दिये जाते हैं। अतः सदस्य कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध है कि वे उन अधिकारियों / कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण दिलाएं जो राजकाज हिन्दी में नहीं कर पाते।

राजभाषा हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने को प्रोत्साहन देने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए। वे कार्यालय जो स्वतन्त्र रूप से कार्यशालाएं करने में असमर्थ हैं, वे संयोजक कार्यालय से भी यथा संभव सहायता ले सकते हैं।

श्री जी०आर० वधवा ने इस अवसर पर सर्व प्रथम अध्यक्ष श्री एम० एस० शेखावत, सचिव श्री अतुल देशपाण्डे, राजभाषा कक्ष के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का दिनांक 17 व 18 फरवरी को आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन को सफल बनाने के लिए दिए
गए सहयोग के प्रति राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की ओर से आभार प्रकट किया।

उन्होंने कहा कि कार्यालय प्रधान अपने कर्मचारियों को प्रेरित करें कि अधिक से अधिक पत्राचार हिन्दी में ही किया जाए। वे यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा नियमों का अनुपालन पूर्ण रूपेण हो रहा है। कार्यालय प्रधानों से अपील करते हुए श्री वधवा ने कहा कि वे अपने अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रेरणा दें कि पत्राचार अधिकतर हिन्दी में ही हो। अन्त में उन्होंने क्षेत्रीय सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।

सदस्य कार्यालयों के सुझाव:

नगर राजाभाषा कार्यान्वयन समिति वारा गठित मार्गदर्शन समिति ने यह सुझाव दिया कि बैंक नगर समिति के समान ही वर्ष पर्यन्त राजभाषा संबंधी श्रेष्ठ कार्य के लिए सदस्य कार्यालयों को भी पुरस्कृत किया जाना चाहिए। यह सुझाव श्रेष्ठ व प्रेरणास्पद है। यदि सदस्य कार्यालय इससे सहमत हों तो पुरस्कार योजना प्रारम्भ की जा सकती है। इसके लिए एक समिति का गठन किया जा सकता है जो ये निर्णय ले सके। पुरस्कार कार्यालयों द्वारा प्रायोजित किये जा सकते हैं क्योंकि नगर समिति के पास बैठकों के आयोजन हेतु मात्र 2000/- रुपए की राशि भारत सरकार से प्राप्त होती है।

बैठक के अन्त में सचिव श्री अतुल देशपाण्डे ने अध्यक्ष महोदय श्री मदन सिंह शेखावत, राजभाषा प्रतिनिधि श्री जी० आर० वधवा व सदस्य कार्यालयों से पधारे अधिकारियों का श्रेत्रीय राजभाषा सम्मेलन को सफल बनाने और नगर समिति की 28वीं बैठक में सम्मिलित होने के लिए आभार प्रकट किया तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा की।

इंदौर (बैंक)

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इन्दौर की तेरहवीं बैठक दिनांक 27 जनवरी, 1995 को बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, इन्दौर के सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता बैंक ऑफ इंडिया की उप-महाप्रबन्धक एवं मध्य प्रदेश अंचल की आंचलिक प्रबन्धक व समिति की अध्यक्ष, श्रीमती रंजना कुमार ने की। बैठक में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री जी॰ आर॰ वधवा ने भारत सरकार का प्रतिनिधित्व किया।

सदस्य सचिव, श्री मृत्युंजय कुमार गुप्ता ने बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए समस्त पदाधिकारियों एवं उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया।

विशिष्ट मार्गनिर्देशः

श्री जी॰ आर॰ वधवा ने समिति द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि समिति के प्रयास से इन्दौर शहर के बैंकों में हिन्दी का कामकाज काफी बढ़ा है और इसमें आगे और अधिक वृद्धि होगी, ऐसी सम्भावना है।

श्री वधवा ने कहा कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग और प्रसार न सिर्फ एक संवैधानिक अपेक्षा है बल्कि यह समय की मांग है। बैंक की प्रगति को देखते हुए ऐसा लगता है कि वह दिन अब दूर नहीं है जब इन्दौर के सभी बैंकों में शत-प्रतिशत कामकाज राजभाषा हिन्दी में होने लगेगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम राजभाषा हिन्दी के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय से जुट जाएं। किसी भी क्षेत्र में प्रगति की ओर बढ़ना सबको प्रिय लगता है। प्रगति के लिए यह जरूरी है कि किसी प्रकार की ढील नहीं दी जाए।

श्री वधवा ने सदस्य बैंकों से जोर देकर कहा कि वे रिपोर्टिंग को सही एवं पूरा महत्व दें। सभी सदस्य बैंक अपनी छःमाही रिपोर्ट संयोजक बैंक को समय पर भेजें ताकि तुलनात्मक आंकड़े बैठक में समीक्षा हेतु समय रहते तैयार किये जा सकें। यह कदापि उचित नहीं है कि किसी बैंक से कोई प्रतिनिधि बैठक में चर्चा किये जाने वाले विषयों की जानकारी लिये बिना शामिल हो। भविष्य में सभी बैंक इसका विशेष तौर पर ध्यान रखें।

अध्यक्षीय उद्बोधनः

अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए बैंक ऑफ इंडिया की उप महाप्रबन्धक व समिति की अध्यक्ष, श्रीमती रंजना कुमार ने सदस्य बैंकों से आग्रह किया कि वे राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के संबंध में समस्त सरकारी अपेक्षाओं को पूरे लगन और मनोयोग के साथ पूर्ण करें।

उन्होंने समिति की अब तक की प्रगति की प्रशंसा की तथा यह आशा व्यक्त की कि इंदौर नगर के सभी बैंक एकजुट होकर राजभाषा प्रयोग के संबंध में जो थोड़ी बहुत कमियां रह गई हैं, उन्हें दूर कर लेंगे और इस प्रकार अन्य समितियों के समक्ष एक मिसाल कायम करेंगे।

श्रीमती कुमार ने सदस्य बैंकों से समिति में लिए गए निर्णयों को गंभीरता से लेने व उन पर शीघ्र कार्रवाई करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि बैठक के महत्व को देखते हुए सदस्य बैंकों के वरिष्ठतम अधिकारी अपेक्षित दायित्व को पूरा करें ताकि बैठक में बैंकों की सही तस्वीर उभर सके। उन्होंने कहा कि मेहनत और लगन से किया हुआ कार्य कभी बेकार नहीं जाता।

वार्षिक कार्य-क्रम के अनुपालन की स्थितिः

श्री वधवा ने कहा कि वार्षिक कार्यक्रम के अनुपालन की स्थिति इंदौर नगर में सराहनीय है। जो कमियां हैं, संबंधित बैंक उनके कारणों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें दूर करने के लिए सार्थक प्रयास करें।

अध्यक्ष महोदया ने राजभाषा हिन्दी की सरलता का उल्लेख करते हुए कहा कि यह भाषा अन्य भाषाओं से इतनी आसान है कि छोटे-छोटे बच्चे भी तुरन्त सीख जाते हैं। यदि बैंक कर्मचारी ईमानदारी से प्रयास करें तो वे बहुत कम समय में हिन्दी की कार्यालयीन भाषा सीख सकते हैं और इस प्रकार सरकार की अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं।

हिन्दी दिवस पर प्रतियोगिताएं:—

सदस्य सचिव, श्री गुप्ता ने समिति के तत्वावधान में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न सदस्य बैंकों द्वारा इस वर्ष आयोजित अंतर बैंक हिन्दी प्रतियोगिताओं की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने आयोजक बैंकों—पंजाब नेशनल बैंक, यूको बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंदौर, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और स्वयं बैंक ऑफ इंडिया के प्रति विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन के लिए आभार प्रकट किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आने वाले वर्षों में भी सदस्य बैंकों का इसी प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

प्रसंगवश कुछ सदस्यों ने समिति के तत्वावधान में सदस्य बैंकों द्वारा सम्मिलित कार्यक्रम के शीघ्र आयोजन पर बल दिया। तत्पश्चात् सम्मिलित कार्यक्रम के लिए निम्नलिखित सदस्यों की एक आयोजन समिति का गठन किया:—

(1)	श्री अभिमन्यु शुक्ला,	स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर
(2)	श्री हरे राम बाजपेयी,	यूको बैंक
(3)	श्री दीपक कुमार,	सिंडीकेट बैंक
(4)	श्री मृत्युंजय कुमार गुप्ता, (समिति के संयोजक)	बैंक ऑफ इंडिया

समिति ने यह भी निर्णय लिया कि यह आयोजन समिति उपयुक्त समय पर मिलकर सदस्य बैंकों द्वारा सम्मिलित कार्यक्रम का आयोजन करेगी। यह भी निर्णय लिया गया कि उक्त कार्यक्रम के खर्च का वहन सभी सदस्य बैंक मिलकर करेंगे।

बैंक ऑफ इंडिया का उदाहरण देते हुए श्रीमती कुमार ने कहा कि बैंक में वर्ष 1994-95 को हिन्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है और सारे देश में बैंक के कार्यालय-शाखाओं में राजभाषा प्रयोग के संदर्भ में विस्तृत कार्यक्रम आयोजित कर राजभाषा प्रयोग का माहौल तैयार किया जा रहा है, ऐसा कार्य अन्य बैंक भी कर सकते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों से जो वातावरण तैयार होता है उसे स्थाई रूप देना अत्यंत आसान होता है।

अध्यक्ष महोदय ने समिति के सम्मिलित तौर पर कार्यक्रम के आयोजन के निर्णय की सराहना की और आशा व्यक्त की कि इसके आयोजन से न सिर्फ बैंक के कर्मचारियों अपितु ग्राहकों में भी एक नई चेतना का संचार होगा।

पुरस्कार वितरण:

बैठक की कार्यवाही के अंत में वर्ष 1993-94 के लिए चल वैजयंती प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण किया गया। राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्य के लिए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को चल वैजयंती प्रदान की गई। साथ ही हिन्दी के श्रेष्ठ कार्य के लिए सेण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नैशनल बैंक एवं बैंक ऑफ इंडिया को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये गये।

इसके साथ ही हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अध्यक्ष महोदया, श्रीमती कुमार व स्टेट बैंक ऑफ इंदौर के उप महाप्रबंधक, श्री पी० के० पंडा ने पुरस्कार प्रदान किये।

अंत में यूको बैंक के राजभाषा अधिकारी, श्री हरेराम बाजपेयी ने बैठक के सफल आयोजन व सक्रिय भागीदारी के लिए भारत सरकार के प्रतिनिधि, श्री वधवा व समिति की अध्यक्ष महोदया तथा सभी उपस्थित सदस्यों के प्रति आभार माना। इसके साथ ही बैठक की कार्यवाही संपन्न हुई।

कलकत्ता (बैंक)

यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं समिति अध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र कपूर की अध्यक्षता में कलकत्ता बैंक "टॉलिक" की दिनांक 20 फरवरी, 95 को 18वीं बैठक सम्पन्न हुई। समिति की उक्त बैठक में सदस्य बैंक वित्तीय संस्थाओं द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए वर्ष 1992 की राजभाषा चल वैजयन्ती, राजभाषा कप एवं श्रेष्ठता प्रमाण पत्र विजेता सदस्य बैंकों को अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रदान किए गए। साथ ही "टॉलिक" के तत्वाधान में "हिन्दी-दिवस" के अवसर पर आयोजित की गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में विजयी घोषित किए गए कर्मचारियों को पुरस्कार/प्रमाण-पत्र भी उक्त बैठक में अध्यक्ष महोदय द्वारा वितरित किए गए।

जबलपुर

दिनांक 17 एवं 18 फरवरी, 1995 को जयपुर में आयोजित सम्मेलन में जबलपुर की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए वर्ष 1991-92 एवं 92-93 के लिए क्रमशः तृतीय एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने के लिए ट्रॉफी एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया। इस शानदार उपलब्धि के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष/महाप्रबन्धक श्री एन० आर० बनर्जी, नगर के सभी सदस्य कार्यालयों को हार्दिक बधाई देते हैं।

कार्यक्रम का आयोजन जयपुर विश्व विद्यालय के मानविकी सभागार में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री बलीराम भगत उपस्थित हुए तथा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर के अध्यक्ष श्री एस० एन० मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रमुख आमंत्रितों के रूप में भारत सरकार राजभाषा विभाग के सचिव एवं भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार श्री वीरेन्द्र प्रकाश, राजभाषा विभाग के निदेशक (तकनीकी) श्री बृजमोहन सिंह नेगी, संयुक्त सचिव श्री देवस्वरूप उपस्थित थे, इस अवसर पर मध्य क्षेत्र के कार्यक्षेत्र में आने वाले लगभग दो सौ चालीस कार्यालयों और विभागों के प्रमुख और प्रशासनिक प्रधान तथा उनके हिन्दी अधिकारी एवं अनुवादक उपस्थित थे।

ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम के उपरान्त दिनांक 18 फरवरी को लघु उद्योग सेवा संस्थान जयपुर में कम्प्यूटर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसमें अनेक प्रतिष्ठित कम्पनियों ने हिन्दी में काम करने वाले साफ्टवेयरों का प्रदर्शन किया। निदेशक (तकनीकी) श्री बृजमोहन सिंह नेगी ने कम्प्यूटरों के द्विलिपीय संचालन मे आने वाली कठिनाइयों एवं उनके निराकरण के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला।

झांसी

19-1-95 को नराकास झांसी की बैठक मंडल रेल प्रबंधक के सभाकक्ष में श्री आर० एन० आगा की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

बैठक के प्रारम्भ में समिति के सचिव एवं झांसी मंडल के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, श्री रा० च० धमानियां ने सभी केन्द्रीय कार्यालयों/राष्ट्रीयकृत बैंकों/उपक्रमों से पधारे सदस्यों/प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

श्री आर० एन० आगा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत सरकार की नीति के अनुसार सभी हिन्दी जानने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में काम करना है इसके साथ ही साथ आपको राजभाषा नियमों में बताये गये नियमों का भी अनुपालन करना है।

उन्होंने कहा कि चूंकि हम सब हिन्दी भाषी क्षेत्र में कार्य कर रहे हे इसलिए भी यह जरूरी है कि आप सब हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और संविधान की राजभाषा नीति तथा गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हमें हिन्दी के प्रचार-प्रसार व प्रयोग को बढ़ाने का जो दायित्व सौंपा गया है, उसे पूरा करें। इससे पहले इस नगर राजभाषा समिति की बीस बैठकें हो चुकी हैं जिसमें आप सब लोग भाग ले चुके हैं। मुझे आशा है कि आप सब लोग राजभाषा नियमों से अच्छी तरह से परिचित होंगे।

उन्होंने आगे कहा कि मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई है कि नगर की इस समिति ने पिछले तीन-चार सालों में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, विचार-गोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की हैं। ये मिला-जुला प्रयास बहुत सराहनीय है। मैं चाहूंगा कि आप सब इसी प्रकार मिल-जुल कर कार्यक्रम करते रहें जिससे हिन्दी का प्रचार-प्रसार निरन्तर बढ़ता रहे।

अध्यक्ष ने दि ओरियंटल इंश्योरेंस कम्पनी को प्रथम, भारतीय खाद्य निगम को द्वितीय तथा बेतवा नदी परिषद् को तृतीय स्थान की "राजभाषा चल बैजयंती" एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये। इसके अलावा पिछले वर्षों में जिन-जिन कार्यालयों को चल बैजयन्तियां प्राप्त हुई थीं, उनको भी प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

सदस्यों द्वारा दिये गये सुझाव और उन पर चर्चा

श्री दत्तात्रेय नारायण गोस्वामी ने केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के प्रतिनिधि ने निम्नलिखित सुझाव दिये:—

(अ) कार्यालय मंडल इंजीनियर दूर संचार, झांसी के दो विज्ञापन दैनिक भास्कर (15-9-94) में अंग्रेजी में प्रकाशित हुए इसी प्रकार दि० 14-12-94 के दैनिक जागरण एवं भास्कर में भी विज्ञापन अंग्रेजी में प्रकाशित हआ जो सभी हिन्दी में होना चाहिए।

(ब) आयुक्त केन्द्रीय विद्यालय संगठन लखनऊ से शिक्षकों के पद हेतु भर्ती के फार्म मात्र अंग्रेजी में छपवाए गए।

(स) दि॰ 29.8.94 के दैनिक समाचार पत्र भास्कर में वरि॰मं॰ इंजी॰, वि॰लो॰शै॰ का टेन्डर नोटिस अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया इस प्रकार दि॰ 20.7.94 के दैनिक भास्कर एवं 3.5.94 के दैनिक जागरण में वरि॰मं॰सि॰ एवं दू॰सं॰ विभाग का टेन्डर नोटिस अंग्रेजी में निकाला गया और दि॰ 25-4-94 के दैनिक भास्कर में मं॰रे॰प्र॰ (मैके) का टेंडर नोटिस अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ जबकि ये सभी टेंडर नोटिस हिन्दी में प्रकाशित होना चाहिए।

(द) मध्य रेलवे झांसी मंडल की एक जीप सं॰ एम॰आई॰एच॰ 6035 पर आगे "सी॰आर॰ रनिंग स्टाफ" केवल अंग्रेजी में लिखा है।

(ग) झांसी रेलवे स्टेशन के बुकिंग हाल के दरवाजे पर मात्र अंग्रेजी में "रिजर्वेशन" लिखा हुआ है जबकि नियमानुसार ऊपर हिन्दी और नीचे अंग्रेजी में होना चाहिए।

(र) मंडल रेल प्रबंधक के सभाकक्ष के निकट कक्षों में पटल पर "रिसेप्शन और लंच रूम" और डी॰आर॰एम॰ एण्ड पी॰ए॰डी॰ आर॰एम॰ मात्र अंग्रेजी में लिखा हुआ है जो हिन्दी में होना चाहिए।

(ल) अनेक रेलवे अधिकारियों के आवास गृहों में अधिकारियों के नाम, पदनाम प्लेट केवल अंग्रेजी में दरवाजे पर लगे हुए हैं जो हिन्दी में होने चाहिए।

(व) आगरा, ग्वालियर पर लगे हुए कम्प्यूटर पर अभी भी केवल अंग्रेजी में आरक्षण हो रहा है जबकि इनमें द्विभाषीकरण शीघ्र कराया जाना चाहिए।

(स) क्षेत्रीय प्रबंधक, पंजाब नेशनल बैंक झांसी से संबंधित निम्न दो की जीप/कारों पर मात्र अंग्रेजी की नाम पट्टी लगी है:—

(i) अध्यक्ष, रानी लक्ष्मीबाई क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, झांसी की मारूति जिप्सी सं॰ यू॰पी॰ 93ए-2205 पर गर्वनमेंट आफ इण्डिया मिनिस्ट्री आफ फाइनेन्स केवल अंग्रेजी में लिखा है।

(ii) अग्रणी बैंक की कार सं॰ यू॰पी॰ 93बी-6544 पर धातु से लिखी नाम पट्टी के ऊपर एल॰बी॰ओ॰ मात्र अंग्रेजी में लिखा है जो हिन्दी में होना चाहिए।

(श) डाक विभाग, झांसी में अभी भी उच्च कार्यालयों से पत्र केवल अंग्रेजी में आ रहे हैं जिससे हिन्दी की प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

(ह) केन्द्रीय उत्पादन एवं सीमा शुल्क, झांसी कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी के कंधा एवं सीना पर सी॰सी॰ई॰ की नाम पट्टियां अंग्रेजी में हैं जो हिन्दी में होनी चाहिए।

(क्ष) ओरियन्टल इंश्योरेंस कं॰ लि॰, झांसी के कार्यालय में अभी हाल में कम्प्यूटर आया है जिसे हिन्दी में करवाने की शीघ्र व्यवस्था की जानी चाहिए।

(त्र) भारतीय स्टेट बैंक, झांसी के कंधा बैजों पर अभी भी एस॰बी॰आई॰ अंग्रेजी में लिखा हुआ है इस ओर अविलम्ब ध्यान दिया जाना चाहिए।

(7.02) श्री तेजीवाल मिश्र, प्रतिनिधि केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने कहा कि प्रायः यह देखा गया है कि इस बैठक में विभागाध्यक्ष बहुत कम आते हैं और वे अपने प्रतिनिधि को भेज देते हैं यह स्थिति अच्छी नहीं है।

गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि ने कहा कि अनुपस्थित कार्यालयों के विभागाध्यक्षों को अध्यक्ष के हस्ताक्षर से अर्द्ध शासकीय पत्र भेजा जाय। यदि फिर भी इसमें सुधार नहीं होता है तो मैं उनके मंत्रालयों को लिखूंगा।

(7.03) सेन्ट्रल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय के प्रतिनिधि ने कहा कि निरीक्षण के लिए एक 3-4 सदस्यों का दल बनाया जाय ताकि वह समय-समय पर विभिन्न कार्यालयों में जाकर हिन्दी की प्रगति का जायजा ले सकें।

गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि ने कहा कि हिन्दी कार्य के सत्यापन के लिए निरीक्षण दल बनाया जाय यह अच्छी बात है किन्तु जो भी निरीक्षण दल निरीक्षण के लिए जाये वह सद्भावना पूर्ण व्यवहार रखें और निरीक्षण करें किन्तु कार्यालयों से किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए उनसे झगड़े नहीं। क्योंकि इस कार्य में झगड़ा आदि करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बल्कि इसके लिए आप गृह मंत्रालय को रिपोर्ट कर सकते हैं।

(7.04) भारतीय खाद्य निगम के प्रतिनिधि ने कहा कि हमारे मुख्यालय से सी॰आर॰ फार्म आते हैं उसमें ऐसा कोई मद नहीं है कि आपने कितना काम हिन्दी में किया है। इन फार्मों में यह मद भी अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

(05) भारतीय खाद्य निगम के प्रतिनिधि ने यह भी कहा कि उनके कार्यालय के लिए द्विभाषिक इलैक्ट्रोनिक टाइपराइटर की मांग की गयी है किन्तु अभी तक आपूर्ति नहीं की गई।

गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि ने कहा कि आप टाइपराइटर की आपूर्ति हेतु जो भी पत्राचार करें उसकी एक प्रति हमें भी दें ताकि हम अपने स्तर से भी कार्रवाई कर सकें।

(06) श्री सोमदत्त शर्मा, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय ने कहा कि क्षेत्रीय कार्यालय इलाहाबाद बैंक में बैंक ड्राफ्ट अंग्रेजी में बनाये जा रहे हैं यदि प्रयास किया जाय तो इन्हें आसानी से हिन्दी में बनाया जा सकता है।

(07) क्षेत्रीय कार्यालय इलाहाबाद के प्रतिनिधि ने सुझाव दिया कि वर्ष 1989 में इस समिति की ओर से एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई थी इसका पुनः आयोजन किया जाए।

(08) केन्द्रीय विद्यालय नं॰ 3 के प्रतिनिधि ने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा कवि सम्मेलन के आयोजन के समय जो स्मारिका प्रकाशित की थी इस प्रकार की स्मारिका प्रत्येक 3 या 6 माह में नियमित निकाली जाए।

श्री सोमदत्त शर्मा ने कहा कि आप लोग यह कार्य अपने स्तर पर कर सकते हैं। गृह मंत्रालय इसके लिए आपकी कोई मदद नहीं कर सकता और न ही आप लोग समिति के नाम से इसके लिए चन्दा आदि जमा कर सकते हैं। क्योंकि कभी-कभी यह देखा गया है कि इससे समिति की छवि पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(09) गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि ने कहा कि जिन कार्यालयों का पत्राचार भोपाल व दिल्ली से होता है वे हिन्दी में ही करें और अंग्रेजी के प्रोफार्मा में सूचना हिन्दी में ही भरकर भेजें। जो भी सूचना परिपत्र निकालें वे हिन्दी अथवा हिन्दी-अंग्रेजी द्विभाषी निकालें। अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दें। सभी प्रोफार्मा द्विभाषी अथवा केवल हिन्दी में ही होने चाहिए।

संख्या (8) श्री सोमदत्त शर्मा सहायक निदेशक (का०) गृह मंत्रालय का भाषण:

(01) गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि ने अपने भाषण में कहा कि हमें वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कार्य करना है। यदि आपको वार्षिक कार्यक्रम तथा नियम पुस्तकों की आवश्यकता हो तो वह हमारे कार्यालय से मंगा सकते हैं।

(02) उन्होंने आगे कहा कि ऐसी बात नहीं है कि हम "क" क्षेत्र में कार्य करते हुए हिन्दी में कार्य नहीं कर सकते केवल यह हमारी मानसिकता की कमी है हमें इस कमी को दूर करना है। हमें यह नहीं देखना है कि यदि हम हिन्दी में कार्य करते हैं तो लोग हमें हीन भावना से देखेंगे।

(03) आगे उन्होंने बताया कि राजभाषा में जहां तक दण्ड के प्रावधान का प्रश्न है तो मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि अन्य नियमों की अवहेलना करने पर जो दण्ड का प्रावधान है वह हिन्दी के लिए भी लागू है किन्तु हम ऐसा करते नहीं हैं। जहां तक हो सके हमें यह कार्य सद्भावना और भाई-चारे से कराना है किसी से झगड़ा करके नहीं।

(04) मुख्य अतिथि ने कहा कि मैं चाहूंगा कि अगली बैठक किसी अन्य कार्यालय में आयोजित की जाय, किन्तु समिति के अध्यक्ष एवं सचिव यही रहेंगे। आगे उन्होंने प्रस्ताव रखा कि आगामी बैठक भेल, झांसी में रखी जाय। सभी सदस्यों ने इसका स्वागत किया।

(05) मुख्य अतिथि ने आगे बताया कि आप लोग अपने-अपने कार्यालयों की विगत तीन वर्षों की 91-92, 92-93 तथा 93-94 की समेकित रिपोर्ट समिति के सचिव को सूचित करते हुए गृह मंत्रालय को भिजवाने की व्यवस्था करें ताकि आगामी राजभाषा सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ कार्यालय के पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र के लिए आपकी रिपोर्टों को भी सम्मिलित किया जा सके।

(06) उन्होंने आगे जानकारी दी कि अब इस बैठक के आयोजन पर खर्च हेतु जो 1000/-रू० की धनराशि प्रदान की जाती है वह जल्दी ही रू० 1500/- होने जा रही है।

(07) अन्त में उन्होंने कहा कि आप लोग हिन्दी की प्रगति के लिए निरन्तर प्रयासरत रहें और यदि इसमें आपको किसी प्रकार की परेशानी होती है तो आप लोग श्री धमानियां जी से मदद ले सकते हैं।

अन्त में, श्री रा०घ० धमानियां, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी एवं सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन, समिति, झांसी ने उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया तथा उनके धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात बैठक समाप्त हुई।

वडोदरा

वडोदरा नगर **राजभाषा कार्यान्वयन** समिति की 26वीं बैठक दिनांक 23.2.95 को वाणिज्य भवन, रेसकोर्स सर्कल, वडोदरा स्थित सम्मेलन-कक्ष में, समिति के नये अध्यक्ष माननीय श्री ए०के० मित्र, समाहर्ता, केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क, वडोदरा की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

अध्यक्ष ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि — "वास्तव में नगर-समिति की इन बैठकों की सार्थकता आप सब के सक्रिय सहयोग पर निर्भर है। नगर-समिति के इस मंच पर हम हर बार वार्षिक कार्यक्रम में की गई अपेक्षाओं के अनुसार विभिन्न मदों के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जोर देते आ रहे हैं। खास कर राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) तथा हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही देने के विषय में शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करने तथा हिन्दी पत्राचार को निर्धारित लक्ष्य तक पहुंचाने के बारे में विशेष जोर दिया जाता रहा है। परिणाम-स्वरूप नगर के विभिन्न कार्यालयों में कार्यालयीन कामकाज में जागरूकता जरूर पैदा हुई है तथापि समिति के कई कार्यालय वार्षिक कार्यक्रम में की गई अपेक्षाओं से अभी भी काफी पीछे हैं।" ऐसे कार्यालय प्रधानों से उन्होंने अनुरोध किया कि वे इस विषय में स्वयं रूचि लें और वार्षिक कार्यक्रम में की गई अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न मदों के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्यों को निष्ठाभाव से पूरा करने के प्रयास करें। उन्होंने आगे कहा कि हमें अपने सारे काम काज में अधिकाधिक हिन्दी के प्रयोग पर बल देते हुए अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रेरित किया जाना चाहिए। उन्होंने सभी सदस्य-कार्यालयों के प्रभारी अधिकारियों से पुनः यह अनुरोध किया कि वर्ष में दो बार आयोजित की जाने वाली नगर-समिति की इन बैठकों में वे स्वयं उपस्थित हों ताकि विचार-विमर्श एवं चर्चाओं से सार्थक निर्णय लेने में आसानी हो सके।

समिति को प्रस्तुत विवरण से यह पाया गया कि डाक प्रशिक्षण केन्द्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, सरदार सरोवर निर्माण सलाहकार समिति, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, रेलवे स्टाफ कालेज, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, युनाइटेड इंडिया इंश्युरेंश कं० लि०, न्यू इंडिया एश्योरेंश कं० लि०, भारतीय जीवन बीमा निगम, क्षेत्रीय भविष्य निधि आदि कार्यालयों द्वारा अधिनियम की धारा 3(3) का पूर्ण रूप से अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है। समिति के कुछेक कार्यालय इस विषय में किसी कारणवश पीछे पाये गये।

सदस्य-सचिव ने समिति को, अधिनियम के प्रावधानों की पुनः जानकारी देते हुए कहा कि अधिनियम की धारा 3(3) में उल्लिखित सभी दस्तावेज अनिवार्य रूप से हिन्दी तथा अंग्रेजी में, द्विभाषिक रूप में जारी करना नितांत जरूरी है तथा किसी भी स्थिति में इन दस्तावेजों को केवल अंग्रेजी में जारी नहीं किया जा सकता। ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की यह जिम्मेदारी हो जाती है कि वे यह सुनिश्चित करें कि ऐसे दस्तावेज द्विभाषिक रूप में जारी किये जाते हैं। अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन करना सर्वथा अनुचित है तथा इसे एक्ट का उल्लंघन माना जाता है। सदस्य-सचिव ने समिति के सभी सदस्यों से पुनः अनुरोध किया कि वे किसी भी स्थिति में अधिनियम का उल्लंघन न होने दें।

इस विषय में निम्नलिखित सुझाव दिए गये:—

(क) भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर हिन्दी के पदों का सृजन किया जाय और उन्हें भरा जाय।

(ख) जब तक उक्त कार्यवाही न हो तब तक संबंधित कार्यालय अपने यहां के योग्य कार्मिकों अथवा अन्य कार्यालय से इन

कानूनी दस्तावेजों का हिन्दी रूपान्तरण मानदेय के आधार पर कराएं।

चण्डीगढ़

चण्डीगढ़ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 31.1.95 को हरियाणा भवन, में मुख्य आयकर आयुक्त, उत्तर-पश्चिम क्षेत्र तथा अध्यक्ष, न०रा०का०स० चण्डीगढ़ की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में चण्डीगढ़ नगर स्थित 145 केन्द्र सरकार के सदस्य कार्यालयों में से 85 सदस्य कार्यालयों के 125 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस बैठक में श्री जसवन्त सिंह, अनुसंधान अधिकारी ने राजभाषा विभाग के विशेष प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

बैठक के आरंभ में समिति के सदस्य-सचिव श्री धर्मपाल गौतम ने सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया।

अध्यक्ष श्री वि० कु० जगधारी ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। हिन्दी के निरंतर प्रयोग पर बल देते हुए उन्होंने आह्वान किया कि हम सभी को हिन्दी का निरंतर प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि हमें ऐसी सरल हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए जो सभी को आसानी से समझ में आ सके। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि अगर बोलचाल की भाषा का दैनिक काम-काज में प्रयोग किया जाए तो कोई मुश्किल पेश नहीं आती।

अध्यक्ष ने पिछली बैठक के मुकाबले इस बैठक में अधिक कार्यालयों द्वारा भाग लेने पर प्रसन्नता प्रकट की। परन्तु कुछ कार्यालयों द्वारा कनिष्ठ अधिकारियों/कर्मचारियों को बैठक में भाग लेने हेतु भेजने पर खेद प्रकट किया। और कहा कि इन बैठकों में कार्यालयाध्यक्षों को स्वयं भाग लेना होता है, क्योंकि राजभाषा का कार्यान्वयन उन्हीं के निर्देशों पर होना है।

अध्यक्ष महोदय ने सभी कार्यालयों द्वारा तिमाही प्रगति रिपोर्ट समिति के पास न भेजने पर भी अपना असंतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बार-बार अनुस्मारक भेजने पर भी 145 में से केवल 85 कार्यालयों से तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्राप्त हुई है। इनमें से 8 रिपोर्ट बहुत देरी से प्राप्त हुई है। जिनकी बैठक में समीक्षा नहीं हो पाई। उन्होंने तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत करने का सभी कार्यालयाध्यक्षों से अनुरोध किया।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री जसवन्त सिंह ने कार्यालयाध्यक्षों के बैठक में न आने के संबंध में कहा कि राजभाषा विभाग के आदेशानुसार यह आवश्यक है कि न०रा०का०स० की बैठक में विभागाध्यक्ष स्वयं भाग लें। यदि संसदीय राजभाषा समिति दौरा करती है और पाती है कि राजभाषा नियमों का पालन नहीं हो रहा है तो इसके लिए कार्यालयाध्यक्ष जिम्मेदार है।

तिमाही रिपोर्टों के संबंध में श्री सिंह ने कहा कि कुछ कार्यालय तिमाही प्रगति रिपोर्ट दिल्ली कार्यालय को भेजते हैं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह रिपोर्ट गाजियाबाद कार्यालय को ही भेजी जानी चाहिए।

श्री सिंह ने कहा कि जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है उन्हें राजभाषा अधिनियम के नियम 10(4) के तहत अधिसूचित किया जाना आवश्यक है। जो 10(4) के अधीन अधिसूचित है, उन्हें 8(4) के तहत विनिर्दिष्ट कराएं तथा कोई विषय, दिन तथा कार्य विनिर्दिष्ट करें कि यह काम केवल हिन्दी में होगा। फिर देखिए हिन्दी को लाना मुश्किल नहीं केवल लगन की बात है। उन्होंने बताया कि "ख" क्षेत्र में होने के बावजूद भटिंडा में शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में हो रहा है। यह बड़े गर्व की बात है।

सरकार की नीति है अच्छा कार्य करने वालों को पुरस्कृत किया जाता है। यह वार्षिक प्रक्रिया है। किसी कारणवश यह प्रक्रिया पिछले दो-तीन वर्षों से हो नहीं पाई है। इस वर्ष सभी कार्यालयों से पिछले तीन वर्षों की तिमाही प्रगति रिपोर्ट 1991-92, 1992-93, 1993-94 मंगवाई गई है। वार्षिक सम्मेलन मार्च या अप्रैल में होना प्रस्तावित है। इसमें चार श्रेणियों में चार-चार पुरस्कार होंगे।

1. केन्द्रीय कार्यालयों के लिए	प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार
2. बैंकों के लिए	-सम-
3. उपक्रमों/निगमों के लिए	-सम-
4. न०रा०का०स० के लिए	-सम-

मगर यह सब तभी सार्थक है जब हम बढ़-चढ़ कर राजभाषा क्रियान्वयन में भाग लें। सरकार की नीति प्रोत्साहन पुरस्कार की है मगर हम सबके सहयोग के बिना यह बेअसर है। श्री सिंह ने 3 सुझाव भी दिए।

1. अपनी सुविधानुसार किसी अनुभाग को हिन्दी में कार्य करने के लिए विनिर्दिष्ट करें।

2. कोई 2-4 विषय अपनी सुविधानुसार चुनें।

3. सप्ताह में कोई दिन निश्चित शुरू करें जिस दिन शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में होगा।

उन्होंने कहा शुरुआत आवश्यक है चाहे धीमी चाल से ही सही। उन्होंने सशस्त्र सेनाओं के अधिकारियों का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया। वे स्वयं इस बैठक में आए। उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है अगली बैठक में रिपोर्ट समय पर पहुंचेगी व आंकड़े सही होंगे। श्री सिंह ने कहा कि यदि किसी कार्यालय को राजभाषा संबंधी किसी प्रकार की सामग्री की आवश्यकता हो तो हमें लिखें हम अवश्य शीघ्र ही आपको भेजेंगे।

इस प्रकार बैठक में सभी सदस्यों ने सक्रिय भाग लिया। अंत में सचिव श्री धर्मपाल गौतम ने सभी सदस्यों का धन्यवाद किया और आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी वे स्वयं बैठक में भाग लेते रहेंगे। श्री गौतम ने श्री जसवन्त सिंह का विशेष रूप से धन्यवाद दिया कि उन्होंने राजभाषा विभाग के विशेष प्रतिनिधि के रूप में बैठक में भाग लेना स्वीकार किया। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ ही बैठक समाप्ति की घोषणा हुई।

बालको में 21 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली की ओर से भारत एल्युमीनियम कंपनी के आग्रह पर उनके कोरबा (मध्य प्रदेश) स्थित कार्यालय में दिनांक 1-8-95 से 31-8-95 तक 21 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कंपनी के 27 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

पाठ्यक्रम का उद्घाटन कंपनी के निदेशक मंडल के सदस्य एवं निदेशक (वाणिज्य, प्रचालन एवं परियोजनाएं) श्री शशि कुमार मेहरोत्रा ने किया और अनुवाद प्रशिक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर ब्यूरो के निदेशक श्री विनोद कुमार बजाज भी उपस्थित थे। उन्होंने भारत सरकार की राजभाषा नीति और उसके संदर्भ में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व तथा भारत सरकार में अनुवाद की व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए ब्यूरो के दायित्वों और गतिविधियों की जानकारी दी और यह आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से कंपनी के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी और उनकी क्षमता में भी वृद्धि होगी। उद्घाटन समारोह में कंपनी के सभी विभाग प्रमुख एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार दिनांक 1-8-95 से 29-8-95 तक नियमित रूप से पठन-पाठन का कार्य सुचारू रूप से चलाया गया। पूर्वाह्न में अनुवाद का अभ्यास करवाया गया। अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष में राजभाषा नीति, अनुवाद की प्रक्रिया, अनुवाद के सिद्धान्त, भारतीय वर्णमाला की वैज्ञानिकता, देवनागरी का वर्णक्रम, कोश विज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली, वाक्य संरचना, अर्थ संरचना, मानक वर्तनी, हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद और पुनरीक्षण के सिद्धान्त आदि विषयों पर चर्चा की गई और अपराह्न की कक्षाओं में तकनीकी, वैज्ञानिक, विधिक और प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद करवाया गया और उसका पुनरीक्षण कर अनुवाद के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा भी की गई।

इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सभी प्रशिक्षणार्थियों ने बड़े उत्साह, लगन और निष्ठा से भाग लिया और प्रशिक्षण की विषय-वस्तु और प्रशिक्षण देने वाले सभी अधिकारियों की सराहना की। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भरे गए फीड-बैक के फार्म में उन्होंने इसे बहुत उपयोगी बताया और इस प्रकार का पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो राजभाषा विभाग और अपनी कंपनी के अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

पाठ्यक्रम के अंत में प्रशिक्षणार्थियों की परीक्षा ली गई। बालको के प्रबंधक वर्ग का यह विचार था कि केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा ली जाने वाली इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भविष्य में अनुवाद कार्य के लिए ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को अवसर देने में सुविधा होगी, जिनका परिणाम अपेक्षित स्तर का होगा। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने अच्छे अंक लेकर परीक्षा उत्तीर्ण की।

इस परीक्षा में प्रथम स्थान, श्री लोकनाथ साहू और द्वितीय स्थान, श्रीमती जयश्री खर्णकार ने किया।

दिनांक 31-8-95 को समापन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें श्री शशि कुमार मेहरोत्रा, निदेशक (वाणिज्य प्रचालन एवं परियोजना) ने प्रमाण-पत्रों का वितरण किया और अपने सारगर्भित दीक्षान्त भाषण में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को और प्रशिक्षण के लिए आए सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बात का विशेष रूप से उल्लेख किया कि इस पाठ्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर आए केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक श्री विनोद कुमार बजाज, पाठ्यक्रम के अंतिम सप्ताह में कक्षाएं लेने और समापन समारोह में भाग लेने के लिए आए उप निदेशक एवं संयुक्त निदेशक (प्रभारी), श्री विचार दास तथा प्रशिक्षण देने के लिए भेजे गए अन्य सभी अधिकारी अपने विषय के अच्छे ज्ञाता और व्याख्याता थे। उन्होंने इस बात पर भी अपना संतोष और प्रसन्नता व्यक्त की कि सभी अधिकारियों और प्रशिक्षणार्थियों ने इस प्रशिक्षण को बहुत ही उपयोगी पाया है और यह आशा व्यक्त की कि केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के सहयोग से 'बालको' भविष्य में भी ऐसे प्रशिक्षण पाठ्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करता रहेगा।

इस समारोह में धन्यवाद भाषण, श्री मधुसूदन प्रसाद शुक्ला, प्रबंधक (राजभाषा) ने दिया। परीक्षा परिणाम की घोषणा श्री विचार दास ने की। अपने उद्बोधन भाषण में श्री दास ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा की द्विभाषिक स्थिति और अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सरल, सुबोध और विषय के अनुकूल अनुवाद करने पर बल दिया। इस समारोह को प्रशिक्षण अधिकारी श्री शिलाकांत झा और श्री रामेश्वर प्रेम चौधरी ने भी संबोधित किया। सहायक महाप्रबंधक (मानव संसाधन विकास), श्री प्रदीप कुमार गैरोला ने आभार व्यक्त किया।

इसी समारोह में निदेशक, श्री मेहरोत्रा ने इस परीक्षा में प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को नकद पुरस्कार देने की घोषणा भी की।

प्रस्तुतिः विचार दास,
उपनिदेशक,
केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो।

☆ ***किसी भी भाषा का विकास तब होता है, जब वह जनसाधारण के हृदय में स्थान पाती है। हमने अपने संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए हमें देखना है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग हो।***

– राजीव गांधी

हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत नियुक्त सर्वकार्यभारी अधिकारी, अंशकालिक हिन्दी प्राध्यापक, अंशकालिक हिन्दी टंकण/आशुलिपि अनुदेशक, अंशकालिक लिपिक तथा अंशकालिक चपरासी के पदों पर कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के मानदेय का संक्षिप्त विवरण

		दरें
1.	**सर्वकार्यभारी अधिकारी**	
	(फरवरी, 1994 से लागू)	(प्रतिमाह)
	(क) ऐसे हिन्दी शिक्षण केन्द्रों के सर्वकार्यभारी अधिकारी जहां (1 से 5) तक पूर्णकालिक नियमित हिन्दी प्राध्यापक/हिन्दी टाइपिंग तथा आशुलिपि अनुदेशक/सहायक निदेशक काम करते हैं।	140.00 रुपए
	(ख) ऐसे हिन्दी शिक्षण केन्द्रों के सर्वकार्यभारी अधिकारी जहां 6 या इससे अधिक पूर्णकालिक नियमित हिन्दी प्राध्यापक/हिन्दी टाइपिंग तथा आशुलिपि अनुदेशक/सहायक निदेशक काम करते हैं।	200.00 रुपए
	(ग) ऐसे अंशकालिक हिन्दी शिक्षण के सर्वकार्यभारी अधिकारी जहां 20 या इससे अधिक प्रशिक्षार्थी दर्ज हैं।	70.00 रुपए
2.	**अंशकालिक हिन्दी प्राध्यापक**	
	(1 फरवरी, 1993 से लागू)	
	(क) प्रशिक्षार्थियों की औसत उपस्थिति 10 तक होने पर (एकांतर दिवस की कक्षाओं पर)	
	(1) सरकारी कर्मचारियों के लिए	120.00 रुपए
	(2) अन्य के लिए	150.00 रुपए
	(ख) प्रशिक्षाथियों की औसत उपस्थिति 10 तक (प्रतिदिन की कक्षाओं पर)	150.00 रुपए
	(1) सरकारी कर्मचारियों के लिए	200.00 रुपए
	(2) अन्य के लिए	
	(ग) प्रशिक्षार्थियों की औसत उपस्थिति 10 से अधिक दर्ज होने पर प्रति अतिरिक्त प्रशिक्षार्थी दर	8.00 रुपए
	(1) एकांतर दिवस	10.00 रुपए
	(2) प्रतिदिन की कक्षाएं	
3.	**अंशकालिक हिन्दी टंकण अनुदेशक**	
	(अप्रैल 1987 से प्रभावी)	
	(क) प्रति प्रशिक्षार्थी प्रतिमाह	10.00 रुपए
	(ख) 6 से 10 नियमित प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रतिमाह	100.00 रुपए
	(ग) 10 से अधिक नियमित प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रतिमाह	200.00 रुपए
4.	**अंशकालिक हिन्दी आशुलिपि अनुदेशक**	
	(अप्रैल, 1987 से प्रभावी)	
	(क) 1 से 5 प्रशिक्षार्थियों के होने पर प्रति प्रशिक्षार्थी	20.00 रुपए
	(ख) 6 से 10 प्रशिक्षार्थी होने पर प्रति प्रशिक्षार्थी	200.00 रुपए
	(ग) 10 से अधिक प्रशिक्षार्थी होने पर	300.00 रुपए
5.	**अंशकालिक लिपिक**	
	(क) पूर्णकालिक केन्द्र पर अंशकालिक लिपिक जहां हिन्दी शिक्षण योजना का पूर्णकालिक लिपिक नहीं है।	170.00 रुपए
	(ख) पूर्णकालिक केन्द्र पर अंशकालिक लिपिक जहां हिन्दी शिक्षण योजना का पूर्णकालिक लिपिक है।	85.00 रुपए
	(ग) अंशकालिक केन्द्र पर अंशकालिक लिपिक जहां 20 से 100 तक प्रशिक्षार्थी नामांकित है।	70.00 रुपए
	(घ) अंशकालिक केन्द्र पर अंशकालिक लिपिक जहां 100 से ज्यादा प्रशिक्षार्थी नामांकित है।	100.00 रुपए

6. **अंशकालिक चपरासी**

(फरवरी, 1994 से लागू)

(क) पूर्णकालिक केन्द्र पर अंशकालिक चपरासी जहां हिन्दी शिक्षण योजना का पूर्णकालिक चपरासी भी है।	45.00 रुपए
(ख) पूर्णकालिक केन्द्र पर अंशकालिक चपरासी जहां हिन्दी शिक्षण योजना का पूर्णकालिक चपरासी नहीं है।	60.00 रुपए
(ग) अंशकालिक केन्द्र पर अंशकालिक चपरासी जहां 20 से 100 तक प्रशिक्षार्थी नामांकित है।	45.00 रुपए
(घ) अंशकालिक केन्द्र पर अंशकालिक चपरासी जहां 100 से ज्यादा प्रशिक्षार्थी नामांकित है।	60.00 रुपए

टिप्पणी:—

1. हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत नियुक्त उपर्युक्त पदों पर कार्य करने वाले सभी प्रकार के अधिकारियों/कर्मचारियों को मानदेय की राशि का भुगतान अपनी सामान्य ड्यूटी के अतिरिक्त अवैतनिक रूप में हिन्दी शिक्षण योजना के कार्यालयों की अतिरिक्त ड्यूटी और जिम्मेदारियों का पालन करने के लिए दिया जाता है।
2. एक से अधिक केन्द्रों का कार्य देखने वाले सर्वकार्यभारी अधिकारी को समेकित रूप से उसके अधीन स्थापित केन्द्रों की कुल संख्या के आधार पर मानदेय का भुगतान प्रत्येक केन्द्र के लिए अलग से न करके एक केन्द्र के रूप में किया जाता है।
3. अंशकालिक हिन्दी शिक्षक को मानदेय का भुगतान उसके द्वारा ली गई कक्षाओं को समेकित करके औसत उपस्थित के आधार पर किया जाता है।
4. जिस अंशकालिक केन्द्र पर प्रशिक्षार्थियों के नामांकन की संख्या 20 से कम होगी उस केन्द्र पर राजभाषा विभाग के नियमानुसार सर्वकार्यभारी अधिकारी अंशकालिक लिपिक एवन अंशकालिक चपरासी को मानदेय नहीं दिया जाएगा।
5. सर्वकार्यभारी अधिकारी, अंशकालिक लिपिक, अंशकालिक चपरासी तथा अन्य अंशकालिक कर्मचारियों की आकस्मिक छुट्टी को छोड़कर, अन्य छुट्टियों की अवधि एवं बीच में कार्य छोड़ने की अवधि का मानदेय नहीं दिया जाता है।
6. सर्वकार्यभारी अधिकारी द्वारा अपने तथा सभी संबंधित अंशकालिक कर्मचारियों के लिए निर्धारित प्रमाण-पत्र भेजने पर ही मानदेय की राशि का भुगतान किया जा सकता है।
7. सर्वकार्यभारी अधिकारी, अंशकालिक हिन्दी शिक्षक एवं अंशकालिक हिन्दी टं०/आ० अनुदेशकों की नियुक्ति का अनुमोदन निदेशक महोदय से लेना अपेक्षित है, जिसके लिए प्रस्ताव संबंधित क्षेत्रीय उपनिदेशक के माध्यम से प्रेषित करना होता है। अंशकालिक लिपिक तथा चपरासी को नियमानुसार नियुक्त करने का प्रस्ताव संबंधित क्षेत्रीय उपनिदेशक द्वारा अनुमोदित किया जा सकता है।

प्रस्तुतिः हिन्दी शिक्षण योजना (मुख्यालय)
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
7वां तल, पर्यावरण भवन,
नई दिल्ली-110003.

भारत सरकार, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली-110011

का०का०ज्ञा० सं०-19011/1/94-के०हि०प्र०सं०/762-1337दिनांक: 30-6-95

विषय: संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, सार्वजनिक क्षेत्रों/लोक उद्यमों/अभिकरणों आदि के कर्मचारियों के लिए दिनांक 16-8-95 से 13-10-95 तक चलाया जाने वाले हिन्दी टाइपलेखन व 16-8-95 से 12-12-95 तक चलाया जाने वाला हिंदी आशुलिपि का पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।

महोदय/महोदया,

कृपया उपर्युक्त विषय पर इस कार्यालय का दिनांक 21-10-94 का पत्र सं०-1901/1/94-के०हि०प्र०सं०/1575 देखें, जिसके द्वारा इस संस्थान द्वारा कैलेण्डर वर्ष 1995 में चलाए जाने वाले हिन्दी टाइपलेखन और हिन्दी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की सूचना दी गई थी। तद्नुसार हिन्दी टाइपलेखन व हिन्दी आशुलिपि का अगला सत्र दिनांक 16-8-95 से प्रारम्भ हो रहा है जिसका विवरण इस प्रकार है:—

क्र०सं०	पाठ्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथि	प्रशिक्षण केन्द्र का पता
1.	हिन्दी टाइपलेखन पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	40 कार्य दिवस	दिनांक 16-8-95 से 13-10-95 तक	केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 (जे०एंड के० हाऊस के सामने)
2.	हिन्दी आशुलिपि पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	80 कार्य दिवस	16-8-95 से 12-12-95 तक	-वही-

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु पात्रता, अर्हता आदि का विवरण संस्थान में दिनांक 21 अक्तूबर, 1994 के पत्र द्वारा पहले ही सूचित किया जा चुका है।

संस्थान में दिल्ली से बाहर के प्रशिक्षार्थियों के लिए छात्रावास की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसलिए यदि दिल्ली से बाहर के कर्मचारियों को पाठ्यक्रम के लिए नामित किया जाता है तो उन कर्मचारियों के आवास की व्यवस्था संबंधित कार्यालय को करनी होगी।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया अपने कार्यालय के अधिक से अधिक कर्मचारियों को नामित करें और उनकी सूचना दिनांक 28-7-95 तक इस कार्यालय को भिजवा दें। कृपया अपने पत्र में अपने कार्यालय का दूरभाष नं० भी उल्लिखित करें। चूंकि यह पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम है अतः इसके लिए केवल उन्हीं कर्मचारियों को नामित किया जाए जिन्हें निश्चित रूप से कार्यमुक्त करके भेजा जा सकें। कृपया नामित सभी कर्मचारियों को कार्यमुक्त कर दिनांक 16-8-95 को प्रातः 9.30 बजे 2-ए, पृथ्वीराज रोड (जम्मू कश्मीर हाऊस के सामने) नई दिल्ली स्थित केन्द्र पर प्रशिक्षण के लिए रिपोर्ट करने के लिए भेजें। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के बाद किसी भी कर्मचारी को सत्र के मध्य में वापिस बुलाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

पाठ्यक्रम में प्रवेश "प्रथम आओ, प्रथम पाओ" के आधार पर दिया जाएगा।

"यदि हम अंग्रेजी के आदि नहीं हो गए होते, तो यह समझने में हमें देर नहीं लगती कि अंग्रेजी के शिक्षा का माध्यम होने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कट कर दूर हो गई है, हम अपनी जनता से अलग हो गए हैं, जाति के सर्वश्रेष्ठ विभागों का विकास रुक गया है और जो विचार हमें अंग्रेजी के माध्यम से मिले, उन्हें हम जनता में फैलाने में नाकामयाब रहे हैं। पिछले साठ वर्षों से हमने विचित्र-विचित्र शब्दों को केवल रटना सीखा है, तथ्यपूर्ण ज्ञान पचाने के बदले हमने शब्दों का उच्चारण सीखा है। जो विरासत में हमें अपने बाप-दादों से हासिल हुई, उसके आधार पर नव-निर्माण करने के बदले, हमने उस विरासत को भूलना सीखा है। इस दुर्गति की मिसाल सारी दुनिया के इतिहास में नहीं है। यह तो राष्ट्रीय शोक अथवा ट्रेजेडी का विषय है। आज की पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़ें और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें। हमें अपनी सभी प्रादेशिक कार्रवाईयों अपनी-अपनी भाषाओं में चलानी चाहिए तथा हमारी राष्ट्रीय कार्रवाईयों की भाषा हिन्दी होनी चाहिए।"

—महात्मा गांधी

कलकत्ता, 27 दिसम्बर 1917

पं० सं० 3246/77
आई एस एस एन 0970—9398

प्रपत्र-4 (देखिए नियम-8)

प्रेस तथा पुस्तक पंजीकरण अधिनियम

समाचारपत्रों का पंजीकरण (केंद्रीय) नियम

"राजभाषा भारती" के स्वामित्व तथा विवरणों की सूचना

1.	प्रकाशन स्थानः	लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003.
2.	प्रकाशन अवधिः	त्रैमासिक
3.	मुद्रक का नाम व पता	प्रबंधक, भारत सरकार फोटोलिथो मुद्रणालय, मिन्टो रोड,
4.	क्या भारत का नागरिक है?	भारतीय नागरिक
5.	प्रकाशक का नाम व पता	नेत्रसिंह रावत उप संपादक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003. टेलीफोन :-4698054.
6.	क्या भारत का नागरिक है?	भारतीय नागरिक
7.	सम्पादक का नाम व पता	राजकुमार सैनी, निदेशक (अनुसंधान) राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003. टेलीफोन : 4617807.
8.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से सांझेदार या हिस्सेदार हों।	भारत सरकार

मैं नेत्रसिंह रावत, एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम [illegible] के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह०/—
प्रकाशक के हस्ताक्षर

राजभाषा विभाग, भारत सरकार, (गृह मंत्रालय) लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए उप संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय (पी०एल०यू०) मिन्टो रोड नई दिल्ली-2 द्वारा मुद्रित।